चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 138, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 16 जून 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

मुखर्जी नगर के कोचिंग सेंटर में आग, छात्रों ने रस्सी के सहारे बचाई जान

नई दिल्ली। मुखर्जी नगर में बत्रा सिनेमा के पास गयाना भवन में गुरुवार दोपहर बिजली मीटरों में शॉर्ट सर्किट होने की वजह से आग लग गई। हादसे के बाद धुआं ऊपरी मंजिल पर भर जाने से हड़कंप मच गया। ऊपरी मंजिलों में कॉचिंग ले रहे करीब साढ़े तीन सौ छात्र-छात्राएं रस्सी या फिर खिड़की के जरिये बाहर निकले। इस बीच कुछ छात्र छात्राओं का रस्सी से संतुलन बिगड़ने पर वे तीसरी और दूसरी मंजिल से नीचे गिर गई। दमकल कर्मियों ने तुरंत जहां आग पर पूरी तरह से काबू किया। वहीं, आसपास कोचिंग ले रहे छात्रों ने पुलिस की मदद से बिल्डिंग में फंसे छात्राओं को सुरक्षित निकाला। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि 60 से ज्यादा बच्चों को धुएं से सांस लेने में दिक्कतें आई। जिनको तुरंत नजदीक के चार अस्पतालों में भर्ती कराया गया था। जिनमें से दो की हालत नाजुक बताई गई। पुलिस मामला दर्ज करके पता लगाने की कोशिश कर रही है कि बिल्डिंग मालिकों के पास फायर का लाइसेंस था या नहीं। पुलिस ने सौ से ज्यादा छात्रों के बयान भी दर्ज किए हैं। जिन्होंने कोचिंग संस्थानों पर लापरवाही का आरोप लगाया है। पूरे हादसे के कई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल भी हुए। जिसमें किस तरह से छात्र-छात्राएं रस्सी के सहारे अपनी जान बचाने की कोशिश करते नजर आ रहे थे। जबकि कुछ ऊपर से ही कूदते नजर आ रहे थे।

पुलिस उपायुक्त जितेन्द्र कुमार मीणा ने

बताया कि आग 12 बजकर 27 मिनट पर आग लगी थी। आग ग्राउंड फ्लोर पर बिजली के मीटरों में लगी थी। जिसका धुआं ऊपरी मंजिल पर जाने से कॉचिंगों में पढ़ाई कर रहे बच्चे फंस गए थे। घबराहट में बच्चे खिड़कियां खोलकर रस्सी के सहारे नीचे उतरे जिसमें से कुछ बच्चे रस्सी से गिर भी गए थे। हादसे की चपेट में आए सभी बच्चों को नजदीक के अस्पताल में भर्ती कराया गया था। अधिकतर बच्चों कर दम घुटने से तबीयत खराब हुई थी। डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद सभी की हालत स्थिर बताई। दमकल विभाग की करीब 11 गाड़ियों ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया और बच्चों को बाहर निकालने में सहायता की थी। बस चिल्लाने की ही आवाजें सामने आ रही थी। आसपास के लोगों ने बताया कि आग लगने के बाद गयाना भवन से बच बचाने के लिये चिल्लाने की ही आवाजें आ रही थी। ग्राउंड फ्लोर पर आग थी और ऊपर की मंजिलों में धुआं ही धुआं था। कुछ छात्र खिड़कियों के बाहर लगे बैनर फाड़ रहे थे तो कुछ खिड़कियों में लगे कांच को तोड़ रहे थे। टेंपो वालों से ली रस्सियों व एक छोटी सी लकड़ी की सीढ़ी की सहायता से एक एक करके सभी को नीचे उतार रहे थे। कुछ बच्चे इतने घबरा गए थे कि वो दूसरी मंजिल से रस्सी से संतुलन बिगड़ने से नीचे भी गिर गए थे। छात्रों ने बताया कि उनको नहीं पता कि उनके दोस्त कहां और किस अस्पताल में किस हालत में पड़े हैं। पुलिस से भी कोई सहायता नहीं मिल रही थी। फोन भी कोई नहीं उठा रहा था। क्योंकि जो फोन थे। उनके बैगों में थे। जबकि बैग कोचिंग वाले इकट्ठा करके अपने साथ ले गए थे, इसलिये खुद ही आपस में व्हाट्सएप ग्रुप बनाकर ही अस्पतालों के चक्कर लगाकर अपनों का हालचाल जानने की कोशिश करते रहे थे। कोचिंग वाले बस इसलिये बात कर रहे थे क्योंकि उनको लग रहा था कि कोई स्टूडेंट उनकी लापरवाही को उजागर नहीं कर दें। ऐसे लोग अस्पतालों में भी दिखाई दिये।

अगले चार-छह महीने में अयोध्या की सड़कें दिल्ली की राजपथ सी लगेंगी : मुख्यमंत्री

अयोध्या में 32 हजार करोड़ की चल रही हैं परियोजनाएं : योगी

अयोध्या। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आज अयोध्या में 32 हजार करोड़ की परियोजनाओं के कार्य हो रहे हैं। इतनी परियोजना देश के किसी एक शहर में नहीं चल रही होगी। जिस दिन यह कार्य जमीनी धरातल पर उतरेंगे, अयोध्या दुनिया की सुंदरतम नगरी के रूप में रहेगी। जनवरी में जब प्रधानमंत्री मोदी के करकमलों से रामलला 500 वर्ष बाद अपने स्वयं के मंदिर में विराजमान होंगे, तो दुनिया अयोध्या की तरफ आकर्षित होगी। यहां मुख्य रेलवे स्टेशन का विकास हो रहा है। सूर्यकुंड व भरतकुंड में भी रेलवे विकास के कार्य प्रारंभ हो रहे हैं। इंटरनेशनल एयरपोर्ट भी इसी वर्ष बनकर तैयार हो जाएगा। यहां के लिए इतने अवसर आने जा रहे हैं कि जो अयोध्या नहीं आया होगा वो पछताता होगा। जिसने यहां जन्म नहीं लिया होगा, वह भी प्रार्थना कर रहा होगा कि हमें भी अयोध्या में जन्म लेने का अवसर मिलता तो हम भी सौभाग्यशाली होते। राम के बिना हमारा जीवन अधूरा माना जाता है। जिस रूप में प्रभु राम को पूजा है, भक्ति की है, वह साकार रूप में हम सबके सामने रामलला के रूप में मंदिर निर्माण के साथ विराजमान होकर दर्शन देंगे। उक्त बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के 9 वर्ष पूर्ण होने पर गुरुवार को योगीराज भरत जी की तपोस्थली भरतकुंड नंदीग्राम में आयोजित जनसभा को संबोधित किया। मुख्यमंत्री ने प्रभु श्रीराम से प्रधानमंत्री मोदी के स्वस्थ व दीर्घ जीवन के साथ उनके यशस्वी कार्यकाल के लिए प्रार्थना करते हुए उनका मार्गदर्शन व नेतृत्व भारत को मिलता रहे, यही प्रार्थना करता हूं। इस दौरान अयोध्या के विकास की झलक पर आधारित लघु फिल्म भी दिखाई गई।

मुख्यमंत्री ने किया आह्वान- इस बार 21 लाख दीप जलाने का लक्ष्य रखिए: मुख्यमंत्री ने कहा कि हर बड़ी सिटी अयोध्या से जुड़ना चाहती है। यह नई अयोध्या है। इस बार दीपोत्सव का 21 लाख दीप प्रज्ज्वलन का लक्ष्य रखिए। सभी घाटों, मठ-मंदिर, सूर्यकुंड-भरत कुंड के साथ दीपोत्सव में अयोध्या के हर घर में दीप प्रज्ज्वलन के कार्यक्रम होने चाहिए। अभी से इसकी तैयारी प्रारंभ कर दें। अगले वर्ष हमारे श्रीराम आने वाले हैं। अपने घर-महल में विराजमान होने वाले हैं। इसकी तैयारी दीपोत्सव के साथ प्रारंभ होनी चाहिए। जैसे वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है। 21 जून को योग महोत्सव का कार्यक्रम होगा।

अब एक घंटे में लखनऊ और गोरखपुर से पहुंचते हैं अयोध्या

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नया भारत वैश्विक मंच पर सम्मान पाता है। पीएम मोदी का यशस्वी नेतृत्व को जनता का आशीर्वाद मिलता रहेगा और भारत तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनेगा। इससे प्रति व्यक्ति की आय में वृद्धि होगी। कनेक्टिविटी बेहतर होगी। पहले अयोध्या के लिए न सड़कें थीं और न ही ट्रेन। पहले गोरखपुर और लखनऊ से अयोध्या आने में पांच-छह घंटे लगते थे, आज एक घंटे में सफर तय हो रहा है। एयरपोर्ट बनने के बाद त्रेतायुग की याद को ताजा करने का अवसर मिलेगा। जब लंका विजय के बाद प्रभु श्रीराम पुष्पक विमान से अयोध्या आए होंगे। आज अयोध्या के हर वासी को विमान यात्रा से देश-दुनिया में उड़ान का अवसर मिलेगा।बॉक्स सरकार हर जन तक योजनाएं पहुंचा रही: योगीमुख्यमंत्री ने कहा कि अयोध्या में महापौर के साथ ही विभिन्न नगर निकायों में आपने डबल इंजन की सरकार पर विश्वास किया, इसलिए डबल इंजन की भाजपा सरकार आपके सहयोग से गांव हो या शहर, हर एक स्तर पर जनसुविधाओं व बुनियादी विकास की योजनाओं को लेकर बिना भेदभाव गरीब कल्याणकारी की योजनाएं हर जन तक पहुंचने के लिए कार्य कर रही है।

सौराष्ट्र और कच्छ के तटों पर पहुंचा तूफान बिपरजॉय

नई दिल्ली। अरब सागर में उठे चक्रवाती तूफान बिपरजॉय के लैंडफॉल यानि जमीन से टकराने की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है।

मौसम विभाग के महानिदेशक डॉ मृत्युंजय महापात्रा ने बताया कि यह तूफान कराची और मांडवी के बीच और गुजरात के जखाऊ बंदरगाह के करीब तट से टकराएगा। यह शाम सात बजे अरब सागर में जखाऊ बंदरगाह से लगभग 70 किलोमीटर दूर स्थित है। यह लगभग 15 किमी प्रति घंटे की गति से आगे बढ़ रहा है

हालांकि लैंडफॉल की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। आधी रात तक यह लैंडफॉल की प्रक्रिया जारी रहेगी। इस बीच कच्छ और सौराष्ट्र में तेज हवाएं और भारी बारिश शुरू हो चुकी है।

कानून हाथ में लेने की इजाजत नहीं: सीएम धामी

देहरादून। मुख्यमंत्री ने पुरोला घटनाक्रम को लेकर लोगों से शांति बनाये रखने की अपील करते हुए कहा कि किसी को भी कानून को अपने हाथ में लेने की इजाजत नहीं दी जाएगी। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि हमने सभी लोगों से शांति व्यवस्था बनाने की अपील की है। कोई भी माहौल खराब करने की कोशिश करेगा तो कानून अपना काम करेगा। उन्होंने कहा कि अभी तक हुई घटनाओं में प्रशासन ने सही तरीके से काम कर रही है। अगर कोई दोषी होगा ।

वित्त मंत्री ने आईएफएडी प्रमुख से की मुलाकात

नई दिल्ली: केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कृषि विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय कोष (आईएफएडी) प्रमुख अल्वारो लारियो से यहां मुलाकात की। इस दौरान सीतारमण ने उभरते वैश्विक मुद्दों के अलावा आपसी हितों के कई मुद्दों पर चर्चा की। वित्त मंत्रालय ने गुरुवार को ट्विट कर इसकी जानकारी दी।

वित्त मंत्री ने आईएफएडी प्रमुख से मुलाकात के दौरान नई एवं उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी) की निष्पक्ष समीक्षा की जरूरत पर जोर दिया। सीतारमण ने बैठक के दौरान इस बात पर बल दिया कि आईएफएडी जैसे बहुपक्षीय संस्थानों को खाद्य भंडारण, खाद्य प्रसंस्करण और छोटे आकार की खेती को लाभकारी बनाकर खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रभावी योगदान देना चाहिए। मंत्रालय के मुताबिक आईएफएडी प्रमुख ने मुलाकात के दौरान जी-20 समूह की अध्यक्षता कर रहे भारत के प्रयासों की सराहना की। लारियो ने जलवायु परिवर्तन को आईएफएडी की गतिविधियों के केंद्र में लाने से अवगत कराया। आईएफएडी संयुक्त राष्ट्र की खाद्य एवं कृषि केंद्र की एक विशिष्ट संस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य विकासशील देशों में ग्रामीण क्षेत्रों की गरीबी को दूर करना है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र के रोम में स्थित अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान आईएफएडी ने 1978 से लेकर अबतक अनुदान और कम ब्याज वाले ऋण के रूप में 23.2 अरब डॉलर विकासशील देशों को मुहैया कराए हैं।

बृजभूषण पर चार्जशीट दाखिल

नई दिल्ली: भारतीय कुश्ती संघ (डब्ल्यूएफआई) के पूर्व अध्यक्ष व भाजपा सांसद बृजभूषण शरण सिंह को पॉक्सो केस में बड़ी राहत मिली है, जबकि यौन उत्पीड़न के आरोपों में दिल्ली पुलिस ने एक हजार पन्नों की चार्जशीट पटियाला हाउस कोर्ट में दाखिल की है। चार्जशीट पर दीपक कुमार की एसीएमएम कोर्ट 22 जून को सुनवाई करेगी। दरअसल, नाबालिग पहलवान के मामले में दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में कैंसिलेशन रिपोर्ट दाखिल की गई है। सुनवाई की अगली तारीख 4 जुलाई है। रद्द करने की रिपोर्ट उन मामलों में दायर की जाती है जब कोई पुष्टिकारक साक्ष्य नहीं मिलता है। दिल्ली पुलिस ने बताया कि पोस्को मामले में जांच पूरी हो गई है। जिसके बाद हमने शिकायतकर्ता यानी नाबालिग पीड़िता के पिता और खुद पीड़िता के बयानों के आधार पर मामले को रद्द करने का अनुरोध किया है। दिल्ली पुलिस ने सीआरपीसी की धारा 173 के तहत रिपोर्ट पेश की है।

जनसमस्याओं को कार्यपालिका तक प्रभावी रूप से पहुंचाना विधायी संस्थाओं का दायित्व : ओम बिरला

गोवा। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने गुरुवार को गोवा विधानसभा को संबोधित करते हुए कहा कि पंचायत से लेकर संसद तक सभी विधायी संस्थाओं का दायित्व है कि वे जनता की समस्याओं को कार्यपालिका तक प्रभावी रूप से पहुंचाएं। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हमारी विधायिकाओं में चर्चा और संवाद का उच्च स्तर हो तथा विधायिकाओं की कार्यवाही शांति एवं गरिमा के साथ चले।ाय गोवा दौरे पर हैं। उन्होंने आज गोवा

विधानसभा के विशेष सत्र को संबोधित किया। यह सत्र विकसित भारत 2047: जन प्रतिनिधियों की भूमिका विषय पर आयोजित किया गया। लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि संसदीय लोकतंत्र में असहमति व्यक्त करने के पर्याप्त मार्ग हैं। संसद के अंदर यदि शालीनता से असहमति व्यक्त की जाए तो इससे देश और भारतीय लोकतंत्र की प्रतिष्ठा बढ़ती है। उन्होंने सुझाव दिया कि जनप्रतिनिधि जनता की आशाओं और आकांक्षाओं को सदन में आवाज दें जिससे उनकी परेशानियों का हल निकल सके। सदन के अंदर मर्यादित व्यवहार से सदन की प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है। इस अवसर पर गोवा के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत, विधानसभा अध्यक्ष रमेश तावड़कर, राज्य के मंत्री एवं विधानसभा सदस्यों समेत कई गण्यमान्य व्यक्ति मौजूद रहे।

पीएम मोदी की 21-24 जून तक अमेरिका की राजकीय यात्रा के दौरान होगी डील

अमेरिका से प्रीडेटर ड्रोन सौदे को सरकार की मंजूरी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका यात्रा से पहले ही रक्षा मंत्रालय ने गुरुवार को अमेरिका से 31 प्रीडेटर (एमक्यू-9 रीपर) ड्रोन हासिल करने के सौदे को मंजूरी दे दी, जिसके लिए अंतिम फैसला सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीएस) करेगी। यह डील भारत और अमेरिका के रिश्तों में एक मील का पत्थर होगी। इस सौदे की घोषणा पीएम मोदी की इसी माह अमेरिका की राजकीय यात्रा के दौरान की जा सकती है। दरअसल, चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) के संवेदनशील क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने और निगरानी को बढ़ावा देने

के लिए सेना, नौसेना और वायुसेना ने एमक्यू-9बी सशस्त्र ड्रोन की जरूरत जताई है। खासकर हिंद महासागर क्षेत्र में नौसेना अपनी उपस्थिति बढ़ाना चाहती है। इस ड्रोन के आने के बाद हिंद महासागर पर चीन के खिलाफ घेराबंदी और मजबूत हो सकेगी। इसी क्रम में प्रीडेटर ड्रोन के सौदे को आज रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) की बैठक में मंजूरी दे दी गई, जिसके बाद सुरक्षा पर कैबिनेट समिति को मंजूरी का इन्तजार है। सशस्त्र सेनाओं के हथियार खरीदने का निर्णय लेने के लिए डीएसी रक्षा मंत्रालय में सर्वोच्च निकाय है। इसके बाद इन अधिग्रहणों को सुरक्षा पर कैबिनेट समिति से अंतिम मंजूरी दी जाती है। भारतीय नौसेना इस सौदे के लिए प्रमुख एजेंसी है, जिसमें 15 ड्रोन अपनी जिम्मेदारी के क्षेत्र में निगरानी संचालन के लिए समुद्री बल में जाएंगे।

अफ्रीका में कारोबार के अवसर तलाश रही हैं भारतीय कंपनियां: पीयूष गोयल

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि अफ्रीका में व्यापार और निवेश बढ़ाने की भारी संभावनाएं हैं। भारतीय कंपनियां वहां अवसर तलाश रही हैं। उन्होंने कहा कि दोनों क्षेत्रों के उद्यमियों को द्विपक्षीय व्यापार को 2030 तक निर्धारित लक्ष्य 200 अरब डॉलर से पार ले जाने के बारे में सोचना चाहिए।

गोयल ने गुरुवार को यहां सीआईआई-एग्जिम बैंक के भारत-अफ्रीका वृद्धि साझेदारी पर

सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि अफ्रीका में व्यापार और निवेश बढ़ाने की भारी संभावनाएं हैं। भारतीय कंपनियां इस क्षेत्र में कई अवसर तलाश रही हैं। वे अफ्रीका में आर्थिक वृद्धि को गति देने और नौकरियां पैदा करने में मदद कर सकती हैं।

खबर संक्षेप

नेहरू ग्राम भारती विश्व विद्यालय के सहायक आचार्य को पितृशोक

प्रयागराज। नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में सहायक आचार्य डॉ. भूप नारायण शुक्ल के पिताजी का 70 वर्ष की अवस्था में मंगलवार की रात्रि दस बजे देहावसान हो गया। वह पिछले कुछ महीनों से पक्षाघात से पीड़ित थे। वह अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गए हैं।विश्वविद्यालय के कुलाधिपति जे.एन. मिश्र ने अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। विश्वविद्यालय के सभी परिसरों में भी शोक-सभा आयोजित हुई और ईश्वर से शोक-संतप्त परिवार को दुःख सहने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गयी।

शंकरगढ़ पुलिस के हत्थे चढ़ा वारंटी

शंकरगढ़। पुलिस ने गुरुवार को एक वारंटी को गिरफ्तार किया है। एसओ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि धारा 307, 323, 324, 504 के वारंटी बलराम दुबे पुत्र श्रीनाथ (निवासी बिहरिया, शंकरगढ़) को गिरफ्तार किया गया है। उसके खिलाफ आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है। यह गिरफ्तारी एसआई अमरेंद्र सिंह ने अपनी टीम के साथ की है।

दादा की अर्थी को कंधा देने जा रहे पोते की सडक हादसे में मौत, घर में कोहराम

अखंड भारत संदेश

करछना। प्रयागराज थाना अंतर्गत नरैना गांव के सामने बृहस्पतिवार को एक युवक की बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। जिससे युवक के सिर में चोट लगी और गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। जहां से शहर के लिए रेफर कर दिया गया। शहर ले जाते समय रास्ते में उसकी मौत हो गई। इस घटना का सबसे दुखद पहलू यह है कि जिस युवक की सड़क दुर्घटना में मौत हुई, उसके दादा की बुधवार की रात में मौत हो गई थी। उनकी लाश घर पर रखी थी। पोता उसी में शामिल होने के लिए जा रहा था और उसके मौत की सूचना पहुंच गई। जिससे परिवार में कोहराम मच गया। यमुनानगर के करछना थाना अंतर्गत केचुआ ग्राम सभा अंतर्गत भभैया का पूरा मजरा निवासी जनार्दन प्रसाद मिश्रा खेती किसानी करते हैं

उनके पिता कौशलेस प्रसाद मिश्रा (70) की बुधवार की देर से बीमारी की वजह से मौत हो गई थी। उनकी लाश को घर पर ही रात भर रखा गया था। आज सुबह भी नाथ रिश्तेदारों का आना जाना लगा था। इसलिए उनका इंतजार कर रहा किया जा रहा था। जनार्दन मिश्रा के दोनों बेटे चंदन और सूरज मिश्रा (28) प्रयागराज में प्राइवेट नौकरी करते थे। दादा के मौत की सूचना पर वह दोनों मोटरसाइकिल से प्रयागराज से बृहस्पतिवार को घर की तरफ जा रहे थे। सूरज दादा को कंधा देने जा रहा था और खुद कंधे पर पहुंच गया। करछना बाजार से आगे नरैना गांव के सामने उसकी बाइक अनियंत्रित होकर सड़क के डिवाइडर से टकरा गई। जिससे उसके सिर में गंभीर रूप से चोट लगी। जबकि उसके साथ बैठा भाई चंदन भी जख्मी हो गया, लेकिन उसे मामूली चोट लगी। सूचना के बाद पहुंची पुलिस सूरज और चंदन को पास के स्थित एक नर्सिंग होम में ले गए। जहां से दोनों को सीएससी रेफर कर दिया गया सीएचसी से दोनों को मोतीलाल नेहरू हॉस्पिटल लेकर गया। गंभीरावस्था में परिवार के लोग उसे अस्पताल लेकर जा रहे थे। लेकिन रास्ते में ही सूरज की मौत हो गई। चंदन को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया है। उसके बाद सूरज के शव को उनके पैतृक गांव केचुहा लाया गया जहां परिवार में कोहराम मच गया। एक ही परिवार में दो दो लोगों का शव देख गांव में भी मातम पसर गया। बुजुर्ग पिता की मौत के बाद उनके अंतिम संस्कार की तैयारी में जुटे सूरज के पिता जनार्दन प्रसाद को जब बेटे की मौत की सूचना मिली तो उनका कलेजा फट गया और बिलबिला कर रो पड़े। सूरज की शादी अभी लगभग दो साल पहले ही हुई थी। और उन दोनो के एक साल का एक बेटा है। सूरज दो भाइयों में सबसे बड़ा था और घर की जिम्मेदारी भी उसी के ऊपर थी। अब उसके भरण पोषण पर भी संकट खड़ा हो गया। सूरज के पिता ने शासन और प्रशासन से मदद की गुहार लगाई है।

इंस्पेक्टर करछना विश्वजीत प्रताप सिंह ने बताया कि बाइक की स्पीड ज्यादा थी। मृतक सूरज मिश्रा ने हेलमेट सिर पर लगाने के बजाय गाड़ी में पीछे बांध रखा था। जब डिवाइडर से उनकी बाइक टकराई तो उनका सिर भी टकराया, जिससे गंभीर चोट लगी और उनकी मौत हो गई।

संदिग्ध परिस्थितियों में विवाहिता ने लगाई फांसी हुई मौत

प्रतापपुर। सरायममरेज थानांतर्गत बीबीपुर गांव में एक विवाहिता ने बंद कमरे के अंदर फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया परिजनों ने खिड़की से झांक कर देखा तो उसके हाथ पैर हिल रहे थे जिसके बाद ग्राम प्रधान की मौजूदगी में परिजनों ने घर का दरवाजा तोड़कर विवाहिता को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले गए जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।घटना की जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची सरायममरेज पुलिस ने शव को कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के अनुसार बीबीपुर गांव निवासी ममता बिंद पत्नी सूरज कुमार बिंद उम्र 21 वर्ष बीती रात अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया मृतका की शादी 2 वर्ष पूर्व हुई थी उसका मायका मछलीशहर तहसील के जमालपुर गांव में है और उसकी एक बेटी आराध्या 9 महीने की है। विवाहिता ने फांसी क्यों लगाई है अभी इसका खुलासा नहीं हो पाया है।

न्यूज झरोखा

सद्भावना ग्राम योजना में गांव के विकास में सहायक बनें विरोधी : मंडला आयुक्त

करछना। प्रयागराज विकास खंड में आयोजित सद्भावना ग्राम योजना अंतर्गत विकास को आगे बढ़ाने को लेकर पूर्व मंडलायुक्त डॉ अजय शंकर पांडे के पहल पर विकासखंड करछना में वर्तमान एवं पूर्व प्रधान को एक मंच पर लाने के लिए गोष्ठी आयोजित कर गांव के विकास में सहयोगी बने की पहल पर सद्भावना संदेश दिया इस कार्यक्रम को दो चरणों में विभाजित किया गया था पहले पूर्व प्रधानो को जिसमें पूर्व प्रधानो ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, दूसरी पारी की बैठक में वर्तमान प्रधानो ने गोष्ठी में शामिल होने का बहिष्कार कर दिया, वही गोष्ठी में डॉ अजय शंकर पांडे ने पूर्व प्रधानों को बताया कि सद्भावना ग्राम योजना का क्रियान्वयन किया गया है परिणाम स्वरूप पंचायत प्रतिनिधियों की कार्यशैली में परिवर्तन लाना और ग्रामीण विकास में सभी प्रतिनिधियों यहां तक कि पंचायत चुनाव में विपक्षी पराजित उम्मीदवारों को भी साथ लेकर ग्रामीण विकास का कारवां सौंदर्य पूर्ण क्षेत्र में तिब्बत से प्रगति के मार्ग पर अग्रसर करने का प्रयास किया जा रहा है प्रयागराज एक सांस्कृतिक ऐतिहासिक सामाजिक सद्भावना की नगरी है के रूप में विख्यात है इस परंपरा को शुद्ध और समृद्ध बनाने के लिए इस योजना का सफल क्रियान्वयन पूरे प्रदेश के लिए अनुकरणीय होगा तथा उन्होंने अपील किया कि सद्भावना करने के लिए काफी पहल और प्रयासों से मेरा सदैव आपके साथ हैं और हमेशा रहेगा कार्यक्रम में मुख्य रूप से एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा सचिव कमल सिंह अमित सिंह मनीष यादव राम सकल राज कपूर गौतम संजीव श्रीवास्तव अमरेश सिंह सहित ब्लॉक के कर्मी एवं ग्राम पंचायतों के उप विजेता प्रधानो ने सहभागिता की।

गोसौरा कोटा के लिए कंचन यादव निर्वाचित

मेजा। विकास खंड उरुवा अंतर्गत ग्राम (पंचायत) गोसौरा कला में सहायक विकास अधिकारी सुदामा राम गावड़े की अध्यक्षता में गहमागहमी के बीच कोटे की दुकान को लेकर चुनाव संपन्न हुआ।सहायक विकास अधिकारी(पंचायत) उरुवा सुदामा राम गांवड़े ने अपने देख रेख में चुनाव सम्पन्न कराया। सस्ते गले की दुकान के चुनाव में कंचन यादव पत्नी कृपा शंकर यादव और चंद्र कली पत्नी कमलेश कुमार आमने-सामने रहीं । मतदान के पश्चात कंचन यादव 166 मत और चंद्र कली 158 मत मिले। गोसौरा कला की सस्ते राशन की दुकान कंचन यादव के पक्ष में गया। इस मौके पर ग्राम सचिव पवन कुमार पटेल, ग्राम प्रधान राम मनोहर, सफाई कर्मी सहित भारी संख्या में ग्रामीण उपस्थित रहे।

पेंशन बहाली को लेकर करछना ब्लाक मुख्यालय पर गरजे सफाई कर्मी

करछना। विकासखंड करछना में गुरुवार को पंचायती राज्य ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ के बैनर तले विकासखंड करछना में कार्यरत सफाई कर्मियों ने पेंशन बहाली को लेकर फ्लैग मार्च किया तथा सरकार से पुरानी पेंशन बहाली को लेकर अपनी आवाज बुलंद की जिसका नेतृत्व कर रहे विकासखंड करछना के एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा एवं सैकड़ों की संख्या मे सफाई संघ के कर्मी मौजूद रहे तथा सफाई कर्मियों ने सरकार से पुरानी पेंशन लागू करने की अपनी मांग करते हुए कई बिंदुओं पर मांगों को लेकर चर्चा की इस मौके पर सफाई कर्मचारी मौजूद रहे।

नौकरी दिलवाने के नाम पर सोलह हजार ठगे

मऊआइमा। मोबाइल पर सक्रिय जालसाजों ने एक युवक को नटराज कंपनी में नौकरी दिलवाने के नाम पर सोलह हजार रुपये ठग लिया। भुक्तभोगी ने अज्ञात के खिलाफ जालसाजी ,फ्राड का मुकदमा दर्ज करा दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के कखरी उर्फ गंगा का पूरा गांव निवासी मनोज कुमार पटेल पुत्र रामसुमेर का कहना है कि उसके मोबाइल नंबर पर एक अज्ञात नम्बर से फोन आया और कहा गया है नटराज कंपनी में नौकरी की लाटरी लगी है। मनोज का आरोप है कि जालसा ने उससे गूगल पे से तीन बार में सोलह हजार रुपये हडप लिया। बाद में जालसाजों का मोबाइल बंद कर दिया गया। भुक्तभोगी मनोज कुमार पटेल ने अज्ञात जालसाज के खिलाफ मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर जालसाजी फ्राड का मुकदमा दर्ज करा दिया है।

राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) मोर्चा ने राज्यपाल को संबोधित सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

रत्योरा। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग ओबीसी मोर्चा के द्वारा राज्यपाल को संबोधित उप जिलाधिकारी कोरांव को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के द्वारा निकाली गई ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती में ओबीसी को नियमानुसार 27% आरक्षण देने, उत्तर प्रदेश में छः लाख पात्र ओबीसी छात्र - छात्राओं को छात्रवृत्ति एवं शुल्क भरपाई करने जैसी मांगे शामिल रहीं। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी विकास पटेल के आह्वान पर प्रदेश व्यापी धरना प्रदर्शन करते हुए प्रत्येक जनपदों एवं तहसीलों में ज्ञापन सौंपकर ओबीसी के हितों की मांग रखी गई। ज्ञापन सौंप रहे पिछड़ा वर्ग मोर्चा के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष संतोष कुमार मौर्य ने कहा कि ग्राम पंचायत अधिकारी के लिए कुल 1468 पद सृजित किए गए हैं।

ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती में ओबीसी को नियमानुसार 27% आरक्षण देने की मांग

विज्ञापन में 849 सीटें सामान्य उम्मीदवारों के लिए 117 सीटें ईडब्ल्यूएस के लिए 139 सीटें ओबीसी के लिए 356 सीटें एससी के लिए और 7 सीटें एसटी के लिए आरक्षित की गई हैं। मानदंडों के अनुसार ओबीसी को 27% आरक्षण मिलना चाहिए जो लगभग 396 पदों पर आता है। कुल रिक्तियां 1468 हैं लेकिन विज्ञापन के अनुसार ओबीसी के लिए केवल 139 पदों को आरक्षित किया गया है। जो मात्र 9.5% है जो कि ओबीसी के साथ अन्याय है। इसलिए उपरोक्त भर्ती में ओबीसी को 27% आरक्षण लागू किया जाए। इसी प्रकार ज्ञापन में बताया गया है कि मौजूदा सत्र में उत्तर प्रदेश में छः लाख ओबीसी के पात्र छात्र-छात्राएं समुचित बजट के अभाव में छात्रवृत्ति एवं फीस भरपाई से वंचित रह गए हैं। जिसमें कक्षा 10 के ऊपर पढ़ने वाले पांच लाख एवं कक्षा 10 के नीचे पढ़ने वाले एक लाख गरीब छात्र शामिल हैं। ओबीसी पिछड़ा वर्ग मोर्चा ने छात्रों की फीस भरपाई व स्कॉलरशिप का तत्काल भुगतान कराए जाने की मांग की है। एसडीएम की अनुपस्थिति में ज्ञापन थाना प्रभारी धीरेंद्र सिंह की मौजूदगी में एसडीएम के स्टेनो द्वारा लिया गया। प्रदर्शनकारियों को ज्ञापन राज्यपाल को भेजे जाने का आश्वासन दिया गया। ज्ञापन सौंपने के दौरान कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष संतोष कुमार मौर्य, चंद्रिका प्रसाद कुशवाहा, रमेश चंद्र, शशिकांत कुशवाहा एडवोकेट समेत कई अन्य लोग मौजूद रहे।

विवाहिता को मार कर फांसी के फंदे पर लटकाने वाले आरोपी पति और सास को पुलिस ने भेजा जेल

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। मंगलवार को फांसी के फंदे पर झूलती हुई मिली विवाहिता के मयके वालों ने दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज करवाया था।पुलिस ने गुरूवार को पति और सास को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के गदियानी सरैंया गांव निवासी अतुल कुमार यादव की पत्नी उमा देवी मंगलवार को सुबह संदिग्ध हालात में फांसी के फंदे पर झूलती हुई मिली थी। पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दी थी। मृतका उमा देवी के भाई संतोष कुमार पुत्र स्वर्गीय नोखेलाल ग्राम मल्हूपुर देल्हूपुर प्रतापगढ़ ने मऊआइमा थाने में दहेज कीमांग न पूरी होने पर ससुरालियों द्वारा मार कर फांसी के फंदे पर लटका देने का आरोप लगाते हुए पति अतुल कुमार यादव ,ससुर ,भोलानाथ ,सास कस्तूरबा देवी ,देवर बबलू ,देवरानी अज्ञात ,देवर ननके ,ननद माधुरी देवी के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज कराया था। गुरुवार को मऊआइमा पुलिस ने दहेज हत्यारे पति अतुल कुमार यादव और सास कस्तूरबा देवी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। तथा शेष फरार आरोपियों की तलाश कर रही है।

रहस्यमय ढंग से किशोरी गायब

मऊआइमा। घर से अचानक किशोरी गायब हो गई। कई दिनों तक तलाश के बाद जब नहीं मिली तो परिजनों ने अपहरण का मुकदमा दर्ज करा दिया। मऊआइमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासनीय एक महिला का कहना है उसके भाई की लडकी उसके यहां कई वर्षों से रह रही थी। सात जून को अचानक सतरह वर्षीय किशोरी गायब हो गई। किन्हीं अनहोनी से सहमे हुए परिजनों ने मऊआइमा थाने में अज्ञात के खिलाफ अपहरण का मुदकमा दर्ज करा दिया है।

ब्लॉक के कर्मचारियों द्वारा सहयोग न करने पर की जाएगी सख्त कार्यवाही : सुरेंद्र चौधरी

अखंड भारत संदेश

सोरांव। जल जीवन मिशन के तहत प्रत्येक राजस्व गांव से एक सामाजिक व्यक्ति और प्रत्येक ग्राम पंचायत के लेखपाल और वार्ड मेंबरों को प्रशिक्षण विकासखंड सोरांव के सभागार में दिया गया । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधान परिषद सदस्य सुरेंद्र चौधरी ने कहा कि हर घर जल योजना प्रधानमंत्री की एक स्वर्णिम योजना है। जिसका लक्ष्य हर घर तक शुद्ध पानी पहुंचाने की है। आगे उन्होंने कहा कि यह योजना तभी सफल होगी जब हर ग्राम पंचायत स्तर पर सभी लोग जागरूक होंगे इसी क्रम में पंचायत प्रतिनिधियों का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कराया जा रहा है। सभागार में मौजूद सभी प्रशिक्षणार्थियों को किट वितरण किया। और सभी को ग्राम पंचायत स्तर पर जागरूक करने के लिए भी कहा गया। सोरांव ब्लाक प्रमुख प्रदीप पासी ने कहा की जल जीवन मिशन को अपने गांव में लागू करने के लिए ग्राम पंचायतों को अपनी आवश्यकता के अनुसार ग्राम कारी योजना बनानी होगी । इस परियोजना के माध्यम से प्रत्येक घर को एक घरेलू नल कनेक्शन के जरिए पानी उपलब्ध कराना मुख्य उद्देश्य है। जल जीवन विधान परिषद सदस्य सुरेंद्र चौधरी गुरुवार को सोरांव ब्लॉक मे एक मुख्य आदेश दिया। उन्होंने कहा जल जीवन मिशन कि जो भी टीम प्रत्येक ब्लॉकों में प्रशिक्षण का कार्य कर रही है। उन टीमों को ब्लॉक संबंधित किसी भी अधिकारी या कर्मचारी उनका सहयोग कार्यक्रम कराने में मदद नहीं करते हैं। तो उन्हें जल जीवन मिशन टीम उन अधिकारियों का नाम और ब्लॉक का नाम अवगत कराने की कृपया करें उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। मिशन का यह प्रशिक्षण कार्यक्रम मेरा पथ एजुकेशन लिमिटेड द्वारा किया गया जिसमें मुख्य रूप से अभिषेक शुक्ला,

जल जीवन मिशन के तहत प्रशिक्षित किए गए क्षेत्र पंचायत सदस्य

करछना। प्रयागराज विकासखंड करछना के अंतर्गत ग्राम पंचायतों में पेयजल मुहैया कराने के उद्देश्य चलाई जा रही जल जीवन मिशन योजना के अंतर्गत प्रधानों सहायकों , क्षेत्र पंचायत सदस्यों एवं ग्रामीणों को सभागार में प्रशिक्षण दिया गया या परियोजना भारतीय संविधान के 73वें संशोधन को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है परियोजना का निर्धारण गांव स्तर से ही होगा इससे गांव के लोगों को पूरी भागीदारी होगी यह परियोजना भारत सरकार एवं राज्य सरकार के सहयोग से प्रत्येक गांव में हर घर के लिए चलाई गई तथा इस मिशन का मुख्य उद्देश हर घर जल पहुंचाने का है जल जीवन मिशन को अपने गांव में लागू करने के लिए ग्राम पंचायतों को अपनी आवश्यकता के अनुसार ग्राम कार्ययोजना बनानी होगी इस परियोजना के माध्यम से प्रत्येक घर को एक कार्यशील घरेलू नल कनेक्शन के जरिए स्वच्छ जल उपलब्ध कराना मुख्य उद्देश्य है प्रशिक्षण उपरांत उपस्थित जल जीवन मिशन शिवाकांत द्विवेदी जल जीवन मिशन के जिला सहायक, एवं मीना शुक्ला जल जीवन मिशन कोऑर्डिनेटर द्वारा सदस्यों को प्रशिक्षित किया गया उपस्थित प्रमुख लोगों में सूरज निषाद राकेश सिंह नारायण दुबे शिवाकांत द्विवेदी प्रभाकर मौर्य संगीता पटेल बीना पटेल संगीता देवी अनारकली सविता मौर्या सूरज अमरीश मौर्य बृजभषण प्रधान प्रतिनिधि अमित कनौजिया ग्राम पंचायत देवरी सचिव कमल सिंह अमरेश सिंह सचिव संजीव श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में ब्लॉक कर्मी व क्षेत्र के गणमान्य लोग प्रधान एवं जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

शिवाजी जी राठौर, ओम प्रकाश, संतोष कुमार, पुष्पा देवी, सुशील कुमार, नीरज कुमार, बृजेश, सुनील कुमार, जय करण, सुभाष चंद्र आदि मौजूद रहे।

जलनिगम की मोटर जली आधा दर्जन गांवों में पानी के लिए मचा हाहाकार

अखंड भारत संदेश

जसरा। विकास खंड जसरा के ग्राम पंचायत तातारगंज में जलनिगम की मोटर जल जाने के लगभग आधा दर्जन गांवों में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है। ग्रामीणों को पानी के लिए दर दर भटकना पड़ रहा है। बताते चलें कि तातारगंज में तीन दशक पूर्व प्रदेश सरकार द्वारा दो जलनिगम लगाए गये थे। जिसमें से एक जलनिगम का बोर काफी दिनों से खराब पड़ा हुआ है। जबकि एक जलनिगम से आस पास के लगभग आधा दर्जन गांवों में पेयजल की सप्लाई हो रही थी। चार दिन पूर्व लो वोल्टेज की वजह से जलनिगम की मोटर जल गई। मोटर जल जाने के कारण पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ है। पीने के लिए लोगों को दूर दूर से पानी ढोना पड़ रहा है। वहीं नहर में भी पानी न होने के कारण गोवंशों को भी पीने के लिए पानी नहीं मिल पा रहा है। छोटे बड़े सब गांव के लोग हैंडपंप पर सुबह से शाम तक लाइन लगाये रहते हैं। वहीं जलनिगम के जेई निरंजन वर्मा ने बताया कि जलनिगम नंबर दो की मोटर जल गई है। जलनिगम एक की मोटर निकलवा कर जल्द ही जलनिगम चालू किया जाएगा।

दबंगों द्वारा जबरन उखाड़ कर फेंक दिया गया पुस्तैनी खंडजा

करछना। थाना क्षेत्र के बसही गांव में दबंगों द्वारा पहले तो प्रशासन को चैलेंज कर रास्ते पर गेट लगा कर बन्द कर दिया गया जिसके बाद शिकायत आला अधिकारियों से की गई तो भारी पुलिस बल के साथ रास्ते पर लगा गेट उखाड़ा गया और रास्ते को?खली कराया गया जिसके बाद अब दबंगों ने रास्ते पर लगा पत्थर उखाड़कर उठा ले गए पीड़ित अरविंद मिश्रा लगातार अधिकारियों से इस बात की शिकायत कर रहा है लेकिन इन दबंगों पर योगी सरकार के फरमानों का कोई असर नहीं हो रहा है लगातार दबंगई शोरे पुस्ती का वीडियो सीसीटीवी कैमरे में कैद है पीड़ित परिवार। का निकलने का मार्ग पुरी तरह से बन्द कर दिया गया है जबकि तहसील प्रसाशन ने रास्ता न बन्द करने की हिदायत दी थी लेकिन दबंग मानने को तैयार नहीं है ना ही अधिकारी इनके उपर कठोर कार्रवाई करने के लिए तैयार है जिससे गाव में तनाव फैला हुआ है कभी भी अप्रिय घटना होने की आशंका जाहिर की जा सकती है।

पुरानी रंजिश को लेकर मार पीट के मामले में चार पर मुकदमा

मऊआइमा। पुरानी रंजिश को लेकर पडोसी ने महिला को मार पीट कर घायल कर दिया महिला ने थाने में तहरीर दे कर चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के सराय कोरा दांदूपुर गांव निवासनीय सीमा देवी पत्नी राजेंद्र प्रसाद का आरोप है कि पुरानी रंजिश को लेकर पड़ोसी उसे मारे पीटे तथा जान से मारने की धमकी दिए। सीमा देवी ने मऊआइमा थाने में तहरीर दे कर रामशरण ,प्रियंका, श्रेता, जूही के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दी है।

ग्रामीणांचल के बच्चों को नीट की परीक्षा में मिली सफलता तो खिले उठे चेहरे

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। मेडिकल कॉलेज में दाखिले के लिए आयोजित नीट (राष्ट्रीय पात्रता व प्रवेश परीक्षा) के नतीजे घोषित कर दिए गए हैं। नीट का परिणाम जारी होने के बाद से चयनित बच्चों में खुशी की लहर देखी जा रही है। इस परीक्षा में देश के बड़े आबादी वाले राज्य यूपी से 1.39 लाख बच्चे सफल हुए हैं। जनपद प्रयागराज की बात करें तो यहां से भी भारी संख्या में मेधावियों ने नीट (ठएएळ) की परीक्षा में सफलता का परचम लहराया है। यमुनापार के विकास खंड शंकरगढ़ से अमित सिंह पुत्र गजेंद्र सिंह (सोनवर्षा) ने 720 में 672 अंक हासिल किया है। आल इंडिया रैंक 2514 और कैटेगरी रैंक 742 है। इसी क्रम में देवरी बेनी निवासी आदित्य सिंह पुत्र धीरेंद्र सिंह ने 720 में 665 अंक हासिल किया है। आदित्य की आल इंडिया रैंक 3813 और कैटेगरी रैंक 1233 है। देवरीबेनी के ही उदित सिंह पुत्र धीरेंद्र सिंह को 720 में 641 अंक मिले हैं। उदित सिंह की आल इंडिया रैंक 9612 और कैटेगरी रैंक 3668 है। इसी क्रम में कुणाल त्रिपाठी पुत्र मनोज त्रिपाठी को 720 में 630 अंक मिले हैं। कुणाल त्रिपाठी की आल इंडिया रैंक

13839 और कैटेगरी रैंक 1628 है। करियाकला के अंबुज सिंह पुत्र हरगेंद्र सिंह ने 620 अंक हासिल किया। अंबुज की आल इंडिया रैंक 18399 और कैटेगरी रैंक 7646 है।

पुलिस लाइन में हार्ट अटैक से 2 पुलिस कर्मियों की हुई मौत

एसआई राजेश एक्सरसाइज करते समय गिरे, हेड कांस्टेबल नंद किशोर का 15 दिन बाद था रिटायरमेंट

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। पुलिस लाइन में रहने वाले दरोगा राजेश पाठक की गुरुवार को सुबह एक्सरसाइज करते समय आचानक से तबीयत बिगड़ गई। उन्हें तत्काल स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। अचानक हुई मौत से उनके परिवार वालों को गहरा सदमा लगा है पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है मूल रूप से संतकबीरनगर के बरखेड़ा थाना अंतर्गत मेडरा पार गांव निवासी राजेश पाठक (55) पुत्र ओमकार नाथ पाठक का परिवार रजनी खंड, आशियाना, लखनऊ में बने मकान में रहता है। उनकी पत्नी अमृता पाठक और दो बेटे हिमांशु और प्रखर लखनऊ में उनके माता-पिता के साथ रहते हैं। दोनों बेटे अभी पढ़ाई कर रहे हैं। राजेश पाठक यहां पुलिस लाइन में मिले सरकारी क्वार्टर में रहते थे। उनकी पोस्टिंग से सिविल लाइंस कोतवाली में थी ह रोज की तरह गुरुवार को सुबह पुलिस क्लब में एक्सरसाइज करने गए थे। एक्सरसाइज करते समय आचानक से वह गिर गए बेहोशी हालत में उन्हें एसआरएन अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया इंस्पेक्टर सिविल लाइंस वीरेंद्र सिंह यादव ने बताया कि 14 जून को राजेश पाठक ड्यूटी करके अपने क्वार्टर पर गए थे राजेश पाठक बिल्कुल फिट थथेकोई ऐसी बीमारी नहीं थी लेकिन आज पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हार्ट अटैक से मौत की पुष्टि की गई है। राजेश पाठक कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारी थे वह पूरी तरह से स्वस्थ थे इसी क्रम में पुलिस लाइन में तैनात हड कांस्टेबल नंद किशोर श्रीवास्तव (59) पुत्र अआनंद प्रसाद श्रीवास्तव की गुरुवार क दोपहर में अचानक तबीयत बिगड़ गई।

उन्हें उनके साथियों ने स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय पहुंचाया लेकिन तब तक देर हो चुकी थी चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया वह मूल रूप से जारी, कोतवाली देहात, बांदा के रहने वाले थे उनका 15 दिन बाद रिटायरमेंट था उनके घरवालों को सूचना दे दी गई है शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है हार्ट अटैक की वजह से उनकी जान गई है।

करेंट की चपेट में आकर युवक की हुई मौत

घर का इकलौता चिराग बुझ जाने से परिवार में मचा कोहराम

रत्योरा। स्थानीय थाना क्षेत्र में कूलर बनाते समय बिजली करेंट की चपेट में आकर मां-बाप के इकलौते संतान की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। जानकारी के मुताबिक कोरांव थाना क्षेत्र के टीकर गांव निवासी अंकित जायसवाल (18) पुत्र लोकनाथ जायसवाल उर्फ सिपाही अपने मां-बाप का इकलौता संतान था। बीती बुधवार की रात्रि बिजली कटी हुई थी। उसी समय वह कूलर बनाने लगा। अचानक बिजली आ जाने से वह करेंट की चपेट में आ गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई। घर के इकलौते चिराग को बुझ जाने से परिवार में कोहराम मचा हुआ है। अंकित दो बहनों व एक भाई में दूसरे नंबर का था। बड़ी बहन की शादी हो गई है जबकि दूसरी बहन कि अभी शादी भी नहीं हुई है। हादसे के बाद पिता समेत माता बबीता एवं अन्य परिजनों का रो रो कर बुरा हाल हो गया। सुबह परिजनों ने मृत युवक का दाह संस्कार कर दिया।

गंगा घाट से पुलिस ने उठाया शव, मृतका के भाई की सूचना पर पहुचीं थी पुलिस

अखंड भारत संदेश

विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई थी मौत

मांडा। मांडा थाना क्षेत्र में मड़ार गांव में विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। ससुरालीजनों द्वारा अंतिम संस्कार के लिए शव गंगा घाट ले जाया गया। लेकिन मृतका के भाई की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को गंगा घाट से कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।मांडा के दिघिया पुलिस चौकी अंतर्गत मड़ार निवासी सोहन लाल की पत्नी आशा देवी (23) की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। इससे ससुरालीजनों में कोहराम मच गया। गुरुवार सुबह परिजन शव के अंतिम संस्कार के लिए स्थानीय महेवा गंगाघाट पहुंचे। इस दौरान मृतका के भाई उमाशंकर को घटना की जानकारी हुई।वहीं मृतका के भाई ने डायल-112 पुलिस को सूचना दी। उक्त सूचना पर भारतगंज चौकी प्रभारी दुर्गेश सिंह पुलिस टीम के साथ घाट पहुंचे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा की कार्रवाई के बाद पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

बूढ़ेनाथ मंदिर में मृतका की हुई थी शादी : मृतका के भाई के मुताबिक दो वर्षों पूर्व महेवा कला गांव स्थित बूढ़ेनाथ मंदिर में मृतका की शादी हुई थी। आखिरकार मौत की सूचना मायके पक्ष के लोगों को न देने की वजह ससुरालीजन नहीं बता पा रहे हैं।भारतगंज चौकी प्रभारी दुर्गेश सिंह ने बताया कि मायके पक्ष ने हत्या की आशंका जताते हुए पुलिस को सूचना दी है। फिलहाल अभी तहरीर नहीं मिली है। सूचना पर शव को चिता से कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है।

सिलेंडर ब्लास्ट होने से लगी आग, तीन सगे भाइयों की गृहस्थी जलकर हुई राख, पांच लोग झुलसे

मांडा। मांडा थाना क्षेत्र में रामपुर सीरिया गांव में खाना बनाते समय गैस सिलेंडर ब्लास्ट होने के कारण तीन घरों में आग लग गई। जिससे आग तबाही के मंजर में बदल गई। आग का विकराल रूप देख ग्रामीण भाग खड़े हुए। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। लेकिन तब तक लाखों की गृहस्थी के साथ पांच लोगों सहित दो मवेशी झुलस गए। मांडा थाना क्षेत्र के रामपुर सीरिया निवासी रमेश पटेल के झोपड़ी में गुरुवार सुबह ग्यारह बजे खाना बनाते समय गैस सिलेंडर ब्लास्ट हो गया। इससे तीन घरों में अचानक भीषण आग लग गई। जब तक लोग कुछ समझते कि आग राजू पटेल व महेश पटेल के घर मे लग गई। इससे ग्रामीणों के अफरा तफरी मच गई। भीषण आग देख ग्रामीणों ने फायर ब्रिगेड को सूचना दी।सूचना पर पहुंचे फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों ने घंटों कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। तब तक तीनों घरों की तकरीबन पांच लाख की गृहस्थी जलकर राख हो गई। आगजनी में कुल पांच लोग व दो मवेशी झुलस गए हैं।सभी घायलों का नजदीकी अस्पताल में इलाज चल रहा है।

गुड्डू मुस्लिम पर बड़ी कार्रवाई, पीडीए ने उसकी दुकान को फिर किया सील, जांच कमेटी गठित

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। उमेश पाल हत्याकांड के आरोपी पांच लाख के इनामी बमबाज गुड्डू मुस्लिम पर प्रशासन ने कड़ी कार्रवाई की है। पीडीए की टीम ने गुड्डू मुस्लिम के चिकन शॉप को सील कर दिया है। उसकी दुकान किसके इशारे पर खोली गई है और कौन कौन लोग इसमें शामिल हैं, इसकी जांच के लिए पीडीए सचिव ने एक कमेटी गठित कर दी है। उमेश पाल की हत्या के बाद पुलिस ने चकनिरातुल चकिया स्थित उसके मकान और चिकन शाप को सील कर दिया था। कुछ दिन पहले चिकन शॉप खुल गई। यहां पर चिकन और मटन की बिक्री भी की जाने लगी। इसकी भनक लगने पर पीडीए की टीम ने फिर उसके दुकान को सील कर दिया।पांच लाख के इनामी गुड्डू मुस्लिम का मकान और चिकन शाप चकिया में माफिया अतीक अहमद के दफ्तर से चंद कदम की दूरी पर स्थित है। उमेश पाल की हत्या के बाद गुड्डू मुस्लिम फरार हो गया है। पुलिस उसकी सरगर्मी से तलाश कर रही है। हत्याकांड से जुड़े अतीक के दर्जन भर से अधिक गुर्गों और करीबियों के मकान को ध्वस्त कर दिया गया और उनकी संपत्तियों पर बुलडोजर चला दिया गया है।

किसके इशारे पर खोली गई दुकान

गुड्डू मुस्लिम की चिकन और मटन शॉप चकिया तिराहे के पास मुख्य रोड पर है। पुलिस ने इसे भी सील किया था। दो दिन पहले अचानक चिकन की शॉप खुलने पर लोग अचंभित रह गए। दुकान को रंग रोगन कराया गया था और बाहर जाली में मुर्गे रखकर बिक्री भी शुरू कर दी गई। दुकान लगातार तीन दिनों तक खुली। अमर उजाला में खबर प्रकाशित होने के बाद प्रशासन हरकत में आ गया। आनन फानन उसके दुकान को फिर सील करा दिया गया। उसकी दुकान किसके इशारे पर खोली गई, यह अहम प्रश्न सबके सामने है। पीडीए ने पूरे मामले की जांच के लिए एक कमेटी भी गठित कर दी है जो कुछ दिनों में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी। सील होने के बावजूद दुकान खुलने को लेकर हर तरफ चर्चा है। इसे लोग पुलिस की मिलीभगत से जोड़कर भी देख रहे हैं। पीडीए के सचिव ने मामले की जांच के लिए कमेटी का गठन किया है।

आम-तोड़ने के चक्कर में युवक की गई जान

अखंड भारत संदेश

करंट का झटका लगने से गिरा छत के नीचे, इलाज के दौरान मौत

प्रयागराज। शिवकुटी थाना क्षेत्र में छत पर चढ़कर पड़ोस में लगे आम के पेड़ से आम तोड़ने की कोशिश में एक युवक करंट की चपेट में आ गया। गंभीर रूप से झुलसे युवक को स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय में भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान दोपहर में मौत हो गई गंगापार के नवाबगंज थाना क्षेत्र में अटरामपुर गांव निवासी गणेश प्रजापति (25) पुत्र जवाहर लाल प्रजापति दो भाइयों में बड़ा था। वह अपनी पत्नी अनीता देवी और एक बेटी के साथ प्रयागराज के शिवकुटी थाना क्षेत्र तेलियरगंज मोहल्ले में किराए का कमरा लेकर रहता था शहर में प्राइवेट काम करता था घरवालों ने बताया कि जहां वह लोग रहते हैं पड़ोस में आम का पेड़ लगा हुआ था जिसमें आम के फल लगे थे छत पर चढ़कर वह आम तोड़ने की कोशिश कर रहा था उसी दौरान ऊपर से गए एचटी लाइन के तार में उसका डंडा गया जिससे उसे करंट का झटका लगा और वह छत से नीचे गिर गया गंभीर रूप से झुलसे गणेश प्रजापति को पहले प्राइवेट हॉस्पिटल ले जाया गया वहां से जवाब मिलने के बाद स्वरूपरानी नेहरू चिकित्सालय ले जाया गया जहां इलाज के दौरान दोपहर में उसकी मौत हो गई सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

इफको के सांस्कृतिक महोत्सव में दिखी भारतीय संस्कृति की झलक...

अखंड भारत संदेश

सांस्कृतिक कार्यक्रम युवा पीढ़ी के लिए एक अच्छा मंच है- बीरिंदर सिंह

फूलपुर। इफको में 11वें अंतर इकाई सांस्कृतिक महोत्सव के चौथे दिन कलोल इकाई की टीम ने शानदान सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जिसमें मुख्य अतिथि निदेशक कारपोरेट सेवाएं बीरिंदर सिंह एवं विशिष्ट अतिथि इफको कलोल इकाई प्रमुख डीजी इनामदार एवं उनकी धर्मपत्नी निशा इनामदार रही। मुख्य अतिथि बीरिंदर सिंह ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम युवा पीढ़ी के लिए बहुत अच्छा मंच है और इस मंच से कई कलाकार उभरे है। उन्होंने कहा कि 10 मिनट के कार्यक्रम में कलाकार कई सप्ताह की मेहनत होती है, इससे टीम वर्क की भावना विकसित होती है।कार्यक्रम का शुभारंभ विशिष्ट जनों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर पुष्पांजलि एवं दीप प्रज्जवलन के साथ हुआ। कलोल टीम ने गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कलोल टीम ने कुमाउनी लोक गीत,राजस्थानी लोक गीत घूमर, एकल गीत "बाजे रे मुरलीया बाजे रे", सनातनी 5 जी विषय पर आधारित लधु नाटक, असमिया लोकनृत्य बीहू, कृष्ण रास पर आधारित सामूहिक गीत, इफको,उदय पारट की कहानी "गाँव में अपनो की झाँव में" पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया। कव्वाली जिसके बोल मिट्टी की जान इफको भारत की शान इफको, विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। एकल गीत कजरी रहा जिसे हीरल भट्ट ने गाया। कार्यक्रम का संचालन संतोष कुमार सिंह ने किया। वंदिता, गीता, अभिषेक व अन्य ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया। वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक इफको फूलपुर संजय कुदेशिया, इफको कलोल कर्मचारी संघ के अध्यक्ष परमील भाई पटेल व महामंत्री पंकज भट्ट संयुक्त महाप्रबंधक क्रमशः संजय वैश्य, एम.डी. मिश्र, ए.पी.राजेन्द्रन, पी.के.सिंह, संजय भंडारी व अन्य संयुक्त महाप्रबंधक उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष मानव संसाधन शम्भू शेखर, इफको फूलपुर आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सोनू तिवारी व महामंत्री स्वयं प्रकाश, कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज पाण्डेय व महामंत्री विनय यादव के साथ ही बड़ी संख्या में इफको कर्मचारी सपरिवार कार्यक्रम में उपस्थित रहा।

सामाजिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण जरूरी : रीता जोशी

सांसद रीता जोशी ने एनटीपीसी में लघु जल प्रणाली का लोकार्पण कर कहा ग्रामीणों के लिए यह वरदान साबित होगा

अखंड भारत संदेश

मेजा। मेजा ऊर्जा निगम में आयोजित बालिका सशक्तिकरण अभियान (जेम)-2023 के महीने भर की ग्रीष्मकालीन कार्यशाला का समापन गुरुवार को एक रंगारंग समारोह के साथ हुआ। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद प्रो. रीता बहुगुणा जोशी सम्मिलित हुईं। इस अवसर पर अपने संदेश में डॉ. जोशी ने बालिकाओं और महिलाओं के कल्याण के लिए केंद्र और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों को रेखांकित किया। उन्होंने नैगम सामाजिक दायित्व के क्षेत्र में एनटीपीसी के प्रयासों की सराहना की तथा महिलाओं, बच्चों और समाज के अन्य वंचित वर्गों के विकास के लिए काम करते रहने के लिए प्रोत्साहित किया। केदार रंजन पाण्डु, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, एमयूएनपीएल ने समारोह हेतु अपना बहुमूल्य समय प्रदान करने के लिए सांसद के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने मेजा परियोजना के परिक्षेत्र में रहने वाले लोगों के सामाजिक कल्याण के प्रति कार्य करते रहने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर ग्राम मई कलां में 6 नग सौर-ऊर्जा संचालित लघु जल प्रणालियों का लोकार्पण डॉ. जोशी द्वारा किया गया, जिससे 150 से अधिक ग्रामीण परिवार लाभान्वित होंगे।उन्होंने गांव इसौटा में बिटुमिनस सड़क के निर्माण की नींव भी रखी और महिला स्वयं सहायता समूह ह्लधृतिह्व के गठन में भाग लिया। यह समूह मूंज हस्तशिल्प और जूट-बैग बनाने के माध्यम से युवा महिलाओं के लिए आजीविका के अवसर पैदा करने की दिशा में काम करेगी। कार्यक्रम में ऊर्जा निगम के महाप्रबंधक और वरिष्ठ अधिकारी, महिला क्लब अपराजिता महिला समाज की उपाध्यक्ष और अन्य पदाधिकारी, परियोजना प्रभावित गांवों के ग्राम प्रधान तथा अन्य प्रबुद्ध जन एवं कार्यशाला प्रतिभागियों के अभिभावक भी शामिल हुए।

मुक्त विश्वविद्यालय में आज लगेगा रक्तदान शिविर

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय प्रयागराज में विश्व रक्तदान दिवस के उपलक्ष्य में स्वास्थ्य विज्ञान विद्या शाखा के तत्वावधान में 16 जून 2023 को पूर्वाह्न 11:00 बजे तेज बहादुर सप्रू चिकित्सालय रक्तदान केंद्र के सहयोग से स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया है। यह जानकारी देते हुए कुलसचिव कर्नल विनय कुमार ने बताया कि इस अवसर पर कुलपति प्रोफेसर सीमा सिंह द्वारा विश्व रक्तदाता दिवस 2023 की शपथ दिलाई जाएगी। उन्होंने बताया कि भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विश्व रक्तदाता दिवस 14 जून से 13 जुलाई तक एक मासिक अभियान के रूप में मनाया जा रहा है।

सूचना

मैं शशांक गुप्ता पुत्र शिव कुमार गुप्ता गांव जंघई, पोस्ट जंघई बाजार, जिला प्रयागराज का निवासी हूं मेरा होमियोपैथिक चिकित्सा परिषद उत्तर प्रदेश का अभिज्ञान पत्र जिसका नंबर ल036128 वास्तव में कहीं खो गया है।

नैनी में बिजली पानी के लिए गर्मी में जूझ रहे हैं लोग

अखंड भारत संदेश

अघोषित विद्युत कटौती, बाधित जलापूर्ति से दर्जन भर मोहल्लों की जनता परेशान दूसरे के घर में लगे समरसेबल से जनरेटर चलाकर पानी ले रहे हैं

नैनी। नैनी के अरैल, सोडिया भीट, मवैया समेत एक दर्जन मोहल्लों में बिजली पानी के लिए हाहाकार मचा हैं एक तरफ सूर्य देव की तल्खी से चल रही भीषण लू और धूलभरी आंधी से लोगों का जीवन बेहाल है इसी में बिजली की अघोषित कटौती और जलापूर्ति बाधित होने से लोग परेशान है नैनी के एक दर्जन मोहल्लों में पानी न आने के कारण ग्रामीणों में त्राहि-त्राहि मची है भाजपा किसान मोर्चा जिला उपाध्यक्ष संजय श्रीवास्तव ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा कि इसी तरह कम से कम एक हफ्ते से कई मोहल्लों में पानी न आने के कारण ग्रामीण दूसरे के घर में लगे समरसेबल से जनरेटर चलाकर पानी ले रहे है जलपूर्ति बाधित होने से सोमेश्वर नाथ, नंदन तलाब, शिवनगर, मुखिया नगर, कर्बला, सैनिक कॉलोनी, सच्चा बाबा नगर, मुरादपुर, प्रयाग वाली टोला, देवरख, चक विश्वनाथ, गंगापुरम, राम नगर, कृष्णा नगर, आदि क्षेत्र में पानी के लिए त्राहि-त्राहि मरची हुई है पानी एवं विद्युत विभाग की लापरवाही के चलते ग्रामीण परेशान है लोगों ने आक्रोश व्यक्त करते हुए कहा यह मात्र सरकार को बदनाम करने का कार्य जल निगम जल संस्थान विद्युत विभाग के कर्मचारी कर रहे हैं मुख्यमंत्री का आदेश है कि किसी भी नागरिक को पानी एवं विद्युत के लिए तत्काल सुविधा मुहैया कराया जाए यहीं हाल हर क्षेत्र में है इन्होंने किया जलापूर्ति की अधिकारियों से गुजारिश किए हैं क्षेत्र के संजय श्रीवास्तव, राम जी श्रीवास्तव, महेश वर्मा, दीपक पांडेय, राम लखन विश्विकर्मा, बाबूजी यादव, सुभाष कुशवाहा, प्रदीप कुशवाहा, ऋषि उपाध्याय, मनोज तिवारी, धीरज यादव, कार्तिकेय पुरी, शशि शर्मा, चरण यादव, त्रिभुवन सिंह यादव, रघुनाथ मिश्रा समेत सैकड़ों लोगों ने जल निगम और विद्युत विभाग के प्रति आक्रोश व्यक्त करते हुए आला अधिकारियों से जलापूर्ति और विद्युत आपूर्ति सुचारू रूप से संचालित कराने की गुजारिश की है।

आयुष्मान भारत के लंबित मामलों पर डीएम की नाराजगी

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ की समीक्षा बैठक

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में बुधवार को संगम सभागार में आयुष्मान भारत योजना की समीक्षा बैठक हुई जिलाधिकारी ने आयुष्मान भारत योजना से संबंधित कार्यों के बारे में जानकारी ली उन्होंने पोर्टल पर लंबित मामलों की जानकारी ली, इस पर उन्होंने नाराजगी जताई संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किए कि इसका शीघ्रता से निस्तारण किया जाए उन्होंने आयुष्मान कार्ड के सत्यापन कार्य को शीघ्रता से कराए जाने के न्दिेश दिए बैठक में भुगतानों एवं उनकी क्वेरीज, डिडम्पैनल्ड अस्पतालों को इम्पैनल्ड करने के लिए आवश्यक बिंदुओं पर चर्चा की गई जिलाधिकरी ने आयुष्मान भारत के लाभार्थियों के इलाज एवं उनके देय भुगतानों को तुरंत दिलाने के निर्देश दिए बैठक में ए डी एम वित्तर एवं राजस्व जगदम्बा सिंह, सी एम ओ, डॉ. आशु पांडे सी एम ओ डॉ. तीरथलाल, आयुष्मान भारत के नोडल डा. राजेश कुमार समेत विभागीय अधिकारी मौजूद रहे पिछले दिनों सात निजी अस्पतालों को आयुष्मान भारत योजना से बाहर कर दिया गया था दरअसल, यह अस्तपाल 2 साल से आयुष्मान भारत योजना के मरीजों को भर्ती नहीं कर रहे थे इसके लिए कई बाहर नोटिस भी दी गई लेकिन इसका कोई असर नहीं हुआ इन अस्पतालों में महाराणा प्रताप चौराहा स्थित श्रांस रोग विशेषज्ञ डॉ. आशीष टंडन का हरिदया सुपरस्पेशियलिटी सेंटर, प्रीति स्निंग होम, गुरु गोबिंद सिंह हास्पिटल, मदनानी हास्पिटल, गीता हास्पिटल और वैष्णवी हास्पिटल के नाम शामिल हैं।

कार्यालय आदर्श ग्राम पंचायत काशिया पश्चिम विकासखंड सिराथू जनपद कौशांबी

निविदा सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत आदर्श काशिया पश्चिम विकासखंड सिराथू जनपद कौशांबी में राज्य वित्त आयोग से वर्ष 2023,2024 में गेट का निर्माण कराया जाना है जिसकी अनुमानित लागत 5 लाख रुपए प्रस्तावित है गेट की लम्बी ऊंचाई 24 फुट वा बारजा 4 फिट व चौड़ाई 24 फीट (24 ^ 28 फिट) निर्माण कराया जाना प्रस्तावित है उपरोक्त कार्य हेतु पंजीकृत फर्म ठेकेदार से निविदा आमंत्रित की जाती है दिनांक 17 जून 2023 से 24 जून 2023 तक कार्यालय ग्राम पंचायत में फर्म ठेकेदारों द्वारा निविदा फार्म जमा किया जा सकता है 26 जून 2023 को समय 2:00 बजे दोपहर फर्म और ठेकेदारों के समक्ष सार्वजनिक तरीके से निविदा खोली जाएगी निविदा स्वीकृत अस्वीकृत करने का अधिकार ग्राम पंचायत में निहित होगा निविदा की विशेष शर्तें कार्यालय दिवस में किसी भी दिन ग्राम पंचायत से प्राप्त की जा सकती है।

पंचम लाल चौधरी ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत आदर्श काशिया
पश्चिम सिराथू कौशाम्बी

सतीश चौधरी पंचायत सचिव
ग्राम पंचायत आदर्श काशिया
पश्चिम सिराथू कौशांबी

केन्द्र की मोदी सरकार ने नौ साल में ऐतिहासिक विकास कार्य किएः सांसद

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। केन्द्र सरकार ने नौ साल में ऐतिहासिक विकास कार्य किए। आज सरकार की योजनाएं समाज के अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक पहुंच रही है। कुंडा बाबागंज में भी सरकार की योजनाएं पहुंची। आज क्षेत्र की सभी प्रमुख सड़के बन गई है। करेंटी में 252 करोड़ की लागत से गंगा में पुल बन गया। 35 करोड़ की लागत से करेंटी गांव में बाईपास बनाकर मुख्य सड़क से जोड़ा जाएगा। कुंडा का पुराना बस अड्डा का निर्माण कार्य चल रहा है। कुंडा में एक साथ दो फ्लाई ओवर पास हुए। जल्द की तीसरा फ्लाई ओवर भी पास हो गया है। उसका भी टेंडर हो जाएगा।

उक्त बातें कौशाम्बी सांसद, संसदीय आचार समिति लोकसभा के चेयरमैन, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सचिव, दादरा नगर हवेली एवं दमन दीव के प्रभारी विनोद सोनकर ने

मानिकपुर में आयोजित हुआ लाभार्थी सम्मेलन, सम्मेलन में उमड़े लाभार्थी

लाभार्थी सम्मेलन में बोलते सांसद विनोद सोनकर।

गुरुवार को मानिकपुर के श्याम वाटिका में आयोजित लाभार्थी सम्मेलन में उमड़े जन समूह के बीच कार्यक्रम में आए हुए लोगों को संबोधित करते हुए कही। सांसद विनोद सोनकर ने कहा कि मानिकपुर में भाजपा का चेयरमैन चुनने के लिए सभी नगर वासियों को धन्यवाद। जिन्होंने केंद्र, प्रदेश के साथ मानिकपुर में भी भाजपा की सरकार बनाई। अब मानिकपुर में विकास कार्य में तेजी आएगी। धन्य है यह भूमि जहां पर करपात्री जी महराज, कृपालु जी महराज ने जन्म लिया। मेरे प्रस्ताव पर कृपालु जी महराज की जन्मस्थली का नाम बदलकर कृपालु धाम मनगढ़ किया गया। इसके लिए प्रदेश सरकार को विशेष धन्यवाद। प्रयागराज से रायबरेली तक फोरलेन सड़क का निर्माण कार्य प्रारंभ हुआ। यह सब हुआ आपके एक वोट की ताकत से। आपके एक वोट से कौशांबी में कमल खिलने के साथ देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों को मजबूती मिलती है। विशिष्ट अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्र ने कहा कि आपके एक वोट से कौशांबी लोकसभा में कमल खिला। विनोद सोनकर दूसरी बार चुनाव जीत कर क्षेत्र का लगातार विकास कार्य कर रहे है। आज देश की सीमाएं सुरक्षित है। अब किसी की हैसियत नहीं है कि देश की सीमाओं की ओर गलत निगाह से देख ले। यह सब हुआ है आपके एक मतदान से। कौशांबी में कमल खिलता है तो देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के हाथों को मजबूती मिलती है। 2024 में पुनः विनोद सोनकर को जीता कर भेजना है। जिससे क्षेत्र का विकास निरंतर जारी रहे। कार्यक्रम में पूर्व प्रत्याशी सिंधुजा मिश्र सेनानी, त्रिभुवन नाथ मिश्र टंडन, योगेन्द्र नाथ मिश्र मौला, पवन गौतम, सांसद मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय, पूर्व जिला महामंत्री अशोक मिश्र, जिला उपाध्यक्ष राजन मिश्र, चेयरमैन मानिकपुर चंद्र लता जायसवाल, प्रधान सूरज शुक्ल, मंडल अध्यक्ष मोनू शुक्ल, राकेश मोदनवाल, महेश सिंह फौजी, सिद्धार्थ शंकर श्रीवास्तव,सुमन साहू, आशुतोष जायसवाल डिंपू, संतोष तिवारी, सुरेश तिवारी, विजय तिवारी, सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

केन्द्र व प्रदेश सरकार के कार्यकाल पूर्ण होने पर भाजयुमो ने निकाली बाइक यात्रा

अखंड भारत संदेश

सदर विधायक ने यात्रा को किया रवाना

शहर में बाइक यात्रा निकालते भाजयुमो पदाधिकारी।

प्रतापगढ़। भारतीय जनता युवा मोर्चा प्रतापगढ़ द्वारा प्रदेश नेतृत्व के निदेर्शानुसार केन्द्र में नरेन्द्र मोदी की सरकार के 9 वर्ष के कार्यकाल पूर्ण होने तथा राज्य सरकार के 6 वर्ष का कार्यकाल पूर्ण करने के उपलक्ष्य में बाइक यात्रा का आयोजन पूरे देश भर के युवा मोर्चा द्वारा किया जा रहा है। इस यात्रा के माध्यम से केंद्र एवम राज्य सरकार के द्वारा किए गए कार्यों एवम योजनाओं की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने का कार्य युवा मोर्चा के 50 कार्यकताओं द्वारा 25 बाइक के माध्यम से जनपद के सभी सातों विधानसभा के 30 सांगठनिक मंडलों में बाइक यात्रा के माध्यम से जनता तक पहुंच कर सरकार की योजनाओ के विषय में जनता तक संवाद स्थापित करना है। मंडलों में रात्रि प्रवास कर लाभार्थियों से सम्पर्क भी स्थापित करना है। युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष अंशुमान सिंह के नेतृत्व में निकाली गई बाइक यात्रा का शुभारंभ भाजयुमो कार्यालय बाबागंज प्रतापगढ से सदर विधायक राजेंद्र मौर्य, सांसद संगम लाल गुप्ता तथा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य विमलेश पटेल द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। प्रथम दिवस की यात्रा शिवसत, दीवानगंज होते हुऐ सराय दलीय में रात्रि विश्राम होगा। फिर दुसरे दिन वहा से निकल कर 5 दिन प्रवास करेगे। मुख्य रुप से जिला महामंत्री नितीश, सुजीत, मनोज, शैलेष, मदन पाल, शुभम, अंकित सिंह बच्चा, पंकज, रोहित, अविनाश सिंह, रजनीश शुक्ल, रितेश, सर्वेश्वर, ऋषभ आदि पदाधिकारी, कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

नियमित रूप से करें योग, रहें निरोगः विधायक सदर

जिलाधिकारी ने शहीद उद्यान में योग सप्ताह दिवस का किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिलाधिकारी प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव ने शहीद उद्यान (कम्पनी गार्डेन) में 15 जून से 21 जून तक चलने वाले योग सप्ताह दिवस कार्यक्रम का दीप प्रज्जवलन कर शुभारम्भ किया। योग सप्ताह दिवस के अवसर पर विधायक सदर राजेन्द्र कुमार मौर्य, जिलाधिकारी प्रकाश चन्द्र श्रीवास्तव, नगर पालिका अध्यक्ष हरि प्रताप सिंह, जिला विकास अधिकारी ओम प्रकाश मिश्र सहित अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों व जनसामान्य ने विभिन्न योगासन किया।

योग प्रशिक्षक द्वारा योगासन की विभिन्न मुद्राएं यथा वृक्षासन, अर्धचक्रासन, त्रिकोणासन, दण्डासन, भद्रासन, वज्रासन, कपालभाति, नाड़ी शोधन, ध्यान

कम्पनी गार्डेन में योगाभ्यास करते डीएम व विधायक।

मुद्रा, भ्रामरी प्राणायाम, शलभ आसन, मकरासन, पवनमुक्तासन, भुजंगासन, शीतली प्राणायाम, उष्ट्रासन, ग्रीवा चालन, स्कन्ध संचालन, ताड़ासन इत्यादि का योगाभ्यास कराया गया एवं योग के लाभों को बारें में बताया गया। इस अवसर पर विधायक सदर ने उपस्थित लोगों से नियमित रूप से योगाभ्यास करने की अपील की। उन्होने कहा कि नियमित रूप से योग करें और निरोग रहें। योग के माध्यम से तन और मान को चुस्त-दुरूस्त एवं स्वस्थ्य रखे और दैनिक जीवन में योग का निरन्तर उपयोग करें। योग स्वस्थ जीवन जीने का एक तरीका है। योगाभ्यास के उपरान्त योग संकल्प एवं प्रार्थना भी करायी गयी। योग सप्ताह कार्यक्रम में पतंजलि परिवार, आर्ट ऑफ लीविंग का सहयोग प्राप्त हुआ। इस दौरान क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डा0 सरोज शंकर राम सहित डा0 रंगनाथ शुक्ला उपस्थित रहे। इसी प्रकार विकास खण्ड सभागार, गंगा घाट कालाकांकर, समस्त आयुष चिकित्सालय, समस्त आयुष हेल्थवेलनेश सेन्टर/योग वेलनेश सेन्टर पर योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय डडवा में हुआ योग सप्ताह का शुभारंभ

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। हर घर आंगन योग थीम के साथ गुरुवार को नौवे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस को सफल बनाने के लिए योग सप्ताह का शुभारंभ हुआ। इसी कड़ी में आयुष मंत्रालय के निर्देश पर राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय डंडवा में योग सप्ताह का शुभारंभ हुआ जो 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के दिन समाप्त होगा। राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय डडवा में गुरुवार की सुबह क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रतिनिधि गोलू तिवारी की उपस्थिति में फीता काटकर योग सप्ताह कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया, राजकीय होम्योपैथिक चिकित्सालय डंडवा के डॉक्टर रवि शंकर पांडे ने कहा कि हर किसी को योग करने की आवश्यकता है। योग प्रशिक्षक मनोज कुमार ने बताया कि योग से जहां शरीर स्वस्थ रहता है वही मन भी प्रसन्न रहता है इसलिए सरकार की मंशा के अनुरूप योग दिवस की शुरूआत योग सप्ताह से हो रही है। क्षेत्र पंचायत सदस्य प्रतिनिधि गोलू तिवारी ने कहा कि इस बार सरकार ने हर घर आंगन योग थीम के साथ सभी लोगों को योग करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। इस अवसर पर रमजान अली विजय कुमार शोभा देवी, सुनीता, अंकित राजपूत, रमेश, करुणेश सहित 2 दर्जन से अधिक लोग मौजूद रहे।

जिले में सकुशल सम्पन्न हुई बीएड प्रवेश परीक्षा

परीक्षार्थी का प्रवेश पत्र चेक करते शिक्षकगण।

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश संयुक्त बीएड प्रवेश परीक्षा 2023-24 जिले में सकुशल सम्पन्न हुई। नगर के राजकीय बालिका इंटर कॉलेज प्रतापगढ़ में गरिमा श्रीवास्तव प्रधानाचार्य गीता उप प्रधानाचार्य कुशल नेतृत्व में 2 पालियों में सकुशल संपन्न हुई। पर्यवेक्षक के रुप में डॉक्टर भोपाल सिंह, वरिष्ठ प्राध्यापक पीबी डिग्री कॉलेज प्रतापगढ़ एवं डॉ सीमा त्रिपाठी वरिष्ठ प्राध्यापक हेमवती नंदन बहुगुणा डिग्री कॉलेज लालगंज स्टैटिक मजिस्ट्रेट के रूप में देवेंद्र कुमार सिंह अधिशासी अभियंता अंतू प्रतापगढ़ रहे। केंद्र प्रतिनिधि के रूप में खंड विकास अधिकारी सदर निशा तिवारी प्रतापगढ़ रहे। परीक्षा सहयोगी के रुप में डॉक्टर मोहम्मद अनीश, डॉ कल्पना एवं मंजू कुशवाहा एवं उमर जमील, राजेश यादव आदि रहे। केंद्र पर पंजीकृत परीक्षार्थी 350 रहे। अनुपस्थित परीक्षार्थी 28 रहे। केंद्र का निरीक्षण त्रिभुवन वर्मा अपर जिला अधिकारी प्रतापगढ़ तथा करिश्मा गुप्ता सीओ सिटी डॉक्टर संतोष कुमार पांडे एवं डॉक्टर पीके सिंह प्रतिनिधि एवं कोऑर्डिनेटर बुंदेलखंड विश्वविद्यालय झांसी ने किया। परीक्षा सकुशल शांतिपूर्ण एवं नकल विहीन संपन्न हुई।

44 रक्तदानियों को मेडिकल कॉलेज ने किया सम्मानित

40 संस्थाओं और 4 डोनर को दिया गया स्मृति चिन्ह और सर्टिफिकेट

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। स्वैच्छिक रक्तदान कर दूसरे का जीवन बचाने में लगे 40 सामाजिक संस्थान और 4 दानियों को विश्व रक्तदान दिवस पर डाक्टर सोने लाल पटेल स्वशासी मेडिकल कॉलेज ने समारोह आयोजित कर सम्मानित किया है।

राजा प्रताप बहादुर अस्पताल में आयोजित सम्मान समारोह में सबसे अधिक ब्लड डोनेट करने वाले भोला सिंह, लोको पायलट संजय पाण्डेय, अनीता केसरवानी के अलावा रोटरी क्लब प्रतापगढ़ सेंट्रल, रामलीला समिति सहित 40 संस्थाओं को मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ सुरेश सिंह, वरिष्ठ फिजिशियन डाक्टर मनोज खत्री और पैथोलॉजिस्ट दीपिका केसरवानी ने स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया।

इस मौके पर अधीक्षक डॉ सुरेश सिंह ने कहा कि रक्तदान से बड़ा कोई दान नहीं है। जो अपना खून देकर दूसरे की जान को बचाने का काम कर रहे हैं। उनकी जितनी तारीफ की जाय कम है। डाक्टर खत्री ने कहा कि रक्तदान से शरीर कमजोर नहीं होता है। पहले से और स्वस्थ हो जाता हैं। रक्तदान करते रहना चाहिए। इस मौके पर नंदन भट्ट, रश्मि, अश्वनी केसरवानी, शरद केसरवानी, विजय यादव समेत कई लोग मौजूद थे।

मोहल्ला क्लीनिंग की तरह कार्य करेंगे नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र

नगर प्रा0स्वा0 केन्द्र मीरा भवन का हुआ उद्घाटन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगरीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मीराभवन का आज गुरुवार को नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने फीता काटकर उद्घाटन किया। इस अवसर पर नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह ने कहा कि प्रदेष सरकार की सोच के अनुरुप शहर में अब मोहल्ला क्लीनिंग की तरह यह नगरीय स्वास्थ्य केन्द्र के रुप में कार्य करेंगे।

इसके पहले अजीत नगर में नगदीय स्वास्थ्य केन्द्र पहले से कार्य कर रहा है। पूरे शहर को चार भागों में बांटकर अब चार नगरीय क्षेत्र बनाने की योजना है जिससे लोगों को अब स्वास्थ्य के लिये भागना नहीं पड़ेगा। इस अवसर पर मौजूद मुख्य चिकित्साधिकारी जीएम शुक्ला ने कहा कि नगरीय स्वास्थ्य केन्द्र पर दवाआं की कोई कमी नहीं है। यह अस्पताल 24 घंटे कार्य करेगा। यहां ओपीडी भी चलेगा। यहां ओपीडी का समय प्रातः नौ बजे से शाम पांच बजे तक होगा। इस अवसर पर सभासद सुनील दुबे, डा0 रवि मौर्य, डा0 आरपी जीबी, आकाष दीप, संतोष श्रीवास्तव एवं अन्य स्टाफ नर्स मौजूद रहीं।

नगर पालिकाध्यक्ष हरिप्रताप सिंह का स्वागत करते सीएमओ जीएम शुक्ला

महामाया धाम में आज होगा भण्डारा

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्र के धारूपुर गौखाड़ी में आज शुक्रवार को महामाया स्थापना उत्सव को लेकर भण्डारे का आयोजन किया गया है। उक्त जानकारी देते हुए कार्यक्रम के संयोजक डा. जगदीश प्रसाद द्विवेदी ने बताया कि जय श्री महामाया धाम परिसर में भण्डारे से पूर्व चण्डी पाठ एवं पूणार्हुति हवन में भी श्रद्धालु शामिल होंगे।

जीआरपी थाने के पीछे मिला सिपाही का शव, मचा कोहराम

रात पहरे की ड्यूटी करने थाने गया था सिपाही

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। रात पहरे की ड्यूटी पर आए जीआरपी सिपाही का शव थाने के पीछे सड़क पर मिला। जिससे हड़कंप मच गया। सूचना घर पहुंची तो कोहराम मच गया। गोंडा जिले के रहने वाले अजीत सिंह (52) प्रतापगढ़ जीआरपी में बतौर सिपाही तैनात थे। उधर सिपाही के शव को एसपी सतपाल अंतिल ने कंधा दिया।

बताया जाता है कि बीती रात तीन बजे से उनकी थाने पर पहरे में ड्यूटी थी। कालोनी स्थित क्वार्टर से ड्यूटी करने थाने पहुंचे। सूत्र बताते हैं कि थाने आने के बाद वह बाहर निकल गए। कुछ देर बाद राहगीरों ने थाने पर आकर बताया कि पीछे वाली सड़क पर वर्दी में कोई सिपाही पड़ा है। सूचना मिलते ही पुलिसकर्मी भागते हुए मौके पर पहुंचे। वहां अजीत सिंह सड़क पर पड़े थे। उन्हें आनन फानन में राजा प्रताप बहादुर अस्पताल ले जाया गया। वहां पर डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। जानकारी मिलते ही थाने पर हड़कंप मच गया। साथी सिपाही रोना शुरू कर दिए। एसओ ने फौरन इसकी सूचना अजीत के घर वालों को दी।

सिपाही के शव को कंधा देते एसपी सतपाल अंतिल।

मौत की खबर मिलते ही मातम छा गया। एसओ ने बताया है कि अजीत कालोनी स्थित क्वार्टर में रहते थे। रात में तीन बजे से उनकी पहरा ड्यूटी थी। पीछे वाली सड़क पर वे गिरे मिले थे। अस्पताल ले जाया गया। डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। थाने के लोगों का कहना है कि अजीत को पेट दर्द था। बुधवार को उन्होंने दवा ली थी। हार्ट अटैक की चर्चा हो रही है। हालांकि पोस्टमार्टम के बाद ही मौत के सही रहस्य का पता चलेगा। एसओ ने बताया कि परिजन आ गए हैं। शव को पुलिस लाइन ले जाया जाएगा।

अस्पताल में डाक्टरों ने मृत घोषित किया, परिजनों का रो रोकर बुरा हाल

भाजपा संयुक्त मोर्चा की बैठक में पीएम मोदी के नौ साल की गिनाई उपलब्धियां

पट्टी, प्रतापगढ़। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सरकार के 9 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में ब्लॉक सभागार आसपुर देवसरा में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सरकार की उपलब्धियों को गिनाया गया। पट्टी नगर अध्यक्ष अशोक जायसवाल ने सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए अन्य सियासी दलों को आड़े हाथों लिया। भारतीय जनता पार्टी मोर्चा प्रतापगढ़ के तत्वावधान में आयोजित 9 साल सेवा सुशासन और गरीब कल्याण के लिए पीएम मोदी के पूरे होने पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मारपीट की घटना में घायल महिला की इलाज के दौरान मौत

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। मकान के किराये के विवाद में मारपीट मे घायल महिला सरलेश 36 की इलाज के दौरान बुधवार को मौत हो गयी। घटना में मृतका के बेटे की तहरीर पर पुलिस ने चार आरोपियो के खिलाफ सुसंगत गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। वहीं बुधवार की देर रात ही पुलिस ने मृतका के शव को पीएम के लिए जिला अस्पताल भेजवा दिया।

गुरूवार को मृतका के शव का जिला अस्पताल में पीएम कराया गया। लालगंज कोतवाली के रानीगंज कैथौला चैकी के अर्न्तगत रानीगंज कैथौला बाजार के निवासी कमलेश की पत्नी सरलेश बीती दस जून को मारपीट की घटना में चुटहिल हो गयी थी। एक निजी अस्पताल मे इलाज के दौरान बुधवार को घायल महिला की सांसे थम गयी। परिजन शव को लालगंज निवासी मृतका के देवर मिथलेश जायसवाल के घर लेकर पहुंचे तो परिजनों मे कोहराम मच गया। देर शाम मृतका के पुत्र हिमांशु जायसवाल ने पुलिस को तहरीर सौपी। तहरीर में मृतका के बेटे ने कहा है कि दस जून को सुबह ग्यारह बजे बाजार में स्थित उसके मकान के किराये के विवाद को लेकर जगन्नाथपुर निवासी इंद्र बहादुर के पुत्र राकेश सिंह तथा अरूणेश सिंह उर्फ लाल साहब सिंह पुत्र राकेश सिंह एवं लखनसेनपुर निवासी अरूण सिंह पुत्र श्याम सिंह तथा इसी गांव के अनुराग सिंह ने मकान के किराये के विवाद को लेकर उसकी मां सरलेश को मारापीटा। आरोपियो ने गाली देते हुए मृतका को सड़क पर पटक दिया। बीचबचाव को पहुंची उसकी मौसी पूर्णिमा जायसवाल के साथ भी आरोपियो ने मारपीट की। शिकायत करने पर आरोपियो ने जानलेवा धमकी भी दी। इलाज के दौरान घटना में घायल सरलेश की बुधवार को मौत हो गयी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने राकेश सिंह समेत चार के खिलाफ बुधवार की देर रात गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। सूत्रों के मुताबिक मृतका के पति का रानीगंज कैथौला बाजार में नेशनल हाइवे पर एक मकान है। इसमें आरोपियों मे से एक ने कई साल से मेडिकल स्टोर खोल रखा था। मृतका के परिजन आरोपी से दुकान खाली करने की कई बार मांग कर चुके थे। दस जून को किराये के विवाद को लेकर मारपीट की घटना हो गयी। हालांकि मृतका की मौत के बाद आरोपियो के परिजनों ने गुरूवार को कमरा खाली कर दिया। प्रभारी निरीक्षक कमलेश पाल का कहना है कि तहरीर के आधार पर केस दर्ज किया गया है, जांच कर कार्रवाई की जाएगी। इधर गुरूवार को ही दोपहर बाद मृतका के परिजनों ने सरलेश का अंतिम संस्कार कर दिया। मृतका अपने पीछे पुत्र हिमांशु 22 व प्रियांशू 20 को छोड़ गयी है। मृतका का पति कमलेश सब्जी का व्यवसाय किया करता है।

जंक्शन पर मौत बनकर उड़ी चद्दर खाक हुई, टला हादसा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। स्थानीय रेलवे जंक्शन पर गुरुवार की दोपहर प्लेटफार्म तीन के शेड पर लगी लोहे की चद्दर हवा में उड़कर बिजली के तारों(ओची) से टकराते ही स्वाहा हो गई। उसका कुछ हिस्सा प्लेटफार्म के ट्रैक पर जाकर गिरा। संयोग था कि उस समय प्लेटफार्म पर कोई ट्रेन नहीं थी। वरना मुसाफिर करंट की चपेट में आ सकते थे। एक बड़ा हादसा टल गया। इस मामले में बड़ी लापरवाही उजागिर हुई है। जिसकी लीपापोती में जिम्मेदार जुट गए हैं। वे एक दूसरे पर इसका दोष मढ़ रहे हैं। घटना दोपहर की बात है। तेज हवा चलने से प्लेटफार्म शेड की लोहे चद्दरों में से एक उड़ गई और बगल से गुजरी उच्च क्षमता वाले ओची के तारों से जाकर चिपक गई। पलक झपकते ही चद्दर जलने लगी। सूचना मिलते ही हड़कंप मच गया। जल्दी से ओची लाइन को बंद किया गया। बताया जाता है कि चद्दर को सही ढंग से नहीं लगाया गया था। ढीली होने से उड़ गई। यह यात्रियों पर गिरती तो क्या होता। इसका अनुमान लगाया जा सकता है। इस बारे में मुख्य कार्य निरीक्षक का कहना है कि टीआरडी वाले चद्दर ठीक ढंग से नहीं लगाए थे। हवा में उड़ कर बिजली के तारों से टकरा गई थी।

खबर संक्षेप

भैंस वा उसका बच्चा खोल ले गए चोर

करारी कौशाम्बी करारी थाना क्षेत्र के बल्लोपुर गांव से बीती रात भैस वा उसका बच्चा पड़िया को चोर खोल कर उठा ले गए हैं मामले की जानकारी परिजनों को आधी रात को हुई तो उन्होंने भैस वा पड़िया को खोजने का प्रयास किया लेकिन काफी खोजने के बाद भैंस और उसका बच्चा पड़िया का पता नहीं चल सका है जानकारी के मुताबिक बल्लोपुर गांव की सरिता देवी पत्नी रज्जू पासी की भैस वा पड़िया उसके घर के बाहर बंधी थी आधी रात को गांव पहुंचे अज्ञात चोर उसकी भैंस और पड़िया को खोल ले गए हैं पीड़ित महिला ने मामले की सूचना करारी थाना पुलिस को दिया है

गैंगेस्टर एक्ट का वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा मुखबिर खास की सूचना पर गैंगेस्टर एक्ट से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त मो0 सलीम उर्फ लल्लू पुत्र जफर अम्बास निवासी हुजरा मजरा अम्बाई बुजुर्ग थाना कड़ाधाम को भोला चौराहा सौरई बुजुर्ग से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है

दहेज न मिलने पर विवाहिता की गला घोटकर कर दी हत्या

अखंड भारत संदेश

दहेज की डिमांड को लेकर कई बार बिरादरी रिश्तेदारों के बीच पंचायत होने के बाद भी दहेज लोभियों की डिमांड नहीं हुई कम

करारी कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र के पीपर कुंडी गांव के संजीव कुमार पासी ने अपनी लड़की आसमा देवी उम्र 22 वर्ष की शादी इसी थाना क्षेत्र के महराजगंज के मजरा एकौरा निवासी सुनील कुमार पासी पुत्र रामलखन के साथ 28 फरवरी 2020 को हिंदू रीति रिवाज से किया था शादी के बाद ससुराली जनों द्वारा दहेज की डिमांड शुरू कर दी गई और आए दिन ससुराली जनों द्वारा विवाहिता आसमा के साथ मारपीट गाली-गलौज उत्पीड़न किया जाता रहा बार बार विवाहिता के साथ मारपीट भी किया गया मारपीट की घटनाओं के बाद विवाहिता ने अपने माता-पिता को घटना की जानकारी दी जिस पर विवाहिता के माता-पिता बिरादरी और रिश्तेदारों को इकट्ठा कर बेटी के ससुराल पहुंचे और पंचायत की पंचायत में ससुरालियों ने दहेज की डिमांड और बेटी के साथ मारपीट ना करने की कसम खाई लेकिन उसके बाद फिर विवाहिता के साथ मारपीट शुरू हो गई बीती रात विवाहिता आसमा की गला घोट कर हत्या कर दी गई है और साक्ष्य नष्ट करने के उद्देश्य से छप्पर के बॉस से लाश को ससुरालियों ने बांध दिया है मामले की सूचना जैसे ही विवाहिता के मायके पहुंची रोते बिलखते परिजन घटनास्थल पर पहुंच गए हैं मामले की लिखित तहरीर विवाहिता की मां सुशीला देवी ने करारी थाना पुलिस को तहरीर देकर ससुराली जनों पर हत्या का मुकदमा दर्ज कराने और हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग की है सूचना मिलने के बाद घटनास्थल पर पहुंची करारी थाना पुलिस ने विवाहिता के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

सरकारी धन का दुरुपयोग कर मालामाल हो रहे ग्राम प्रधान और सचिव!

अखंड भारत संदेश

फोटो छपास मजदूरों के खाते में मनरेगा मजदूरी के नाम पर भेजी जा चुकी है लाखों रुपए की धनराशि

कौशाम्बी। विकास खंड नेवादा क्षेत्र के बरियावा गांव में सरकारी धन का दुरुपयोग कर मालामाल हो रहे ग्राम प्रधान और सचिव। ग्राम प्रधान और सचिव ऐसे लोगों को योजना का लाभ दे रहे हैं जो सही मायने में पात्र नहीं हैं लेकिन दस्तावेजों में हेराफेरी कर अपात्र लोगों तक योजना का लाभ पहुंचाया जा रहा है। ग्राम प्रधान और सचिव के कारनामे पर रोक लगाकर दंडित कराए जाने की मांग ग्रामीणों ने उच्चाधिकारी से की है। इस गांव में विकास कार्य के नाम पर सरकारी धन का जमकर बंदर बाट किया गया है। ईमानदार अधिकारियों के द्वारा सूक्ष्म जांच कराई गई तो सरकारी धन का दुरुपयोग कर तिजोरी भरने वाले ग्राम प्रधान और सचिव के साथ गलत तरीके से योजना का लाभ लेने वाले लोगों का जेल जाना तय माना जा रहा है। और तो और बरियावा गांव में फोटो छपास मजदूरों के खाते में लाखों रुपए की धन राशि भेजकर जिम्मेदारों ने जमकर लूट खसोट किया है। फोटो छपास मजदूरों के खाते में भेजे गए रुपए में कितने लोग सम्मिलित हैं जांच बाद ही खुलासा होगा। बरियावा गांव में ऐसे लोगों के खाते में लाखों रुपए मनरेगा मजदूरी की धनराशि भेजी जा चुकी है जो सिर्फ फोटो छपास तक सीमित रहे हैं और कभी भी मजदूरी करने के लिए कहीं नही गए फिर भी घर बैठे उनके खाते में ग्राम प्रधान और सचिव के मिलीभगत से मनरेगा मजदूरी की रकम भेजी जा रही है। स्थानीय लोगों ने ग्राम प्रधान और सचिव के कारनामें की जांच कराकर दंडित कराए जाने की मांग कर रहे हैं।

न्यूज झरोखा

योग सप्ताह के अन्तर्गत योग कार्यक्रम का हुआ शुभारम्भ

कौशाम्बी। शासन के निदेर्शानुसार योग सप्ताह (15 जून से 21 जून तक) एवं 09वॉ अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाये जाने के निर्देश दिये गये है। योग सप्ताह के अन्तर्गत जनपद के समस्त विकास खण्डों, नगर पालिका परिषद/नगर पंचायतों एवं अन्य स्थानों पर योग कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया बौद्ध वाटिका, कलेक्ट्रेट में आयोजित योग कार्यक्रम में जिलाधिकारी श्री सुजीत कुमार, मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 सुष्पेन्द्र कुमार, प्रभागीय वनाधिकारी आर0एस0 यादव एवं जिला बेसिक शिक्षाधिकारी श्री प्रकाश सिंह सहित अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण तथा गणमान्य व्यक्तियों ने प्रतिभाग किया।

हत्या के दो वांछित अभियुक्त किये गए गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना सैनी अंतर्गत 12 जून 2023 को अभियुक्त द्वारा मृतक जबरनाथ साहू पुत्र श्रीप्रसाद निवासी हिसामपुर माढो थाना सैनी की असराय अन्डरपास के पास ग्राम असराय में पुरानी रंजिश के चलते मार-पीट कर हत्या कर दी गयी थी, जिसके सम्बन्ध में थाना सैनी पर (वादी मुकदमा के बयान व साक्ष्य संकलन के आधार पर पंजीकृत कर थाना सैनी पुलिस बल द्वारा मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त रोहित यादव पुत्र स्व0 रामविशाल निवासी हिसामपुर माढ़ो थाना सैनी को घटना में प्रयुक्त आलाकत्ल को बरामद करते हुए सकूरा चौराहा जहानाबाद जनपद फतेहपुर देशी शराब ठेके के पास से गिरफ्तार कर अभियुक्त उपरोक्त से पूछताछ करने पर घटना में शामिल प्रकाश में आया वांछित अभियुक्त राजेन्द्र पुत्र छंगू निवासी हिसामपुर माढो थाना को हिसामपुर माढो गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्तों को न्यायालय भेज दिया है

गंगा किनारे मिला अधेड़ का शव

कोखराज कौशाम्बी सांदीपन घाट थाना क्षेत्र के उजिहनी खालसा गांव के पास गंगा नदी के किनारे एक व्यक्ति की लाश मिली है लाश की जानकारी मिलते ही मौके पर तमाम ग्रामीणों की भीड़ लग गई ग्राम प्रधान के भाई मोहम्मद साकिब ने थाना पुलिस को सूचना दिया है सूचना मिलने पर पुलिस फोर्स के साथ थानाध्यक्ष घटनास्थल पर पहुंचे हैं और मृतक की शिनाख्त कराने का प्रयास किया है लेकिन भीड़ में मौजूद कोई भी व्यक्ति मृतक की शिनाख्त नहीं कर सका है पुलिस ने शव का निरीक्षण करने के बाद उसे कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है मृतक के दाहिने हाथ में माधव सेन नाम लिखा हुआ है वह पीले रंग की टीशर्ट व कत्थई रंग के अंडरवियर पहने हुए हैं मृतक की उम्र लगभग 55 वर्ष बताई जाती है मृतक कहां का रहने वाला है गंगा किनारे तक वहां कैसे पहुंचा उसकी मौत कैसे हुई है यह सब रहस्य बना रह गया है

भीषण गर्मी में प्यास से व्याकुल राष्ट्रीय पक्षी मोर की मौत

करारी कौशाम्बी करारी थाना क्षेत्र के गुवारा के अंदर और बाहर गांवों में कहीं भी तालाबों में पानी नहीं है जिससे पशु-पक्षी अपनी प्यास बुझा सकें। तापमान इतना अधिक हो रहा है कि पशु पक्षी तो क्या आम आदमी का बुरा हाल है। प्यास से व्याकुल राष्ट्रीय पक्षी मोर गाँव के बाहर भईला गुवारा रोड के पास मृत मिली। कस्बे के लोगों ने मृत हुई मोर के बारे में हल्का इंचार्ज अतुल श्रीवास्तव को जानकारी दी तो वो कुछ ही देर में मौके पर अपने हमराहियों के साथ पहुच गए और फिर लोगो के साथ मिलकर अंतिम संस्कार कराया। इस मौके पर कांस्टेबल राज कुमार ,कांस्टेबल योगेश कुमार चौधरी ,रामअभिलाष, ब्रम्भा, आयुष,राघवेंद्र, अमर सिंह, बड़कू, भूपेंद्र आदि लोग मौजूद रहे।

शराब के साथ तीन अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में चलाए जा रहे अवैध शराब के निर्माण एंव तस्करी के विरुद्ध अलग अलग थानो की पुलिस बल द्वारा तीन अभियुक्तों को गिरफ्तार करते हुए कब्जे से 30 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्तों का चालान न्यायालय कर दिया है जानकारी के मुताबिक थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा अभियुक्त कल्लू पटेल पुत्र स्व0 बनवारी लाल निवासी सरसौल थाना कोखराज को 10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना संदीपनघाट पुलिस बल द्वारा अभियुक्ता मालती देवी पत्नी फूलचन्द्र निवासी पैगम्बरपुर थाना संदीपनघाट को 10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्ता का चालान न्यायालय कर दिया है इसी प्रकार थाना कडाधाम पुलिस बल द्वारा अभियुक्ता रीता देवी पत्नी रमेश कुमार निवासी निहोरा थाना कड़ाधाम को 10 लीटर अवैध कच्ची शराब के साथ गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्ता का चालान न्यायालय कर दिया है।

चेकिंग के दौरान की गई कार्यवाही

कौशाम्बी जनपद में चलाये जा रहे यातायात से सम्बन्धित अभियान के क्रम में जनपद स्तर पर विभिन्न थानों व यातायात पुलिस द्वारा यातायात नियमों का पालन न करने वालों के विरुद्ध सघन चेकिंग की गई एंव चेकिंग के दौरान दो पहिया व चार पहिया वाहनों को चेक किया गया जिसमे यातायात नियमों का उल्लघन करने वाले 163 वाहनों का ई-चालान किया गया।

सड़क पार कर रही महिला को ट्रक ने कुचला दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेश

महेवा घाट थाना क्षेत्र में गुरुवार की भोर में हुए हादसे की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंचे सैकड़ों ग्रामीण

कौशाम्बी। महेवाघाट थाना क्षेत्र में गुरुवार की भोर में सड़क पार कर रही एक महिला को तेज रफ्तार ट्रक ने कुचल दिया है जिससे महिला की मौके पर दर्दनाक मौत हो गई है मौत की जानकारी मिलने पर गांव के सैकड़ो लोग घटनास्थल पर पहुंचे हैं मामले की सूचना पाकर मृतक महिला के परिजन भी रोते बिलखते घटनास्थल पर पहुंच गए हैं मामले की सूचना स्थानीय थाना पुलिस को दी गई है सूचना पाकर स्थानीय थाना पुलिस घटनास्थल पर पहुंची है पुलिस ने मृतक महिला के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है परिवार में कोहराम मचा हुआ है जिले में तेज रफ्तार का कहर फिर देखने को मिला है सड़क पार कर रही महिला को कुचल देने के बाद ट्रक चालक ट्रक सहित फरार होने में कामयाब हो गया है घटना के दौरान ट्रक का नंबर प्लेट महिला के कपड़ो में फंसकर गिर गया,जिससे ट्रक का नंबर पता चल गया, घटना क्रम के मुताबिक महेवाघाट थाना क्षेत्र के गरौली गांव निवासी सुमित्रा देवी उम्र लगभग 50 वर्ष पत्नी गणेश प्रसाद विश्वकर्मा गुरुवार की सुबह भोर में सड़क पार कर शौच के लिए खेत की ओर जा रही थी जैसे ही महिला सड़क पर पहुंची तभी एक तेज रफ्तार ट्रक नम्बर वढ 32ब्द्ध 2120 ने उसे कुचल दिया महिला को कुचलने के बाद ट्रक चालक ट्रक सहित फरार हो गया है घटनास्थल पर तड़प तड़प कर महिला की दर्दनाक मौत हो गई सड़क पर चारों ओर खून बिखर गया हादसे में महिला की मौत की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर सैकड़ों ग्रामीण पहुंच गए हैं महिला के परिजन भी रोते बिलखते घटनास्थल पहुंच गए हैं घटनास्थल पर कोहराम मचा हुआ है मृतका के पति ने पुलिस को घटना की लिखित सूचना दी है। महेवाघाट थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है खबर लिखे जाने तक पुलिस ट्रक को अपने कब्जे में नहीं ले सकी है

सड़क पर पलटी अनियंत्रित डीसीएम

अखंड भारत संदेश

चालक और खलासी हुए घायल

अझुवा कौशाम्बी कानपुर से पटना जा रहा डीसीएम सैनी कोतवाली क्षेत्र के अझुवा के ससुर खदेरी नदी पुल के पास अनियंत्रित होकर पलट गया है डीसीएम पलट जाने से चालक और कन्डेक्टर वाहन में फंस गए और घायल हो गये हादसे की जानकारी मिलते ही आसपास के लोग मौके पर पहुंचे मामले की सूचना पुलिस को दी गई मौके पर पहुंची पुलिस ने डीसीएम को सीधा करके उसमें फंसे चालक और खलासी को बाहर निकाला है। और घायलों को इलाज के लिए अस्पताल भेजा है घटनाक्रम के मुताबिक सनिगवां रोड चंदन नगर कानपुर निवासी विकास निषाद पुत्र पुत्ती लाल और कन्डेक्टर बिहारी पुत्र राजकुमार डीसीएम लेकर कानपुर से पटना जा रहे थे जैसे ही डीसीएम सैनी कोतवाली क्षेत्र के अझुवा ससुर खदेरी नदी पुल के पास पहुँची अनियंत्रित होकर पलट गया है जिससे चालक व कंडक्टर वाहन में फंस गए हादसे में चालक और कंडक्टर को चोटें आयीं हैं। मामले की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर स्थानीय पुलिस पहुंची है और वाहन में फंसे घायलों को बाहर निकालकर इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है।

कांटेनर चालक ट्रेलर में पीछे से भिड़ा, कंटेनर चालक घायल

अझुवा कौशांबी सैनी कोतवाली के नेशनल हाईवे अझुवा कस्बे भोला चौराहे में आगे जा रहे ट्रेलर में पीछे से कांटेनर चालक भिड़ गया। हादसे में कंटेनर चालक घायल हो गया है घटना की सूचना पर पहुंचे चौकी इंचार्ज अझुवा ने घायल को सीएचसी सिराथू भेजा चालक की हालत गंभीर होने पर डाक्टरों ने उसे जिला अस्पताल रिफर कर दिया है। घटनाक्रम के मुताबिक कलकत्ता से दिल्ली जा रहा कांटेनर चालक गुरुवार की भोर 4 बजे आगे जा रहे ट्रेलर से भिड़ गया जिसमें कांटेनर चालक सैरूल पुत्र अशरफ ग्राम पहाड़ीपुर राजस्थान घायल हो गया । घटना की सूचना पर पहुंचे चौकी इंचार्ज अझुवा अरुण कुमार मौर्य ने घायल चालक को एम्बुलेंस के माध्यम से सीएचसी सिराथू भिजवाया। जहां डाक्टरों ने गम्भीर हालत को देखते हुए उसे जिला अस्पताल रिफर कर दिया।

आखिर क्या साबित करना चाहते हैं अधिकारी...

भ्रष्टाचार में लिप्त पंचायत सचिव का निलंबन फिर उसी गांव में बहाली!

निलंबित स्थान पर दोबारा चार्ज दिए जाने पर शासन की रोक के बावजूद शासन का फरमान मानने को तैयार नहीं है अधिकारी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री से अपने को कौशांबी जिले के जिला विकास अधिकारी और डीपीआरओ बड़ा मानने लगे हैं उत्तर प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आदेश निर्देश जिला पंचायत राज अधिकारी बाल गोविंद श्रीवास्तव और जिला विकास अधिकारी विजय कुमार के ठेंगे पर है दर्जनों पंचायत सचिव का निलम्बन उसके बाद गलत तरीके से उनकी बहाली दोनो विभाग की परंपरा बन चुकी है जिला विकास अधिकारी विजय कुमार और डीपीआरओ बाल गोविंद श्रीवास्तव उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को कुछ नहीं समझते हैं वह सब कुछ मनमानी तौर तरीके से करना चाहते हैं तानाशाह इन दोनों अधिकारियों के कारनामों पर रोक लगाने में आला अधिकारी भी बिफल साबित हो चुके हैं।

गौरतलब है कि कौशांबी जिले में पंचायती राज विभाग में कानून का राज नहीं रह गया है जिला विकास अधिकारी और डीपीआरओ की तानाशाही खुलेआम चल रही है बीते तीन-चार वर्षों से इन दोनों कार्यालयों में खुलेआम कानून नियमों की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं ग्राम पंचायतों के विकास के लिए मिलने वाली रकम में ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव मिलकर बड़ा भ्रष्टाचार कर मालामाल हो रहे हैं सैकड़ों ग्राम पंचायतों की शिकायतें हुई दर्जनों ग्राम पंचायतों के जिम्मेदारों पर आरोपों की पुष्टि हुई लेकिन कार्रवाई के नाम पर नतीजा शून्य रहा या तो पहले ले देकर उन्हें संरक्षण दिया जाता रहा या फिर निलंबन के बाद वसूली करके उन्हें बहाल कर फिर संरक्षण दिया जाना शुरू कर दिया गया है बताया जाता है कि ग्राम पंचायतों के भ्रष्टाचार में पंचायत सचिव से हिस्सेदारी कर आला अधिकारी नियम विरुद्ध तरीके से काम करने में अपना गर्व समझ रहे हैं जिससे पंचायत विभाग का खजाना बेखौफ तरीके से ग्राम प्रधान पंचायत सचिव एडीओ पंचायत के साथ मिलकर बेखौफ तरीके से लूट रहे है चचार्ओं पर जाए तो जिला पंचायत राज अधिकारी बाल गोविंद श्रीवास्तव के कार्यकाल में सैकड़ों करोड़ के घोटाले करने में विभिन्न ग्राम पंचायतों के पंचायत सचिव और ग्राम प्रधान सफल हो चुके हैं जिन पर कार्यवाही के नाम पर जिला पंचायत राज अधिकारी पूरी तरह से विफल साबित हुए हैं सैकड़ों करोड़ के घोटाले होने के बाद जिला पंचायत राज अधिकारी मौज मस्ती की डफली बजा रहे हैं और मुख्य विकास अधिकारी भी जिला पंचायत राज अधिकारी के अनुशासनहीनता और लापरवाही पर मामले को संज्ञान लेकर मुख्यमंत्री को अवगत कराने का प्रयास नहीं कर रहे हैं यही स्थिति जिला विकास अधिकारी विजय कुमार की है उनके कार्यकाल में भी कई पंचायत सचिव पर भ्रष्टाचार का बड़ा आरोप लगा है कुछ का निलंबन किया गया है और तमाम आरोप लगने के बाद समान पंचायत सचिव को संरक्षण देकर उन्हें निलंबित होने से बचा लिया गया है और जिन्हें पहले निलंबित किया गया उनसे भ्रष्टाचार की रकम जमा कराने के पूर्व फोन में तमाम भ्रष्टाचारियों को गलत तरीके से बहाल कर दिया गया है जिला पंचायत राज अधिकारी बाल गोविंद श्रीवास्तव और जिला विकास अधिकारी विजय कुमार के गुनाहों की पत्रावली खोल कर यदि मुख्यमंत्री ने जांच कराई तो उनका निलंबन कम पड़ जाएगा बल्कि इन्हें बर्खास्त कर पूरी जिंदगी जेल में काटनी पड़ेगी लेकिन उसके बाद भी जिला पंचायत राज अधिकारी और जिला विकास अधिकारी के भ्रष्टाचार को मुख्य विकास अधिकारी ने संज्ञान नहीं लिया है ताजा मामला सिराथू विकासखंड के ग्राम पंचायत ककोढा का है अर्चना सरोज सतीश चौधरी विपुल मौर्या सहित तमाम पंचायत सचिव इसके उदाहरण हैं ग्राम पंचायत ककोढा में पूर्व में पंचायत सचिव विपुल मौर्या ने तैनाती के दौरान शवदाह गृह निर्माण और सामुदायिक शौचालय बनाने में बड़ी धांधली की थी बार-बार ग्रामीणों की शिकायत के बाद बड़ी मुश्किल से जांच हुई जांच में पंचायत सचिव दोषी पाए गए आला अधिकारियों के निर्देश के बाद बड़ी मुश्किल में पंचायत सचिव को अधिकारियों ने निलंबन का रास्ता दिखा दिया लेकिन कुछ दिन नहीं बीता कि भ्रष्टाचार में लिप्त पंचायत सचिव विपुल मौर्या को फिर चार्ज दिए जाने की चर्चा जोरों पर है आखिर भ्रष्टाचार में लिप्त पंचायत सचिव से अधिकारियों के क्या रिश्ते हैं भ्रष्टाचार की जांच कराकर दोषियों को दंडित करने उन्हें बर्खास्त करने जेल भेजने की कार्रवाई करने के बजाय उन्हें महिमामंडित कर अधिकारी क्या साबित करना चाहते हैं जिस गांव में निलंबन किया गया है फिर बहाल करने के बाद उस गांव में दोबारा तैनाती दिए जाने पर पूरी तरह से शासन ने रोक लगा रखी है लेकिन शासन के निर्देश पंचायत विभाग के अधिकारियों के बलाए ठेंगे पर है ।

निरोधात्मक कार्यवाही में 15 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में अपराध के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में धाना करारी से एक थाना पश्चिम शरीरा से एक थाना कौशाम्बी से एक थाना पिपरी से दो थाना सदीपनघाट से छः थाना कोखराज से चार कुल 15 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त अटल सिंह उर्फ आर्यन पुत्र दिलीप कुमार निवासी मेडीपुर थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस बल वारंटी अभियुक्त सलमान पुत्र महमूदुल हसन निवासी बरीपुर थाना कोखराज को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

अखिल भारतीय असंगठित कामगार कर्मचारी कांग्रेस के जिलाध्यक्ष बने बुदुल उर्फ शिवकुमार

अखंड भारत संदेश

कांग्रेस पार्टी के जिला पदाधिकारियो में खुशी का माहौल माल्यार्पण कर बांटे गए लड्डू

कोखराज कौशाम्बी सिराथू तहसील के कोखराज क्षेत्र के कशिया पश्चिम निवासी बुदुल उर्फ शिव कुमार को अखिल भारतीय असंगठित कामगार कर्मचारी कांग्रेस का कौशांबी जिला अध्यक्ष बनाया गया है उनकी नियुक्ति की जानकारी मिलते ही कांग्रेस पार्टी में खुशी का माहौल है और लोगों ने माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया है और मिठाई बांटकर उन्हें बधाई दी है केकेसी उत्तर प्रदेश के पूर्व सांसद राष्ट्रीय चेयरमैन डा .उदितराज ने जनपद कौशांबी में शिवकुमार की सक्रियता को देखते हुए कांग्रेस पार्टी की मजबूती के लिए पार्टी के हित में जनता से किये वादे को पूरा करने के लिए शिव कुमार उर्फ बुदुल की नियुक्ति की है डॉ उदित राज ने कहा कि ऐसे वक्त पर कांग्रेस ही एकमात्र विकल्प बनता है इसलिए उत्तर प्रदेश अध्यक्ष डा. राजकुमार तिवारी के अनुशंसा पर जनपद कौशांबी में शिवकुमार उर्फ बुदुल को अखिल भारतीय असंगठित कामगार कर्मचारी कांग्रेस केकेसी जिला अध्यक्ष पद पर नियुक्ति की गई है कांग्रेस पार्टी के नेताओं ने कहा कि बुदुल उर्फ शिवकुमार को अध्यक्ष बनाने पर जिले के कांग्रेसियों में खुशी की लहर दौड़ गयी कांग्रेस मानवाधिकार कमेटी के जिला अध्यक्ष विष्णु कुमार सोनी ने अपने तमाम पदाधिकारियों के साथ कोखराज चाकवन चौराहे पर फूलमालाओ के साथ बुदुल उर्फ शिव कुमार का जोरदार स्वागत किया इस मौके पर अजीत कुशवाहा, अनीस अहमद, जय प्रकाश, अकबर, राजेश, बबलू, अनिल मो. शाबान, रंजीत विश्वकर्मा, मुजफ्फर, अरविंद, सोनू, सुरेन्द्र,राजभवन, इकरार अहमद सहित अन्य तमाम लोगों ने लड्डू खिलाकर एक दूसरे के साथ खुशियाँ मनायी।

सीडीओ ने मुख्यालय पर आवासित रहने के सम्बन्ध में किया औचक निरीक्षण

मुख्य विकास अधिकारी के निर्देशानुसार जिला विकास अधिकारी ने विकास खण्ड सरसवां एवं जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी ने विकास खण्ड चायल का किया औचक निरीक्षण, मुख्यालय पर आवासित रहने की पुष्टि के बाद ही आहरित होगा वेतन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी द्वारा 14 जून 2023 की रात्रि 08 बजे विकास खण्ड सिराथू के विभिन्न अधिकारियों के मुख्यालयवास का निरीक्षण किया गया मुख्य विकास अधिकारी के निरीक्षण के दौरान सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सिराथू के इमरजेंसी में चिकित्साधिकारी डॉ० सुधीर कुमार उपस्थित मिलें। इमरजेंसी में फार्मासिस्ट सुश्री शलिनी सचान, वार्ड ब्वाय श्री छेदू और 02 गार्ड मौजूद थे नोडल अधिकारी/उप मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ० केडी सिंह तथा प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ० औचित्य कुमार सिंह तथा डॉ० सुरेन्द्र कुमार परिसर में बने आवासों में आवासित पाये गये मुख्य विकास अधिकारी के निरीक्षण के दौरान कनिष्ठ लिपिक हमीज अहमद और पत्रवाहक शिवकुमार मौजूद थे खण्ड विकास अधिकारी सिराथू, सहायक विकास अधिकारी (पं०), अवर अभियन्ता लघु सिंचाई, सहायक विकास अधिकारी (समाज कल्याण), क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी और सहायक विकास अधिकारी (कृषि) मुख्यालय पर मौजूद नहीं थे एवं न ही इन लोगों के मुख्यालय पर आवासित होने का कोई साक्ष्य पाया गया मुख्य विकास अधिकारी के निरीक्षण के दौरान पशु चिकित्साधिकारी डॉ० डीपी सिंह मुख्यालय पर आवासित नही पाये गये तथा मौके पर बताया गया कि खण्ड शिक्षा अधिकारी यहाँ निवास नही करते हैं और प्रयागराज से आवागमन करते हैं मुख्य विकास अधिकारी ने आवासित न पाये गये अधिकारियों कर्मचारियों का वेतन अग्रिम आदेश तक रोकने के निर्देश दिये है तथा सम्बन्धित जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे कम से कम 03 औचक निरीक्षण करते हुए इस बात की पुष्टि कर लें कि अधिकारी/कर्मचारी आवासित रहने लगें है, तभी उनका वेतन आहरित करने की संतुष्टि उन्हें उपलब्ध करायी जाय मुख्य विकास अधिकारी के निदेर्शानुसार जिला विकास अधिकारी द्वारा 14 जून 2023 को सायं 07 बजे विकास खण्ड, सरसवां के अन्तर्गत अधिकारियों कर्मचारियों के मुख्यालय में आवासित रहने के सम्बन्ध में औचक निरीक्षण किया गया जिला विकास अधिकारी के निरीक्षण के दौरान खण्ड विकास अधिकारी सतीश कुमार सिंह उपस्थित मिले सहायक विकास अधिकारी (आई०एस०बी०) सतीश कुमार पाण्डेय, सहायक विकास अधिकारी (सहकारिता) अनूप कुमार, सहायक विकास अधिकारी (स०क०) उमेश प्रताप सिंह, अवर अभियन्ता (ग्रा0अभि0वि०) अरूण कुमार सिंह एवं अवर अभियन्ता (एम0आई0) अमित कुमार सिंह अनुपस्थित पाये गये जिला विकास अधिकारी के निरीक्षण के दौरान अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र सरसवां डा० संजय कुमार गुप्ता अनुपस्थित पाये गये पशुचिकित्साधिकारी सरसवां अजीत कुमार सिंह मौके पर अनुपस्थित पाये गये मुख्य विकास अधिकारी ने आवासित न पाये गये अधिकारियों/कर्मचारियों का वेतन अग्रिम आदेश तक रोकने के निर्देश दिये है तथा सम्बन्धित जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे कम से कम 03 औचक निरीक्षण करते हुए इस बात की पुष्टि कर लें कि अधिकारी/कर्मचारी आवासित रहने लगें है, तभी उनका वेतन आहरित करने की संतुष्टि उन्हें उपलब्ध करायी जाय मुख्य विकास अधिकारी के निदेर्शानुसार जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी/परियोजना निदेशक द्वारा 14 जून 2023 को रात्रि 08 बजे विकास खण्ड चायल के अधिकारियों/कर्मचारियों के मुख्यालय में आवासित रहने के सम्बन्ध में औचक निरीक्षण किया गया जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी के निरीक्षण के दौरान श्री दिनेश चन्द्र खण्ड विकास अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी (पंचायत) शिव प्रकाश, सहायक विकास अधिकारी (कृषि) एवं वरिष्ठ सहायक सुरेश कुमार उपस्थित थे सहायक विकास अधिकारी (आई0एस0बी0) राजेश कुमार पाण्डेय एवं सहायक विकास अधिकारी (सहकारिता) सुश्री स्मिता जयसवाल अवकाश पर बताया गया। अवर अभियन्ता (एम0आई0) रमाकान्त सिंह, सहायक विकास अधिकारी (स०क०) देवेन्द्र प्रताप सिंह तथा लेखाकार सुरेन्द्र साहू सप्ताह में रोस्टर के अनुसार सोमवार, मंगलवार एवं बृहस्पतिवार को उपस्थित रहते है अवर अभियन्ता (ग्रा0अभि0वि०) रत्नाकर सिंह अनुपस्थित पाये गये जिला अर्थ एवं संख्याधिकारी के निरीक्षण के दौरान पशुचिकित्साधिकारी श्री अरूण गुप्ता मौके पर उपस्थित पाये गये बताया गया कि खण्ड शिक्षा अधिकारी चायल अवकाश पर हैं तथा शिक्षा अधिकरी नेवादा को अतिरिक्त प्रभार दिया गया है मुख्य विकास अधिकारी ने आवासित न पाये गये अधिकारियों/कर्मचारियों का वेतन अग्रिम आदेश तक रोकने के निर्देश दिये है तथा सम्बन्धित जनपद स्तरीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि वे कम से कम 03 औचक निरीक्षण करते हुए इस बात की पुष्टि कर लें कि अधिकारी/कर्मचारी आवासित रहने लगें है, तभी उनका वेतन आहरित करने की संतुष्टि उन्हें उपलब्ध करायी जाय।

संपादकीय

बाल विवाह : बदहाली की एक और वजह

नीलेश दुबे

बाल-विवाह केवल एक सामाजिक बुराई नहीं, अपितु यह देश के आर्थिक विकास को भी प्रभावित करता है। आर्थिक विकास के विश्लेषण के लिए ऐतिहासिक, संस्थागत, सामाजिक, सांस्कृतिक, जनसांख्यिकीय, राजनीतिक और पारिस्थितिक कारक बहुत महत्वपूर्ण हैं। विकास की अवधारणा अकेले आर्थिक विकास की अवधारणा से कहीं अधिक व्यापक है। देश के अधिकांश राज्यों में, कुछ अपवादों को छोड़कर, सभी समुदायों में विवाह संबंधों में लगभग तीन तिहाई से भी ज्यादा हिस्सा बाल-विवाह का होता है। 'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ सर्वेक्षण रिपोर्ट - 2019-21' के अनुसार देश में 20-24 वर्ष की 23.3 प्रतिशत महिलाओं का विवाह 18 वर्ष की आयु से कम में हुआ है। देश में इस मामले में शीर्ष स्थान पर पश्चिम बंगाल है जहां सबसे अधिक 41.6 प्रतिशत महिलाओं का बाल विवाह हुआ है। बिहार दूसरे, झारखंड तीसरे, राजस्थान चौथे और आन्ध्रप्रदेश पांचवें स्थान पर है। जो उम्र कलम पकड़ने की होती है उसमे कुछ बच्चे घर-परिवार की जिम्मेदारियों को निभाने की चिंताओं में डूबे रहते हैं तो बालिकाएं इस उम्र में गर्भवती होने या माँ बनने का दंश झेल रही होती हैं। हाल ही में मध्यप्रदेश के राजगढ़ जिले में एक चौदह वर्षीय बालिका ने इस डर से फांसी लगा ली कि दो साल पूर्व हुए उसके विवाह के बाद उसकी ससुराल वाले उसे लेने आये थे। इसी वर्ष मई में असम के कछार जिले में सत्रह साल की एक लड़की ने इसलिए आत्महत्या कर ली क्योंकि उसके परिजनों ने उसे प्रेमी से विवाह करने से मना कर दिया था। हालांकि इन दोनों घटनाओं में विरोधाभास है। एक में सामाजिक निर्णय आत्महत्या का कारण बना है तो दूसरे में सामाजिक निर्णय को चुनौती देना कारण है। बाल-विवाह के कारणों और निष्कर्षों पर पहुंचना बहुत जटिल है, फिर भी उस पर हुए कई शोधों के निष्कर्षों से यही निकलता है कि बाल-विवाह को प्रभावित करने वाले कारकों को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है। पहला, 'मानव विकास संकेतकों,' सरकारी सेवाओं और कार्यक्रमों से संबंधित है जिसमें प्रतिव्यक्ति आय, शिक्षा, स्वास्थ, पोषण, सुरक्षा से जुड़ी हैं और दूसरा, सामाजिक मान्यताओं, रीति-रिवाज, पूर्वाग्रह आदि से। कई समुदायों, जातियों में देखा गया है कि आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक रूप से सशक्त होने के बाद भी बाल-विवाह का चलन मौजूद है। इसका सीधा संबंध रुढ़ियों, मान्यताओं की समाज में गहरी पैठ और पुरुषवादी नजरिया है। देश में ब्रिटिश-काल में ही विवाह की न्यूनतम उम्र के लिए कानून अस्तित्व में आ गया था जिसे 'शारदा एक्ट -1929' के नाम से जाना जाता है। इसके तहत बालिका की विवाह की न्यूनतम उम्र 14 वर्ष एवं बालक की न्यूनतम उम्र 18 वर्ष तय की गई थी। उस समय इस कानून का बिरोध हुआ। समुदायों द्वारा अंग्रेजी हुकूमत के समक्ष तथ्य रखे गए कि हमारी मान्यताओं से छेड़छाड़ न की जाए। जिस प्रकार कुछ वर्ष पूर्व मुस्लिम समुदाय के कुछ प्रतिनिधियों और संगठनों ने तीन-तलाक के मामले में अपने तर्क रखे थे। स्वतंत्रता के बाद 'शारदा एक्ट' में कई बदलाव हुए और वर्ष 2006 में 'बाल-विवाह प्रतिषेध कानून' अस्तित्व में आया। इसमें बाल-विवाह को संज्ञेय अपराध माना गया, जिसमें अधिकतम तीन वर्ष की सजा या एक लाख रुपए का जुमार्ना या दोनों का प्रावधान है। पिछले 17 वर्षों में देश में प्रतिवर्ष एकल अंकों में ही इस कानून के अंतर्गत बाल-विवाह के मामले पंजीकृत हुए। असम में चला अभियान अपवाद है। सभी जानते हैं कि इसके कई राजनैतिक मायने हैं। इसके बावजूद इस कानून में और कई खामियां हैं। नए कानून के लागू होने के बाद भी 'पर्सनल लॉ' के अंतर्गत कोर्ट ने कई बाल-विवाह के मामलों को जायज ठहराया है। इस कानून के अंतर्गत बाल-विवाह के बाद शून्य या खारिज कराने लिए लड़के अथवा लड़की में से एक को कोर्ट की शरण जाना पड़ता है, अर्थात यह कानून रुढ़ियों और परम्पराओं और मान्यताओं को एक तरह से मान्यता प्रदान करता है। मध्यप्रदेश में 'अनिवार्य विवाह पंजीयन कानून' बने कई बर्ष हो गए हैं, लेकिन अभी तक इसकी अधिसूचना जारी नहीं की गई है और कानून लागू नहीं हो सका है। 'बाल-विवाह प्रतिषेध कानून -2006' में बाल-विवाह रोकथाम और जागरूकता पर अधिक बल दिया गया है, लेकिन तंत्र का सारा ध्यान बाल-विवाह के मामलों के संज्ञान में आने पर उसको रोकने पर रहता है, बजाय रोकथाम के। कई मामलों में बाल-विवाह रोकने वाली टीम पर ही हमला हो जाता है। बाल-विवाह केवल एक सामाजिक बुराई नहीं, अपितु यह देश के आर्थिक विकास को भी प्रभावित करता है। आर्थिक विकास के विश्लेषण के लिए ऐतिहासिक, संस्थागत, सामाजिक, सांस्कृतिक, जनसांख्यिकीय, राजनीतिक और पारिस्थितिक कारक बहुत महत्वपूर्ण हैं। विकास की अवधारणा अकेले आर्थिक विकास की अवधारणा से कहीं अधिक व्यापक है। विकास में स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रौद्योगिकी या जीवन-प्रत्याशा जैसे विभिन्न प्रकार के सामाजिक संकेतकों में व्यापक परिवर्तन शामिल हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक परिवर्तनों से जुड़े हैं। बाल-विवाह स्वास्थ्य, बीमारी, मृत्युदर, जीवन-प्रत्याशा और शिक्षा के स्वतंत्र पहलुओं के रूप में महत्वपूर्ण हैं। इन पहलुओं को कई आर्थिक कारक भी प्रभावित करते हैं। सामाजिक बैज्ञानिकों द्वारा बाल-विवाह रोकथाम के लिए जितने भी मॉडल सुझाये गए हैं, उनमें बालिकाओं की शिक्षा, सुरक्षा, परिवारों की आर्थिक स्थिति में सुधार, सामुदायिक जागरूकता और प्रचार-प्रसार शामिल हैं। सांख्यकी बिज्ञान में बहुत सी पद्धतियां हैं जिनका उपयोग कर सटीक निष्कर्षों पर पहुंचा जा सकता है। उदाहरण के लिए 'सह सम्बन्ध सांख्कीय पद्धति' से इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि प्रति व्यक्ति आय, बालिका शिक्षा या अपराध दर कैसे और कितनी बाल-विवाह को प्रभावित करती है। स्केल पर मापें तो पाते हैं कि देश के जिन राज्यों में प्रतिव्यक्ति आय अधिक है उन राज्यों में बाल-विवाह की दर कम है।

प्रकृति से खिलवाड़ का परिणाम ही हैं प्राकृतिक आपदाएं

सुनील कुमार महला

इन दिनों बिपरजॉय को लेकर देश में काफी चर्चा है। यह एक चक्रवात है। वैसे तो बिपरजॉय का अर्थ होता हैबहुत खुशी'। लेकिन यह खुशी लेकर नहीं आया है और इन दिनों यह एक बहुत बड़ी मुसीबत बनकर भारत के कई समुद्री इलाकों पर मंडरा रहा है। विशेषकर बिपरजॉय का असर भारत के गुजरात, महाराष्ट्र समेत बहुत से समुद्री इलाकों में देखने को मिल रहा है। इन दिनों मुंबई के मरीन ड्राइव पर समुद्र में रह-रहकर ऊंची -ऊंची लहरें देखने को मिल रही है। यह सब इस चक्रवात के कारण हो रहा है गुजरात में तो चक्रवात को लेकर अलर्ट जारी किया गया है। वास्तव में बिपरजॉय है क्या ? यहां यह हमें जानने और समझने की जरूरत है। दरअसल, कुछ समय पहले ही दक्षिण-पूर्व अरब सागर के ऊपर एक डीप-डिप्रेशन बना था, जो अब भयंकर तूफान में तब्दील हो गया है। इसी चक्रवाती तूफान को बिपरजॉय तूफान नाम दिया गया है और यह नाम बांग्लादेश द्वारा सुझाया गया है। मीडिया रिपोर्टों से पता चला है कि बिपरजॉय अभी पोरबंदर से 290 किलोमीटर दूर है। वहीं जखाऊ बंदरगाह से ये 360 किलोमीटर दूर है। बताया जा रहा है कि राजस्थान में भी इस चक्रवाती तूफान का असर देखने को मिलेगा। इस तूफान के कारण आने वाले कुछ समय में ही राजस्थान के दक्षिण-पश्चिमी हिस्सों में कई जगह भारी बारिश हो सकती है और तेज हवाएं चल सकती हैं। हालांकि इस तूफान के चलते विभिन्न राज्य सरकारें और केंद्र सरकार एहतियात के लिए जरूरी और आवश्यक कदम उठा रही हैं और इसी क्रम में गुजरात में एनडीआरएफ की 12 टीमों को तैनात किया गया है। बताया जा रहा है कि तूफान के कारण 4 मीटर से 7 मीटर उंची लहरें उठ सकती है। इस संबंध में स्वयं केन्द्रीय उजामंत्री ने गुजरात, राजस्थान के तटीय क्षेत्र की समीक्षा की है।गुजरात के सौराष्ट्र और कच्छ क्षेत्र तटीय क्षेत्रों में

बिपोजौंय साइक्लोन का खतरा देखते हुए वेस्टर्न रेलवे ने संभावित क्षेत्रों के लिए आवश्यक सुरक्षा कदम उठाए हैं और 95 से अधिक ट्रेनों को कैंसिल कर दिया गया है, यह काबिलेतारिफ कदम है। देखा जाए तो यह एक आपदा ही है और आपदाएं जब आतीं हैं तो किसी को बताकर नहीं आतीं हैं, ये अन एक्सपेक्टेड होतीं हैं और जब कभी भी कोई आपदा आती है तो ये बिना किसी चेतावनियों के आतीं हैं और जान माल का काफी नुकसान करतीं हैं। आपदाओं के कारण मानवीय, आर्थिक और पर्यावरणीय क्षति होती है और जब भी आपदाएं आतीं हैं तो इनसे उबरना इतना आसान नहीं होता है। अतः सरकारों के साथ हम सभी को इनके लिए पहले से ही पूर्ण तैयार, मुस्तैद रहना चाहिए। प्यास लगने पर कुआं खोदने से कभी भी प्यास नहीं बुझती है। अतः मनुष्य को इनसे निपटने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए। यदि हम यहां आपदा की परिभाषा की बात करें तो सरल शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि आपदा प्रायः एक अनपेक्षित घटना होती है, जो ऐसी ताकतों द्वारा घटित होती है, जो मानव के नियंत्रण में नहीं हैं। यह थोड़े समय में और बिना चेतावनी के घटित होती है जिसकी वजह से मानव जीवन के क्रियाकलाप अवरुद्ध होते हैं तथा बड़े पैमाने पर जानमाल का नुकसान होता है। वास्तव में, आपदा एक प्राकृतिक अथवा मानवजनित घटना हैं, जिसका व्यापक परिणाम मानव क्षति हैं, अर्थात- आपदा उन अप्रत्याशित दुष्प्रभावी चरम घटनाओं एवं प्रकोपों को कहा जाता हैं, जो प्रकृतिजन्य या मानवजनित होतीं हैं तथा जिनकें द्वारा मानव, जीव-जंतु एवं पादप समुदाय को अपार क्षति होती हैं। आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 में- आपदा से तात्पर्य किसी क्षेत्र में हुए उस विध्वंस, अनिष्ट, विपत्ति या बेहद गंभीर घटना से है, जो प्राकृतिक या मानवजनित कारणों से या दुर्घटनावश अथवा लापरवाही से घटित होती है और जिसमें बहुत बड़ी मात्रा में मानव जीवन की हानि होती है। यहां यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि आपदा शब्द की उत्पत्ति इंग्लिश में डिजास्टर से हुई हैं, जो दो शब्दोंडेस' तथाएस्टर' से मिलकर बना हैं, जिसमेंडेस' का अर्थ अशुभ तथाएस्टर' का अर्थ सितारा होता हैं। इस प्रकार डिजास्टर या आपदा का अर्थ अशुभ सितारा होता है। तूफान, चक्रवात, बाढ़ आना, भूस्खलन होना, आंधी आना, भूकंप आना, ज्वालामुखी फटना, ग्लेशियर पिघलना आदि प्राकृतिक आपदाएं हैं,जिन पर मानव का नियंत्रण नहीं होता है।आग लगना, वायु या सड़क दुर्घटना, परमाणु बम विस्फोट, भूजल विषाक्तता, रासायनिक आपदा, महामारी, औद्योगिक दुर्घटनाएं मानव जनित होतीं हैं। भारत में जल एवं जलवायु से जुड़ी आपदाओं में क्रमशः चक्रवात, बवण्डर एवं तूफान, ओलावृष्टि, बादल फटना, लू व शीतलहर, हिमस्खलन, सूखा, समुद्र-क्षरण, मेघ-गर्जन व बिजली का कड़कना, भूमि संबंधी आपदाओं में क्रमशः भूस्खलन, भूकंप, बांध का टूटना, खदान में आग, दुर्घटना संबंधी आपदाओं में क्रमशः जंगलों में आग लगना, शहरों में आग लगना, खदानों में पानी भरना, तेल का फैलाव, प्रमुख इमारतों का ढहना, एक साथ कई बम विस्फोट, बिजली से आग लगना, हवाई, सड़क एवं रेल दुर्घटनाएँ, जैविक आपदाओं में क्रमशः महामारियां तथा रासायनिक, औद्योगिक एवं परमाणु संबंधी आपदाएं, रासायनिक गैस का रिसाव, परमाणु बम गिरना आदि को शामिल किया जा सकता है। जानकारी देना चाहूंगा कि प्राकृतिक आपदाओं की दृष्टि से भारत एक संवेदनशील प्रदेश रहा है, यहां

बाढ़, सूखा, चक्रवात, भूकंप तथा भूस्खलन की घटनाएँ आम हैं। भारत के लगभग 60% भू भाग में विभिन्न तीव्रता के भूकंपों का खतरा हमेशा बना रहता है। 40 मिलियन हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में बारंबार बाढ़ आती है। कुल 7,516 कि.मी. लंबी तटरेखा में से 5700 कि.मी. में चक्रवात का खतरा बना रहता है। यहां सूखा,सुनामी व वनों में आग लगने की घटनाएं आम हैं। किसी भी आपदा को रोकना आसान काम कभी नहीं होता है, लेकिन इनका प्रबंधन जरूर किया जा सकता है। आज भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व किसी न किसी प्रकार की आपदाओं से प्रभावित हैं। बढ़ती आबादी के साथ हम कंक्रीट के जंगल खड़े करते जा रहे हैं, प्रकृति के संरक्षण की ओर हमारा ध्यान कम ही है। हम विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों का अविवेकपूर्ण दोहन करने में लगे हैं और प्रकृति समय समय पर मानवजाति को अपना रौद्र रूप दिखाती है। हमें प्रकृति के संरक्षण की ओर पर्याप्त ध्यान देना चाहिए,उसका संरक्षण हमारा परम कर्तव्य भी है, क्यों कि प्रकृति से ही हमें विभिन्न संसाधन, चीजें प्राप्त होतीं हैं। आपदाओं को रोकने के लिए संपूर्ण विश्व को एक दूसरे से हाथ मिलाकर समन्वय के साथ काम करना होगा। आपदाओं से निपटने के लिए हमारी पूर्व तैयारी होनी चाहिए। हमें पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने के लिए वनों की, धरती के समस्त संसाधनों की रक्षा करनी होगी, उनका समय रहते संरक्षण करना होगा । हालांकि हमारे देश में एनडीआरएफ, एसडीआरएफ हमेशा आपदाओं से निपटने के लिए तैयार रहती हैं लेकिन हम सभी को सामूहिक रूप से आपदाओं से लड़ने के लिए सदैव तैयार और मुस्तैद रहना होगा। आज मानव पहाड़ों को काट रहा है, अंधाधुंध निर्माण कार्य कर रहा है, सुरंग,पुल , बांध बना रहा है। वनों को लगातार नष्ट करने में लगा है। पानी का असीमित दोहन कर रहा है, धरती की कोख को छलनी कर रहा है। हमें आज आपदाओं का समाधान ढूढ़ने की आवश्यकता अत्यंत महत्ती है। प्रकृति से तालमेल और सामंजस्य बिठाकर विकास करने की जरूरत है।बिगड़े पर्यावरण का ही परिणाम है कि मौसम चक्र में बदलाव दिखने लगा है, ग्लेशियर पिघलने लगे हैं व नदियों के जल स्तर में लगातार कमी दर्ज की जा रही है। भूस्खलन, भूकंप, सुनामी सभी प्रकृति से खिलवाड़ का ही नतीजा कहें जा सकते हैं। विकास की दौड़ में सीमाएं लांघने का ही परिणाम है कि पर्यावरण का स्वरूप आज एकदम से बदलने लगा है। हमारे धर्म ग्रंथों में तो सदा सदा से ही प्रकृति और पर्यावरण के संरक्षण के लिए प्रकृति पूजन का नियम बताये गये हैं तथा पेड़-पौधों, नदी-पर्वत, ग्रह-नक्षत्र, अग्नि और वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए हैं, लेकिन आज हम प्रकृति के साथ अपने रिश्तों को लगातार भूल रहे हैं।हम अपने स्वार्थों,लालच की सीमाएं लांघ चुके हैं। अंग्रेजी के महान कवि व प्रकृति कवि विलियम वड्र्सवर्थ ने कहा है -'नेचर डिड नेवर बीट्रे द हर्ट दैट लव्ड हर।'

ए बाबू! ये तो पब्लिक है ये सब जानती है!

किशन भावनानी गोंदिया

वैश्विक स्तरपर भारत दुनियां का सबसे बड़ा लोकतंत्र और अब सबसे बड़ा जनसंख्यातंत्र भी बन गया है। इसमें सोने पर सुहागा भारतवंछियों को बौद्धिक क्षमता का भरपूर खजाना उसकी मिट्टी से ही गिफ्ट के रूप में मिल मिलता है और क जिसके बल पर आज भारतवंशी सारे विश्व पर राज कर रहे हैं, सर्वश्रेष्ठ निर्णय ले रहे हैं। अब लद गए वे दिन जब ठप्पा युग में बूथ कैपचरिंग कर एकतरफा चुनाव जीता जाता था, एक रुपए के भुगतान पर हितधारकों को पंद्रह पैसा ही हाथमें आता था।अब डिजिटल युगडीबीटी का जमाना है। बिचौलियों का युग और रोल समाप्त हो चुका है। भ्रष्टाचार पर कड़े प्रहार और मिट्टी में मिलाने का काम तेजी से जारी है।आम जनता की सोच का दायरा भी विस्तृत हुआ है जिसके कारण अब जनता नें बहुत सोच समझकर बटन दबाकर अपना मूक दम दिखाना शुरू कर दिया है। इलेक्ट्रॉनिक और डिजिटल विस्तार के कारण टीवी चैनलों और मोबाइलों के बल पर देश दुनियां और राजनीतिहलचल आरोपों प्रत्यारोपण शासकीय कार्यालयों इत्यादि की ग्राउंड रिपोर्टिंग को देख, सुन व समझ रही है और सब ध्यान में रखकर अपनी पूरी भड़ास बटन को दबाकर निकालती है। चूंकि 2023 के अंत में कुछ राज्यों में विधानसभा चुनाव का आगाज करीब-करीब शुरू हो गया है, क्योंकि उन राज्यों में चुनावी हलचलो जैसे कार्यक्रम, आरोप-प्रत्यारोप का दौर, तेजी से स्कीमें लागू करनें का दौर और सबसे बड़ी बात पूरा टर्म रूखा रहने के बाद जनता के प्रति अभूतपूर्व प्रेम का जागृत होना, चुनावी इंडिकेशन की ओर इशारा करता है। चूंकि दिनांक 12 जून 2023 को देर रात एक राज्य की बहुत बड़ी बिल्डिंग जिसमें अनेक शासकीय मंत्रालय मंत्रियों के कार्यालय थे वहां भीषण आग लगी और मीडिया के अनुसार उसमें करीब 12, हजार सेअधिक फाइलें जल गई और बातमाननीय पीएम व केंद्रीय गृह मंत्री को फोन और सहायता पर पहुंची तो, स्वाभाविक ही है विपक्ष अवसरों को ढूंढ कर मुद्दा बनाएगा। बड़े बुजुर्गों की कहावत है कि धुआं वहीं से उठता है जहां आग लगती है, इसलिए विपक्षी नेताओं को मुख्य मुद्दा 50 पर्सेंट का निकल आया है और कहा जा रहा है कि, आग लगी या लगाई गई क्योंकि अब शासन जनता द्वारा हस्तांतरित करने का मूड संबंधित सरकार या पार्टी जान चुकी है, इसलिए महत्वपूर्ण फैसला जिसमें 50 परसेंट का उद्गार होने का रास्ता बंद कर उसे स्वाहा कर दिया गया है, यह बयान औरों के साथ साथ माननीय पूर्व मुख्यमंत्री द्वारा भी टीवी चैनलों पर दिया गया है। अब जनता और पार्टी को लग रहा है कि जैसे 40 परसेंट मुद्दे पर अभी एक राज्य में भारी जीत हासिल हुई है तो यहां अब 50 परसेंट मुद्दे का शंखनाद हो गया है और उसमें तेजी लाने की कोशिश की जा रही है परंतु हम सबको याद रखना होगा कि ए बाबू ! ये तो पब्लिक है येसब जानती है।इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे मुद्दा 40 परसेंट बनाम मुद्दा 50 परसेंट। साथियों बात अगर हम सतपुड़ा भवन में लगी आग से राजनीति गरमाने की करें तो इस घटना पर राजनीति तेज हो गई है। मध्य प्रदेश के पूर्व सीएम ने इस मामले में राज्य सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं, इसे भ्रष्टाचार का उदाहरण बताया है। उन्होंने इसकी जांच की मांग की है। एक पूर्व मंत्री ने कहा कि आप समझिए, सतपुड़ा भवन में फिर से आग लगी है। इसका मतलब है कि 50 फीसदी कमीशन के सबूत को जला दिया गया है। हमारे सीएम यह जवाब देंगे कि पिछली बार जो आग लगी थी, उसमें दोषी कौन थे। उनमें कितने लोगों को सजा हुई है। उन्होंने कहा कि पिछली बार वाली घटना में कितनें लोगों पर कार्रवाई हुई है। इसका कोई जवाब है उनके पास। अब फिर आग लगी है। लेकिन आग किसने लगाई और क्यों लगी, इसके कारणों पर ये नहीं जाएंगे। उन्होंने कहा कि 2018 के बाद दूसरी बार सतपुड़ा भवन में आग क्यों लगी है। उन्होंने पूछा है कि बार-बार सतपुड़ा भवन में ही आग क्यों लगती है। आम जनता इस बार हमारी पार्टी पक्ष में है। जनता में यह संदेश पहुंच गया है कि पार्टी की सरकार आ रही है। वर्तमान कुशासन से लोग थक गए हैं। अब एमपी में उनकी सरकार नहीं बन सकती है। इस भावना को सरकार समझ चुकी है। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार ने सबूत मिटाने के लिए यह आग लगी है। उन्होंने कहा कि पार्टी के पक्ष में सर्वे है। आप इस चीज को समझो और इन्हें सजा दो। गौरतलब है कि आग ने विकराल रूप धारण कर लिया था। इसके साथ ही 30 से अधिक एसी में ब्लास्ट हुआ था। आग पर काबू पाने के लिए प्रशासन की तमाम टीमें मौके पर मौजूद थीं।वहीं एक विपक्षी विधायक ने भी सतपुड़ा आग की घटना को लेकर सरकार को घेरा है। उन्होंने ट्वीट किया सतपुड़ा भवन के स्वास्थ्य संचालनालय कार्यालय में आग, किसी भी राज्य मे चुनाव से पहले सरकारी रिकॉर्ड भवन मे अगर आग लग जाए तो समझो सरकार गई, गुनाह मिटा दिए गए। सीएम और उनकी सरकार की, चला चली की बेला है। यह विशेष उल्लेखनीय है कि सतपुड़ा भवन में इससे पहले भी आग लग चुकी है। 25 जून 2012 में भी चौथी मंजिल पर आग लगी थी। तब यहां तकनीकी शिक्षा विभाग का दफ्तर था। यह आग शॉर्ट सर्किट से लगी थी। पूर्व केंद्रीय मंत्री और पार्टी नेता ने सतपुड़ा भवन में लगी आग के टाइमिंग पर सवाल उठाया है। उन्होंने ट्वीट किया कि युवा नेत्री ने जबलपुर में विजय शंखनाद रैली में घोटालों को लेकर हमला बोला तो सतपुड़ा भवन में भीषण आग लग गई। इसमें महत्वपूर्ण फाइलें जलकर राख हो गई है। कहीं आग के बहाने घोटालों के दस्तावेज जलाने की साज़िश तो नहीं। यह आग मप्र में बदलाव के संकेत दे रही है। पूर्व मंत्री और विधायक ने कहा कि पचास प्रतिशत कमीशन वाली सरकार ने अपने दस्तावेज जला दिए।

साथियों बात अगर हम इस मामले में राज्य सरकार के बचाव की करें तो, उधर इस सतपुड़ा अग्निकांड के बाद सीएम निवास में उच्च स्तरीय बैठक बुलाई थी।बैठक के बाद गृह मंत्री ने कहा कि डिजिटल जमाना है सभी फाइलों को फिर से रीक्रिएट कर लिया जाएगा। इस घटना की उच्चस्तरीय जांच की जाएगी। कमेटी 3 दिन के अंदर अपनी जांच पूरी कर रिपोर्ट सौंप देगी। केंद्र की योजनाओं के डाटा को रीक्रिएट कर लिया जायेगा। विपक्ष के आरोपों पर उन्होंने कहा-वहां 4 हजार कर्मचारी काम करते हैं, ऐसे में पेट्रोल लेकर कौन जाएगा, विपक्षी बड़ी पार्टी,हादसों पर राजनीति कर रही है, उनके सभी आरोप झूठे हैं उन्होंने कहा ईओडब्ल्यू और लोकायुक्त की फाइलें जली हैं, भ्रष्टाचार से जुड़ी कोई भी फाइल नहीं जली है। न तो लोकायुक्त की और न ही ईओडब्ल्यू की किसी फाइल को नुकसान पहुंचा है। यह भ्रम की स्थिति बनाई जा रही है। जो फाइलें जली हैं, उनका नीचे भी रिकॉर्ड है।

ऊपर भी रिकॉर्ड बना हुआ है। हम डिजिटल युग में जी रहे हैं और दस्तावेज नष्ट नहीं होते। जिन दस्तावेजों को नुकसान पहुंचा है, उन्हें फिर से तैयार करने की कार्यवाही शुरू हो गई है।

साथियों बात अगर हम आग बुझाने में सरकार द्वारा की गई मशक्कत की करें तो, सरकारी दफ्तर सतपुड़ा भवन में लगी देर शाम लगी आग मंगलवार दोपहर 12 बजे तक पूरी तरह बुझाई जा सकी। मंगलवार सुबह 8 बजे तक टीम ने आग पर काबू पा लिया था। बताया जा रहा है कि आग इतनी भीषण थी कि दमकल की 50 गाड़ियां मौके पर मौजूद थी। साथ ही देर रात आग पर काबू पाने के लिए वायुसेना भी भोपाल पहुंची थी। मंगलवार सुबह 7.30 बजे आग पर काबू पाया गया। उल्लेखनीय है कि सीएम ने आग पर काबू पाने के लिए केंद्र से मदद मांगी थी। आर्मी की टीम मौके पर पहुंच गई थी। इसके साथ ही सरकार के दो मंत्री भी वहां पहुंच गए थे। सीएम ने रक्षा मंत्री से बात की थी उन्होंने आग बुझाने के लिए एयरफोर्स की मदद मांगी थी। रक्षा मंत्री एयरफोर्स को निर्देशित किया और एंएन32 विमान और एमआई 15 हेलीकाप्टर भोपाल पहुचेंगे थे। एंन 52 और एमआई 15 बकेट के द्वारा सतपुड़ा भवन में ऊपर से पानी डालकर आग बुझाने का प्रयास किए। सीएम के निर्देश पर गठित हाई लेवल कमेटी घटना की जांच में जुटी है। गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव के नेतृत्व वाली समिति ने मंगलवार को सतपुड़ा भवन में तीसरी से छठी मंजिल का निरीक्षण किया। इस दौरान इलेक्ट्रिकल सेफ्टी, पीडब्लूडी के ईऔर एम विंग और फोरेंसिक साइंस लैब के एक्सपट्र्स भी साथ रहे। एफएसएल टीम ने यहां से करीब आधा दर्जन सैंपल लिए।

कर्मचारियों-अधिकारियों के बयान भी लिए गए। तीन दिन बाद अपनी रिपोर्ट सार्वजनिक होंगी। अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि मुद्दा 40 पर्सेंट बनाम मुद्दा 50 पर्सेंट।ए बाबू ! ये तो पब्लिक है ये सब जानती है ! एक राज्य में 40 पर्सेंट मुद्दे पर सफल परिणामों से उत्साहित होकर सतपुड़ा मामले में मुद्दा 50 पर्सेंट का आगाज - फैसला जनता जनार्दन करेगी

तूफान महाराष्ट्र की राजनीति में भी आया हुआ है!

अशोक

मेंढक कितना भी फूल जाए हाथी नहीं बन सकता भाजपा के संसद डॉ। अनिल बोर्डे ने मुख्यमंत्री शिंदे की तुलना मेंढक से करने के बाद शिंदे समर्थक विधायक संजय गायकवाड के जवाबएकनाथ शिंदे बाघ है , उनके 50 बाघों की बदौलत ही भाजपा के विधायकों को मंत्री पद मिला है । यह वादविवाद शुरू हो गया भाजपा और शिंदे शिवसेना के बीच जब एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना ने एक विज्ञापन देकर देवेंद्र फडणवीस को महाराष्ट्र की राजनीति में पीछे धकेलने का दांव खेला , उसके बाद लाख टके का सवाल यह है कि क्या यह दांव खुद एकनाथ शिंदे ने खेला है या कंधा सिर्फ एकनाथ शिंदे का है और बंदूक भाजपा की अंदरूनी राजनीति की है। इससे महाराष्ट्र कि राजनीति में तूफान आ गया । शिंदे के करीबी ने बताया,जिस तरह से भाजपा के कुछ नेता राज्य के एक बड़े भाजपा नेता के इशारे पर एकनाथ शिंदे को उनके प्रभाव क्षेत्र ठाणे में घेरने की कोशिश कर रहे हैं। एकनाथ शिंदे के पांच मंत्रियों को मंत्रिमंडल से हटवाने की खबरें चलवा कर शिंदे को डिस्टर्ब करने की कोशिश कर रहे हैं, यह उसका जवाब है।' एकनाथ शिंदे के करीबी का कहना है कि महाराष्ट्र की राजनीति में शिवसेना हमेशा ड्राइविंग सीट पर रही है, लेकिन 2014 के बाद यह स्थिति बदल गई थी, एकनाथ शिंदे उस ड्राइविंग सीट वाली स्थिति को वापस पाने की कोशिश कर रहे हैं। शिवसैनिकों को अपनी ओर खींचने के लिए भी यह स्थिति बनाना जरूरी है। एकनाथ शिंदे गुट का आकलन यह है कि कर्नाटक की हार के बाद भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को इस बात का अंदाजा हो गया है कि 2024 चुनावों से पहले एनडीए को मजबूत करना जरूरी है।इसी के तहत महाराष्ट्र में शिवसेना (शिंदे), तमिलनाडु में एआईएडीएमके और कर्नाटक में जेडीएस के साथ मिलकर भाजपा का शीर्ष नेतृत्व विशेष रणनीति बना रहा है। एकनाथ शिंदे इस स्थिति का लाभ लेने की फिराक में हैं। अब सवाल यह है कि क्या शिवसेना (शिंदे) ने भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को विश्वास में लेकर यह दांव खेला है? भाजपा के कई नेताओं को लगता है कि शिंदे अपने मन से यह सब नहीं कर सकते। खासकर तब जब इस समय एकनाथ शिंदे और उनके नेतृत्व वाली शिवसेना की पब्लिसिटी का काम दिल्ली के इशारे पर आई एक एजेंसी कर रही है। साथ ही शिंदे के एक खास ओएसडी गुजरात के है और शाह के करीबी हैं। तो क्या इसका मतलब है कि भाजपा की लीडरशिप ही महाराष्ट्र में ब्राह्मण चेहरे देवेंद्र फडणवीस को पीछे करके मराठा चेहरे एकनाथ शिंदे को आगे करना चाहती है? सवाल यह भी है कि क्या यह फडणवीस को महाराष्ट्र से हटाकर केंद्र में ले जाने के की प्रकिया की शुरूआत है? गौरतलब है कि अब एक नया मोड़ तब आया है जब सरकार चला रही शिंदे शिवसेना और भाजपा ही आपस में भिड़ गयी वो भी गृहमंत्री अमित शाह के नांदेड़ के दौरे के अगले ही दिन। इससे सवाल ये भी उठने लगा है कि क्या शाह को ये सब पता है और वो उसे होने दे रहे हैं? असल में अब शिंदे सरकार ने राज्य के सभी अखबारों में एक विज्ञापन देकर कहा है कि राष्ट्र में मोदी और महाराष्ट्र में शिंदे। इसी विज्ञापन में दावा किया गया है कि राज्य में एक सर्वे कराया गया जिसमें सामने आया है कि भाजपा को 30.2 प्रतिशत लोग और शिंदे शिवसेना को 16।2 प्रतिशत यानी कुल मिलाकर इस गठबंधन सरकार को 46.4 फीसदी लोग पसंद करते हैं।इसी में आगे कहा गया है कि मुख्यमंत्री के तौर पर एकनाथ शिंदे को 26.1 प्रतिशत और फणनवीस को 23 प्रतिशत लोग पसंद करते हैं यानी मुख्यमंत्री पद की दौड़ में शिंदे अब फणनवीस से आगे हैं जबकि भाजपा मानती है कि फणनवीस ही उनके नेता हैं और वही मुख्यमंत्री का चेहरा हैं। अब सवाल ये उठ रहा है कि ये सब शिंदे खुद अपने मन से कर रहे हैं या दिल्ली के आका से पूछकर? क्योंकि लगता नहीं कि शिंदे अपने दम पर ये कर सकते हैं।

जैविक खेती हेतु जरूरी है प्रशिक्षण और मार्गदर्शन

चंद्र मोहन

जैविक खेती में खेती करने की ऐसी तकनीकें और विधियां शामिल होती हैं जो सतत कृषि के माध्यम से पर्यावरण, मनुष्य और जानवरों की रक्षा करने का प्रयास करती हैं। जैविक खेती के उत्पादकों को उर्वरीकरण और फसल की रक्षा दोनों के लिए जैविक पदार्थों के अलावा कोई भी अन्य चीज प्रयोग करने की अनुमति नहीं होती। उर्वरीकरण विधियों के रूप में, वे मुख्य रूप से गोबर की खाद, कम्पोस्ट, या विशेष जैविक सिंथेटिक उर्वरकों का प्रयोग करते हैं। फसल की रक्षा के उपायों के रूप में, ज्यादातर जालों और प्राकृतिक शिकारियों का प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार की खेती में बहुत ज्यादा मेहनत की जरूरत पड़ती है और इससे होने वाली पैदावार भी पारंपरिक खेती की तुलना में काफी कम होती है। हालाँकि, जैविक उत्पादक अपने उत्पादों को बाजार में पारंपरिक उत्पादों से ज्यादा महंगे दामों पर बेच सकते हैं।

जैविक खेती की परिभाषा

यूरोपीय संसद ब्रुसेल्स के अधिनियम, 27 अप्रैल 2018, के अनुसार, जैविक खेती खेत के प्रबंधन और खाद्य उत्पादन की एक समग्र प्रणाली है जो सबसे अच्छे पर्यावरणीय और जलवायु गतिविधि के अभ्यासों, उच्च स्तर की जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, पशु कल्याण के उच्च मानकों के प्रयोग और प्राकृतिक पदार्थों और प्रक्रियाओं के प्रयोग से उत्पादित उत्पादों के लिए उपभोक्ताओं की बढ़ती हुई संख्या के मांग के अनुरूप उच्च उत्पादन मानक शामिल करती है। जैविक खेती में किसान, अपनी रोजमर्रा की दिनचर्या में सभी इनपुट सीमित करने की और पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, जहाँ तक मिट्टी के प्रबंधन की बात आती है, जैविक किसान मिट्टी में पोषक तत्वों की कमी को कम करने के लिए ज्यादातर फसल चक्रीकरण पर निर्भर रहते हैं। वे मुख्य रूप से, कानूनी रूप से निर्देशित मात्राओं में जैविक खाद, और नाइट्रोजन बूस्टर के रूप में नाइट्रोजन-बाइंडिंग बैक्टीरिया का इस्तेमाल करते हैं। जो किसान नियमों का पालन करते हैं, वो अपने उत्पादों को बाजार में प्रमाणित जैविक के रूप में बेच सकते हैं और अपनी पैकेजिंग में आधिकारिक जैविक की मुहर दिखा सकते हैं, जिसकी वजह से उत्पादों को ऊँचे दामों पर बेचा जा सके।

आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को दिया प्रशिक्षण

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बाल विकास एवं पुष्टाहार विभाग ने प्रजायत्न संस्था के साथ आंगनबाड़ी केंद्र पराको में बचपन एवं देखभाल व शिक्षा के तहत विभाग से प्राप्त टीएलएम की उपयोगिता बाबत रामनगर ब्लाक की आगंनबाड़ी कार्यकत्रियों एवं सुपरवाइजर को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया।

गुरुवार को रामनगर ब्लाक में प्रशिक्षण में 20 लोगों ने हिस्सा लिया। संस्था के अमित ने कहा कि तीन से छह वर्ष तक के बच्चों का शारीरिक विकास, भाषा और बौद्धिक विकास, सामाजिक विकास, भावनात्मक विकास को समझना और विभाग से मिले शिक्षण सामग्रियों का बेहतर उपयोग करें। बाल विकास परियोजना अधिकारी रामनगर वीरेन्द्र, संस्था के अमित, सूर्यकांत, रोशनी, रामबाबू, शिखा ने प्रशिक्षण दिया।

नगर पालिका क्षेत्र का प्राधिकरण में लगायें नक्शा: डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद ने विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण के कार्यालय का निरीक्षण कर स्टाफ के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि मास्टर प्लान का बोर्ड भी लगवाए। नाप कराकर बाउंड्रीवाल को पूरी कराएं।

गुरुवार को जिलाधिकारी ने चित्रकूट क्षेत्र विशेष प्राधिकरण कार्यालय का निरीक्षण कर कहा कि जो लाभार्थी आते हैं, उन्हें बताने को बाहर एक काउंटर बनायें। अवर अभियंता को निर्देश दिये कि सरकारी कार्य के लिए एक नोटिस बोर्ड लगाए। लाइटिंग की व्यवस्था भी कराएं। नोटिस बोर्ड पर नगर पालिका के तहत आने वाले नक्शा भी बनवाएं। खोह व शिवरामपुर में प्रवेश द्वार पर जिला विकास प्राधिकरण का बोर्ड भी लगवाए।

निरीक्षण दौरान उनके साथ एडीएम न्यायिक श्रीमती वन्दिता श्रीवास्तव, अवर अभियंता आनंद प्रकाश द्विवेदी, वरिष्ठ सहायक शैलेंद्र सिंह, ड्राफ्टमैन रामेश गुप्ता समेत अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

भीषण गर्मी में एडीएम ने बताये हीटवेव से बचाव के उपाय

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एडीएम कुंवर बहादुर सिंह ने जिले के लोगों को लू, हीटवेव से बचाव की बाबत दिशा-निर्देश जारी किये हैं। उन्होंने सम्बन्धित विभागों को निर्देश दिये कि हीटवेव से बचाव को आईईसी मैटेरियल सेट पंपलेट का प्रचार करायें। आम जनता को जानकारी दी जाए।

गुरुवार को एडीएम ने कहा कि आमजनता की सहायता को कन्ट्रोल रुम स्थापित कराए गये हैं। एडीएम ने बताया कि भीषण गर्मी, गर्म हवा व लू से बचाव कैसे करें तथा सुरक्षित रहें। गर्म हवाओं से बचने को खिड़की को रिफ्लेक्टर- एलुमिनियम पन्नी, गत्ते आदि से ढककर रखें, ताकि बाहर की गर्मी अन्दर आने से रोकी जा सके। उन खिडकियों व दरवाजों पर जिनसे दोपहर को गर्म हवायें आती हैं, काले परदे लगायें। मौसम के पूवार्नुमान को सुने, आगामी तापमान में होने वाले परिवर्तन के प्रति सजग रहे। आपात स्थिति से निपटने को प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण लें। बच्चों तथा पालतू जानवरों को भी बन्द वाहन में अकेला न छोडें। सम्भव हो तो घर में ही रहें तथा सूर्य के ताप से बचें। सूर्य के ताप से बचने को सम्भव हो तो घर में ही रहें। सूर्य के ताप से बचनें को घर की निचली मंजिल पर रहें। संतुलित हल्का व नियमित भोजन करें। मादक पेय पदार्थों का सेवन न करें। घर से बाहर शरीर व सिर को साफी से ढककर रखें। घर में पेय पदार्थ लस्सी, छाछ, मटठा, बेल का शर्बत, नमक चीनी का घोल, नीबू पानी या आम का पना आदि प्रयोग करें।

उन्होंने लोगों को हीटवेव से बचाव को आवश्यक तैयारियां करने को कहा। आपदा सम्बन्धी सहायता को एम्बुलेंस 108, पुलिस 112, राहत आयुक्त कार्यालय 1070 टोलफ्री, कलेक्ट्रेट के कन्ट्रोल रूम नंबर 05198298090, 8737991456, 8737991438, 8737991423 एवं 87654736 09 से सम्पर्क करें।

NPS निजीकरण भारत छोड़ो यात्रा का आगमन आज

आगरा। पेंशन हमारा हक है लेकर रहेंगे इसके लिए हम सभी कोई भी कुबार्नी देने को तैयार हैं अटेवा के प्रदेश उपाध्यक्ष डा आशाराम यादव ने बताया कि हम लोगों के बुढ़ापे का सहारा है पुरानी पेंशन इसके लिए कितना भी संघर्ष करना पड़े हम साथी पीछे हटने वाले नहीं हैं कारण अब हमारा कारवां बिशाल हो गया है यात्रा के आगरा आगमन पर जोरदार स्वागत किया जाएगा।

अटेवा के जिला संयोजक जुग्गी लाल वर्मा ने बताया कि 15 जून को एनपीएस निजीकरण भारत छोड़ो यात्रा अध्यक्ष विजय कुमार बंधु की अगुवाई में सुबह आठ बजे अलीगढ़ से चल कर 11 बजे टेढ़ी बगिया आगरा पहुंच रही है जहां अटेवा द्वारा भव्य स्वागत किया जाएगा उसके बाद रामबाग चौराहा होते हुए वाटर वर्क्स - जीवनी मंडी - आगरा फोर्ट पर ढहऊविभाग द्वारा स्वागत फिर मॉल रोड से प्रतापपुरा चौराहा होते हुए आगरा कैंट रेलवे स्टेशन पर अटेवा,रेलवे एवं विभिन्न विभागों के कर्मचारियों द्वारा यात्रा का भव्य स्वागत होगा उसके बाद अध्यक्ष विजय कुमार बन्धु द्वारा सभा को सम्बोधित किया जाएगा उसके उपरांत यात्रा मॉल रोड होते हुए फतेहाबाद रोड से रमाडा होटल से हाइवे के रास्ते कुबेरपुर-एत्मादपुर होते हुए फिरोजाबाद को प्रस्थान करेगी।अटेवा जिला संयोजक ने एनपीएस निजीकरण भारत छोड़ो यात्रा में अधिक से अधिक सहभागिता की अपील की है एनपीएस निजीकरण भारत छोड़ो यात्रा एक जून को चंपारण विहार से शुरू हुई थी।

2 यूपी बटालियन एन सी सी वार्षिक प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ

आगरा । यूपी बटालियन आगरा का एटीसी 05 कैंप आनंद इंजीनियरिंग कॉलेज कीठम आगरा पर 13 जून 2023 से 22 जून 2023 तक चलेगा जिसमें आगरा के विभिन्न कालेजों एवं स्कूलों के 600 से अधिक कैडेट्स प्रतिभाग कर रहे हैं।

13 जून 2023 को बच्चों का नॉमिनेशन, डाकूमेंट वेरीफिकेशन, फोटोग्राफी आदि से सम्बंधित कार्य किये गए।इस कैंप का ओपनिंग ऐड्रेस 14 जून 2023को कैम्प कमांडर कर्नल परितोष विभु ने किया, कर्नल विभु ने कैंप में होने वाली ट्रेनिंग की जानकारी दी एवं कैडेटों को एन सी सी के माध्यम से कैडेटों के जीवन में आने वाली बारीकियों के बारे में समझाया साथ ही कैंप में होने वाली विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। साथ ही दोपहर के बाद कैंप पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कर्नल विभु ने सर्वप्रथम रक्तदान कर रक्तदान शिविर का उद्घाटन किये। इस रक्तदान शिविर में पी आई स्टॉफ,ए एन ओ सहित कई कैडेट्स ने भी रक्तदान किये।

बाबाजी की मूर्ति स्थापना समेत होगें विविध कार्यक्रम

सीएम योगी समेत ख्यातिलब्ध संतों का मिलेगा आर्शीवचन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। इस साल का योग दिवस खास होने वाला है। चित्रकूट बाल विद्यालय के पूर्व अध्यापक स्व बद्री प्रसाद त्रिपाठी ह्यबाबाजीह्य की मूर्ति स्थापना के साथ ही विविध कार्यक्रम मुख्यालय के सुंदर घाट स्थित रामजानकी मंदिर में होगें। कार्यक्रम की शोभा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बढाएंगे। दूसरी ओर विश्व प्रसिद्ध धार्मिक संतों व फिल्म स्टारों का भी जमावड़ा लगेगा। यह जानकारी इस विशेष कार्यक्रम के मुख्य आयोजन प्रो डॉ गोविंद नारायण त्रिपाठी ने सुंदर घाट रामजानकी मंदिर पर दी।

गुरुवार को उन्होंने बताया कि 21 जून को कार्यक्रम का प्रारंभ योग से होगा। दो सैकड़ा स्त्री व बंधु मंदाकिनी के पावन तट पर योग करेंगे। विशाल शोभा यात्रा निकलेगी। जो शहर के विभिन्न इलाकों से होते हुए चित्रकूट बाल विद्यालय जाएगी।

यहां पर पूर्व छात्र अपने प्रिय गुरूओं संस्थापक प्रधानाचार्य पंडित राजाराम पांडेय, पूर्व प्रधानाचार्य स्व हरिश्चंद्र रिछारिया, पूर्व अध्यापक स्व बद्री प्रसाद त्रिपाठी, स्व राम कृपाल पांडेय, स्व राम स्वरूप तिवारी व स्व श्रीमती विजय लक्ष्मी रिछारिया के चित्रो को स्थापित

करेंगे। शोभायात्रा वापस मंदिर आएगी। यहां पर मूर्ति स्थापना के साथ ही सवा लाख महामृत्युंजय जप हवन होगा। भंडारा होगा। शाम के सत्र में रूसी फिल्म डायरेक्टर/प्रोड्यूसर जैक्शन जयकिशन के बनाए जा रहे सीरियल सनातन भारत के मुख्य थीम सांग सनातनी रिलीज होगा। इस मौके पर सीरियल की स्टार कास्ट/गीतकार संगीतकार भी मौजूद रहेंगे।

आयोजन के सह संयोजक वरिष्ठ पत्रकार संदीप रिछारिया ने बताया कि चित्रकूट बाल विद्यालय मुख्यालय का सबसे प्राचीन विद्यालय है। यहां से शिक्षण ग्रहण करने वाले छात्र विश्व स्तर पर अपनी मेघा का परिचय दे रहे हैं। बड़े स्तर के नौकरशाह, फिल्म जगत, पत्रकारिता, विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिभा दिखाने वाले छात्र यहां सैकड़ों में है। ये कार्यक्रम वास्तव में गुरूओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता है। जैसे श्री गोविद भैया के पिता बाबाजी उनके गुरू हैं, वैसे ही मेरे पिता पूर्व प्रधानाचार्य स्व हरिश्चंद्र रिछारिया मेरे गुरू हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मेरी माता जी स्व विजय लक्ष्मी रिछारिया जिन्होंने न केवल मुझे घर में बल्कि विद्यालय में भी पहला अक्षर ज्ञान कराया। यह कार्यक्रम बाल विद्यालय के सभी पूर्व छात्रों का है। कई देशों से इसमें भद्रपुरूषों के आने की संभावना है। उसी स्तर पर कार्यक्रम की व्यवस्था कर रहे हैं। पत्रकारों से बातचीत के दौरान कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी पुष्पराज कश्यप व रोबिन मौजूद रहे।

डीएम ने बताये योग के महत्व: करें योग, रहें निरोग

योग सप्ताह का शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। नौंवे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एवं योग सप्ताह को हर घर योग 15 से 21 जून को सफल बनाने की गरज से जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द, मुख्य विकास अधिकारी अमृतपाल कौर, भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्र प्रकाश खरे ने कोठी तालाब स्थित पार्क में दीप जलाकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

गुरुवार को योग सप्ताह के शुभारम्भ पर जिलाधिकारी ने कहा कि योग जीवन शैली का अहम हिस्सा है। ये आज से नहीं, बल्कि कई सालों से भारतीय संस्कृति की अहम धरोहर है। योगाभ्यास शरीर व मनमास्तिष्क तक के लिए आवश्यक है। शरीर को स्वस्थ्य रखने के साथ मांसपेशियों में ताकत और शरीर के लिए भी फायदेमंद है। योग जीवन में नई उर्जा संचारित करता है। केंद्र व प्रदेश सरकार योगाभ्यास पर विशेष ध्यान दे रही है। इसे लेकर योग को ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच जागरूकता

फैलाने को हर साल 21 जून को इंटरनेशल योग दिवस मनाया जाता है। 15 से 21 जून तक जिले के ऐतिहासिक व महत्वपूर्ण स्थलों पार्कों, प्रत्येक तहसील परिसर, ब्लाक परिसर, ग्राम पंचायतों, नगर पालिका, महाविद्यालयों एवं स्कूलों, हेल्थ एंड वैलनेस सेंटर, योग वैलनेस सेंटर, आयुर्वेदिक चिकित्सालय, यूनानी चिकित्सालय, होम्योपैथिक चिकित्सालय, सीएचसी, पीएचसी आदि स्थानों पर योग सप्ताह मनाया जायेगा। इसके मद्देनजर कोठी तालाब में योग सप्ताह शुरू किया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को चित्रकूट इंटर कॉलेज में बडे पैमाने पर योगा किया जाएगा। आमजनता से अपील किया कि अधिक से अधिक लोग योग में हिस्सा लें। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की अवधारणा पहली बार प्रधानमंत्री मोदी ने 27 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में भाषण दौरान प्रस्ताव रखा था। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 11 दिसंबर 2014 को घोषणा की कि 21 जून को योग दिवस मनाया जाएगा।

योग सप्ताह में योग पतंजलि योग समिति के प्रशिक्षक नरेंद्र नरायण चंद्रवंशी व मंजू केसरवानी ने ग्रीवा चालन, स्कंध चालन, कटि चालन, घुटना चालन, ताड़ासन, वृक्षासन, पादहस्तासन, अर्ध चक्रासन, त्रिकोणासन, दंडासन या विश्रामासन, भद्रासन, वज्रासन, अर्ध उष्ट्रासन, उष्ट्रासन, शशकाशन आदि योगासन के योग बताए। संचालन शिक्षक साकेत बिहारी शुक्ला ने किया। इस मौके पर एडीएम कुंवर बहादुर सिंह, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी निरेंद्र बहादुर सिंह, क्षेत्रीय आयुर्वेदिक चिकित्सा अधिकारी/नोडल अधिकारी डॉ आशुतोष तिवारी, पीडी ऋषिमुनि उपाध्याय, एसडीएम सदर राजबहादुर, अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत सुधीर कुमार, ईओ लालजी यादव, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी यशवंत मौर्य समेत विभिन्न लोग मौजूद रहे।

आत्मनिर्भर भारत पुर्ननिर्माण में युवा करें योगदान: आलोक पाण्डेय

भाजयुमो ने निकाली बाइक यात्रा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भाजयुमो जिलाध्यक्ष विकास मिश्र हीरो की अध्यक्षता में मोटरबाइक यात्रा संयोजक/जिला महामंत्री भाजयुमो मोहित मिश्रा की अगुवाई में बाइक यात्रा निकली। बतौर मुख्य अतिथि सांसद आरके सिंह पटेल, विशिष्ट अतिथि/क्षेत्रीय अध्यक्ष भाजयुमो सुनील साहू, जिलाध्यक्ष भाजपा चंद्र प्रकाश खरे, पूर्व राज्यमंत्री चंद्रिका प्रसाद उपाध्याय ने बाइक यात्रा को रवाना किया।

गुरुवार को बाइक यात्रा निकली। ये 15 से 21 जून तक मंडलवार चलेगी। यात्रा को कर्वी मंडल से शुरू कर शिवरामपुर, भरतकूप, पहाड़ी, गनीवा, सरधुवा, रामनगर, मऊ, बरगढ़, ऐंचवारा व मानिकपुर मंडल में समाप्त होगी।

सांसद आरके पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री के स्वर्णिम कार्यकाल को युवा मोर्चा मंडल-मंडल जाकर नुक्कड़ सभा कर मोदी के कार्यों को गिनाने का काम करेगा। विशिष्ट अतिथि सुनील साहू ने कहा कि स्वर्णिम कार्यकाल को युवा मोर्चा क्षेत्र जिला मंडल बूथ तक जाकर योजनाओं से जनता को रूबरू कराकर 2024 के चुनाव में प्रभावी भूमिका निभाएगा। शिवरामपुर में नुक्कड सभा में मुख्य वक्ता जिला महामंत्री आलोक पाण्डेय ने कहा कि भारत युवा राष्ट्र है। भारत के अमृतकाल में युवाओं को बलिदान नहीं करना है, बल्कि युवाओं को आत्मनिर्भर भारत के पुनर्निर्माण में योगदान करना है। मोटरबाइक यात्रा में शोध प्रमुख धर्मेंद्र त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष शिवाकांत पांडे, आदित्य सुखेंद्र सिंह, अजय मिश्रा, जिला मंत्री घनश्याम पटेल, राम किशोर प्रजापति, शैलेंद्र कुमार, पुष्पराज मिश्रा, लवकुश यादव, विनीत पयासी, मंडल अध्यक्ष सुशील दुबे, मंडल अध्यक्ष भानु पांडे, देवकीनंदन पांडे, आदित्य तिवारी, आदित्य रघुवंशी, नागेंद्र त्रिपाठी, दीपक द्विवेदी, प्रांशु सोनी, श्रवण पटेल मंडल अध्यक्ष व राहुल पांडे आदि सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

पप्पू बने सपा व्यापार सभा जिलाध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। समाजवादी पार्टी जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने सपा मुखिया अखिलेश यादव की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने को संतोष जायसवाल उर्फ पप्पू को सपा व्यापार सभा का जिलाध्यक्ष मनोनीत किया है।

गुरुवार को सपा जिलाध्यक्ष शिवशंकर सिंह यादव ने व्यापार सभा का जिलाध्यक्ष पप्पू जायसवाल को मनोनीत करते हुए कहा कि पप्पू समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। वह व्यापार सभा का बेहतर ढंग से संचालन कर सकते हैं। व्यापारियों के बीच इनकी खासी पकड है। पूर्व में कई विभिन्न संगठनों के दायित्व को सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। मनोनयन से पार्टी को लाभ मिलेगा। पार्टी का जनाधार

बढेगा। इस मौके पर सपा के लोगों ने नवनियुक्त व्यापार सभा जिलाध्यक्ष का गर्मजोशी से स्वागत किया। पूर्व सांसद बालकुमार पटेल ने जिलाध्यक्ष से कहा कि वे जल्द अपनी कमेटी घोषित करें। इस मौके पर सपा के सियाराम गुप्ता, नरेन्द्र यादव, गुलाब खां, सत्यनारायण पटेल, राजा यादव, सुभाष पटेल, उमाकान्त यादव, आशुतोष अग्रहरि, मन्नू गुप्ता, गौरीशंकर सोनी, विनोद जायसवाल, अमर सिंह, जलाल खान, लतीफ, हिमांशू गुप्ता आदि मौजूद रहे।

भाजपा नेताओं ने नौ साल पूरे होने पर मोदी की गिनाई खूबियां

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। मोदी सरकार के नौ साल पूरे होने पर पूर्व राज्यमंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय ने कहा कि अब वे दिन लद गये जब केन्द्र से एक रुपया भेजने पर गरीबों को सिर्फ 15 पैसे मिलते थे। अब मोदी सरकार में पूरे सौ के सौ रुपये लोगों को मिल रहे हैं। प्रधानमंत्री की अगुवाई में देश हर आपदा में देशवासियों के साथ दिन-रात सेवा में जुटा है।

गुरुवार को जिला मुख्यालय के आनन्द रिसार्ट में पत्रकारों से पूर्व राज्यमंत्री चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय, भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे, जिला उपाध्यक्ष आनन्द प्रताप सिंह पटेल, भाजपा नेता रामसागर चतुर्वेदी व पूर्व जिलाध्यक्ष दिनेश तिवारी रुबरु हुए। भाजपा नेताओं ने कहा कि देश की 130 करोड जनता ने

नरेन्द्र मोदी पर भरोसा किया है। 2014 से 2023 में नौ साल में ही देश में शान्ति, समृद्धि और विकास की रफ्तार दिखाई दे रही है। मोदी सरकार ने रिकार्ड समय में कोरोना काल में लाखों लोगों को टीकाकरण कराया है। भारत के इतिहास में गरीबों को आवास निर्माण में क्रान्ति नहीं देखी गई। घर-घर जल पहुंचाने में सरकार सक्षम हुई है। अब बेटियों को दूर से पानी नहीं लाना पडता।

राशन कार्ड में हर माह लोग लाभ उठा रहे हैं। घरों में गैस चूल्हा होने से महिलाओं को आंखों की परेशानी नहीं हो रही। बीमार इलाज में गरीबों को मदद मिल रही है। जीवन रक्षक दवायें सस्ती हो गई है। इस तरह से उन्होंने मोदी सरकार की अनेको खूबियां गिनाई।

बालू-गिट्टी की लोकेशन देने वाले सात लोगों पर गैंगेस्टर एक्ट, लोकेशन गैंग पर चला पुलिस का चाबुक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला के निर्देश पर अपराधियों के खिलाफ जारी कार्यवाही में एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी, सीओ राजापुर शीतला प्रसाद पाण्डेय की देखरेख में प्रभारी निरीक्षक राजापुर भास्कर मिश्रा ने सात लोकेशन गैंग माफियाओं के खिलाफ गैंगेस्टर एक्ट के तहत कार्यवाही की है। इससे लोकेशन गैंग में खासी खलबली है।

गुरुवार को जिले के चित्रकूट, प्रयागराज, रायबरेली के कुछ अपराधी किस्म के लोग पिछले महीनों से संगठित गिरोह बनाकर आर्थिक व भौतिक लाभ लेने की गरज से बालू, गिट्टी का अवैध ढंग से बिना रवन्ना ओवरलोड ट्रकों को खनिज, परिवहन, वाणिज्य एवं पुलिस अधिकारियों की लोकेशन ट्रेस करके जिले की सीमा से बाहर भेजते थे। प्रभारी निरीक्षक राजापुर ने राजू खान उर्फ सगीर उल्लाह पुत्र स्व नत्थू खान, रहूफ खान पुत्र स्व नत्थू खान निवासी धौरहरा थाना सरधुवा, बब्बल उर्फ बझहुलकमर पुत्र समसुलकमर निवासी चीटेमऊ थाना मऊआइमा जिला प्रयागराज, धर्मेंद्र सोनकर पुत्र रामाश्रय निवासी लूपलाइन चैराहा थाना राजापुर, सलमान खान पुत्र इकरान निवासी चकमवई राधा खंडेहा थाना मऊ, बनवारी यादव पुत्र श्रीपाल यादव निवासी गोण्डा थाना भरतकूप, गुड्डू यादव उर्फ इंद्रेश पुत्र लालू प्रसाद निवासी मनिहुर भटेहरी थाना ऊंचाहार जिला रायबरेली के खिलाफ थाने में 2/3 गैंगेस्टर एक्ट के तहत कार्यवाही की है। इससे जिले की लोकेशन देने वालों में खलबली मच गई है।

पानी भरने पर बुजुर्ग दबंग ने महिला को पीटा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में कई दशकों से पानी की समस्या है। मई-जून में पानी का जलस्तर नीचे जाने से लोग बूंद-बूंद पानी को मोहताज हो जाते हैं। पानी भरने को लेकर लोगों को कड़ी मशक्कत करनी पड़ती है। यहां तक कि पानी भरने को लेकर लोगों में विवाद की नौबत आ जाती है।

ऐसा ही एक मामला सामने आया है। पानी भरने को लेकर दबंग बुजुर्ग ने महिला की पिटाई कर दी है। इसका वीडियो उसकी बेटी ने बनाकर सोशल मीडिया में वायरल किया है। दरअसल पहाड़ी थाना क्षेत्र के कुचारम गांव में शबीना पानी भरने को बर्तन लेकर घनश्याम विश्वकर्मा के घर के बाहर लगे सरकारी हैंडपंप में गई थी। वह पानी भरने लगी, इसी बीच घनश्याम विश्वकर्मा ने उसे पानी भरने से मना किया। महिला के न मानने पर दबंग बुजुर्ग ने महिला के साथ मारपीट शुरू कर दी। उसकी बेटी ने मारपीट का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया में वायरल कर दिया। पीड़ित महिला न्याय की गुहार लगाने थाने पहुंची। थाने से न्याय न मिलने पर पीड़िता पुलिस अधीक्षक कार्यालय में आरोपी के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है।

फिलहाल पुलिस ने आरोपी बुजुर्ग पर मामला दर्ज कर लिया है। उसकी अभी तक गिरफ्तारी नहीं हुई। पीड़िता अधिकारियों की चैखट के चक्कर काट रही है। इस मामले में पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला ने कहा कि महिला के पानी भरने के विवाद पर बुजुर्ग ने मारपीट की है। मामला पहाड़ी थाने में दर्ज है। जांच की जा रही है, जल्द ही आरोपी पर कार्रवाई होगी।

चलती बाइक से गिरकर महिला गंभीर रूप से घायल

नगीना। नजीबाबाद निवासी हारून अहमद सोमवार की देर रात 8 बजे नगीना से अपनी पत्नी शमा परवीन को बाइक से नजीबाबाद ले जा रहा था जब वह नगीना बूंदकी मार्ग की स्थिति ग्राम मुगल वाला की पुलिया के पास पहुंचा तभी अचानक झटका लगने से शमा परवीन चलती बाइक से नीचे गिर गई जिससे वे सर मैं नाजुक चोट आने से गंभीर रूप से घायल हो गई घायल को 108 एंबुलेंस सेवा की मदद से यहां सीएससी लाया गया जहां से प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल के लिए रेफर कर

म्यांमार के सैनिक शासकों की बेरहमी, तूफान पीड़ितों के लिए यूएन की मदद रोकी

म्यांमार। म्यांमार के सैनिक शासक अब प्राकृतिक आपदा से पीड़ितों को मिलने वाली विदेशी सहायता भी रोकने लगे हैं। उन्होंने पिछले दिनों आए चक्रवात मोचा के पीड़ितों के लिए संयुक्त राष्ट्र की सहायता रोक दी है। संयुक्त राष्ट्र सहायता एजेंसी ने मंगलवार को थाइलैंड की राजधानी बैंकाक में यह जानकरी दी। उसने बताया कि म्यांमार में इस समय दस लाख से अधिक लोगों को मानवीय सहायता की तुरंत जरूरत है। म्यांमार सरकार के ताजा फैसले से उन लोगों की मुसीबत और बढ़ेगी।

म्यांमार के सैनिक शासन ने अपने ताजा फैसले का कारण नहीं बताया है। लेकिन समझा जाता है कि सैनिक शासक अंतरराष्ट्रीय सहायता एजेंसियों पर भरोसा नहीं करते। इसलिए उन्होंने इन एजेंसियों की अपनी देश में पहुंच को रोकने की कोशिश की है। म्यांमार में फरवरी 2021 में सेना ने निर्वाचित जन प्रतिनिधियों का तख्ता पलट कर देश की सत्ता पर कब्जा जमा लिया था। संयुक्त राष्ट्र की मानवीय सहायता एजेंसी के समन्वयक रामनाथन बालाकृष्ण ने एक बयान में कहा है- 'मैं म्यांमार सरकार से अपील करता हूं कि वह अपने इस फैसले पर तुरंत पुनर्विचार करे और सहायता पहुंचाने के लिए पहले दी गई अनुमति को बहाल कर दे। हम उन लोगों को मदद पहुंचाने के लिए तैयार हैं, जिन्हें इनकी बेहद जरूरत है।'

म्यांमार में पिछले 14 मई को मोचा चक्रवात आया था। खासकर रखाइन प्रांत में इससे बड़ी तबाही हुई। समुद्र में उठी ऊंची लहरों और भारी बारिश के कारण इस प्रांत के कई इलाकों में बाढ़ आ गई। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक चक्रवात के कारण कम से कम 148 लोगों की जान गई थी। उनमें से 80 फीसदी रोहिंग्या मुसलमान थे। इसी इलाके में रोहिंग्या मुसलमान रहते हैं। म्यांमार की सेना पर आरोप है कि वह रोहिंग्या समुदाय के उत्पीड़न में शामिल रही है।

सैन्य अभ्यास के दौरान सुरक्षा बल के जवान ने अपने ही साथियों पर चलाई गोली, दो की मौत

टोक्यो। जापान के प्रशिक्षण केंद्र में अभ्यास के दौरान दो व्यक्ति की मौत वहीं गई है। सरकार के प्रवक्ता हिरोकाजो मत्सुनो ने बताया घटना के बाद संदिग्ध को हिरासत में ले लिया गया है। हालांकि, उन्होंने इस घटना के बारे में अन्य कोई भी जानकारी नहीं दी है। ग्राउंड सेल्फ-डिफेंस फोर्स ने एक बयान में कहा- 'नए कर्मियों के प्रशिक्षण में अभ्यास के दौरान एक सेल्फ डिफेंस के फोर्स के उम्मीदवार ने तीन कर्मियों पर गोली चला दी।' पुलिस ने बताया कि संदिग्ध 18 वर्षीय एसडीएफ उम्मीदवार था जिसे अन्य सैनिकों ने मौके पर ही हिरासत में ले लिया। उन्होंने बताया कि उम्मीदवार पर एक 25 वर्षीय सैनिक की हत्या के प्रयास का आरोप लगाया गया है। एक हवाई फुटेज में देखा गया कि इस घटना के बाद सैनिक और कुछ स्थानीय लोग आपातकालीन वाहन को घेरकर खड़े थे और पुलिस कर्मियों ने रोड को अवरुद्ध कर रखा था। वहां के एक स्थानीय व्यक्ति ने मीडिया से बातचीत करते हुए कि बताया कि सुबह कि साढ़े नौ बजे उन्होंने आपातकालीन वाहनों को उस क्षेत्र में जाते देखा लेकिन उससे पहले किसी तरह की कोई घटना की जानकारी उन्हें नहीं मिली थी।

हैकिंग के अंदेशे को बिना दूर किए बांग्लादेश ने डिजिटल बैंक बनाने को दी मंजूरी

ढाका। बांग्लादेश के सेंट्रल बैंक ने देश में डिजिटल बैंक बनाने की पहल की है। इसके लिए एक खाका तैयार किया गया है, जिसे देश के सेंट्रल बैंक- बांग्लादेश बैंक- ने मंजूरी दे दी है। बैंक ने कहा है कि उसका मकसद बांग्लादेश को एक कैशलेस (नकदी-रहित) समाज बनाना है।बांग्लादेश ने यह लक्ष्य तय किया है कि साल 2027 तक देश में कम से कम 75 फीसदी लेन-देन कैशलेस हो। यह योजना सरकार के 2041 तक 'स्मार्ट बांग्लादेश' बनाने के लक्ष्य का हिस्सा है। फिलहाल, देश में 61 परंपरागत बैंक हैं। उनमें से कई एप और अन्य माध्यमों से डिजिटल सेवाएं देते हैं।

बांग्लादेश बैंक ने डिजिटल बैंकों के लिए जो गाइडलाइंस तैयार की हैं, उनके मुताबिक ऐसे जो बैंक बनेंगे, वे डिजिटल के अलावा कोई अन्य सेवा नहीं देंगे। मुख्यालय के अलावा उनके कोई अन्य कार्यालय भी नहीं होंगे। ये बैंक कस्टमर बैंक कार्ड जारी करेंगे। वे क्यूआर कोड और अन्य उन्नत तकनीक के जरिए लेन-देन की सेवाएं देंगे। गाइडलाइंस के ड्राफ्ट में कहा गया है- 'डिजिटल बैंकों को कुशल, किफायती और नई सेवाएं' ग्राहकों को देनी होंगी। ये बैंक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, ब्लॉक चेन और अन्य उन्नत तकनीकों का इस्तेमाल करेंगे।

विशेषज्ञों के मुताबिक बांग्लादेश ने अपनी अर्थव्यवस्था का आधुनिकीकरण करने की योजना बनाई है। लेकिन इस समय बांग्लादेश महंगाई, विदेशी मुद्रा घटने और बिजली की किल्लत जैसी समस्या से जूझ रहा है। उसे देखते हुए अर्थव्यवस्था के आधुनिकीकरण की तरफ बढ़ना एक कठिन चुनौती है। वैसे सरकार को उम्मीद है कि मोबाइल के जरिए वित्तीय सेवा देने वाली कंपनियां, मौजूदा बैंक, माइक्रो फाइनेंस संस्थान, और अन्य वित्तीय संस्थान डिजिटल बैंक बनाने के लिए आगे आएंगे।

पाकिस्तानी एजेंसियों ने किया टॉर्चर, कृष्ण ने मेरा हाथ थामा...इस्लाम छोड़ हिंदू बने शायन अली ने किया 'घर वापसी' का ऐलान

इस्लामाबाद। पाकिस्तानी अभिनेता और सोशल मीडिया इंफ्लूएंशर शायन अली ने घोषणा की कि उन्होंने इस्लाम छोड़ दिया है और हिंदू धर्म अपना लिया है। उन्होंने कहा कि जब पाकिस्तानी खुफिया एजेंसियां ??उनका पीछा कर रही थीं और उन्हें देश छोड़ने के लिए मजबूर किया गया, तो भगवान कृष्ण ने उनका हाथ पकड़ लिया। शायन ने यह भी कहा कि वह जल्द ही भारत आने की योजना बना रहे हैं। ट्विटर पर शायन अली ने अपनी घर वापसी की घोषणा करते हुए लिखा कि पिछले 2 वर्षों से अपने पूर्वजों की संस्कृति और जीवन शैली को देखने के बाद आज मैं आधिकारिक तौर पर अपनी घर वापसी की घोषणा कर रहा हूं।

अली ने इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर कृष्णा कॉन्शसनेस (इस्कॉन) को कभी हार न मानने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने याद किया कि कैसे 2019 में उन्हें पाकिस्तानी एजेंसियों द्वारा प्रताड़ित किया गया था, जिसके कारण उन्हें देश छोड़ना पड़ा था। शायन अली ने बताया कि वो डिप्रेशन की ओर बढ़ रहे थे और हार मानने की कगार पर थे तभी कृष्ण ने मेरा हाथ थाम लिया। अब अपने पूर्वजों को गौरवान्वित करने का समय आ गया है।

शायन ने कहा कि वह जल्द ही अपनी मातृभूमि भारत की मिट्टी में विलीन हो जाएंगे जहां उनके पूर्वजों का जन्म हुआ था। मैं बहुत जल्द अपनी मातृभूमि का दौरा करूंगा, जहां मेरे दादा-दादी और मेरे सभी पूर्वज पैदा हुए थे। खुद को अपनी 'मिट्टी' और लोगों में मिला लेंगे, क्योंकि अंत में घर तो घर होता है। शायन अली ने कहा कि एक सनातनी होने के नाते मैं यह साफ कर देना चाहता हूं कि मैं किसी भी अन्य धर्म के खिलाफ नफरत का हिस्सा नहीं बनूंगा।

नेपाल की राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद में वैरागी सलाहकार, अर्याल मुख्य सचिव नियुक्त

काठमांडू। नेपाल की कैबिनेट बैठक ने शंकरदास वैरागी को राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और डा. वैकुंठ अर्याल को मुख्य सचिव नियुक्त किया गया है । इससे पहले कैबिनेट की बैठक में वैरागी का मुख्य सचिव पद से इस्तीफा मंजूर कर लिया गया था। प्रधानमंत्री कार्यालय के सचिव अर्याल 18 जून से सेवानिवृत्त हो रहे थे। उन्हें मुख्य सचिव बनाने के लिए वैरागी को अपने कार्यकाल में तीन महीने शेष रहने पर इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा। प्रचंड ने मुख्य सचिव की नियुक्ति पर फैसला लेने के लिए कैबिनेट की बैठक बुलाई। राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के सलाहकार के रूप में नियुक्त वैरागी ने आज शपथ ली। उन्हें प्रधानमंत्री प्रचंड ने शपथ दिलाई।

अमेरिकी संसद में बनेगा हिन्दू कॉकस, बनेगा अमेरिकी हिन्दुओं की आवाज

वाशिंगटन। अमेरिकी संसद में जल्द ही हिन्दू कॉकस बनाया जाएगा। अमेरिकी सांसद श्रीशमल थानेदार ने एलान किया है कि यह हिन्दू कॉकस अमेरिकी हिन्दुओं की आवाज बनेगा।

भारतीय मूल के अमेरिकी सांसद श्रीशमल थानेदार अभी भारतीय मूल के सांसदों के समूह समोसा कॉकस के सदस्य हैं। यह समूह भारत से जुड़े मुद्दे अमेरिकी संसद में उठाता है। अब थानेदार ने एलान किया है कि वह अमेरिकी संसद में हिन्दू कॉकस बनाएंगे, जिसमें एक जैसा सोचने वाले नेताओं को एक साथ लाया जाएगा।

इस कॉकस का उद्देश्य होगा कि हिन्दुओं के खिलाफ देश में कोई नफरत और भेदभाव ना हो। थानेदार ने कहा कि यह अहम है कि हर व्यक्ति को अपना धर्म चुनने का अधिकार हो और वह बिना किसी डर और भेदभाव के अपने भगवान की प्रार्थना कर सके। यह व्यक्ति का मौलिक अधिकार है।

उल्लेखनीय है कि अमेरिकी संसद में कॉकस नेताओं के उन समूहों को कहा जाता है, जिनका एक समान विधायी उद्देश्य होता है। इन कॉकस का प्रशासन चैंबर के नियमों के मुताबिक होता है। हिन्दू कॉकस के एलान पर भारतीय मूल के लोगों ने खुशी जाहिर की। थानेदार ने कहा कि सभी का इस कॉकस में शामिल होने के लिए स्वागत है और यह एक समावेशी कॉकस होगा। थानेदार ने कहा कि हम किसी के खिलाफ नहीं हैं।

डुओमो कैथेड्रल में होगा इटली के पूर्व प्रधानमंत्री बर्लुस्कोनी का अंतिम संस्कार

मिलान। इटली के पूर्व प्रधानमंत्री सिल्वियो बर्लुस्कोनी का अंतिम संस्कार गोथिक युग के डुओमो कैथेड्रल में पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। अंतिम संस्कार के लिए उनका पार्थिव शरीर यहां लाया गया है। बर्लुस्कोनी के सम्मान में डुओमो के बाहर और अंदर हजारों लोग इकट्ठा हो गए। उनके पार्थिव शरीर को फूलों से लदे गाड़ी से यहां लाया गया, इस दौरान उनके समर्थकों की आंखे नम थीं। इटली के अधिकतर लोग बर्लुस्कोनी को मीडिया मुगल, फुटबॉल उद्यमी और तीन बार के पूर्व प्रधानमंत्री के तौर पर जानते हैं। वह हाल के दशकों में इटली की सबसे प्रभावशील व्यक्तित्व रहे हैं। मगर लोग इस बात पर बुरी तरह से बंटे हुए हैं कि उनका प्रभाव बेहतर था या खराब। लोगों के बीच उनको राजकीय सम्मान देने को लेकर बहस जारी है। बर्लुस्कोनी का मिलान के एक अस्पताल में निधन हो गया था। 86 वर्षीय पूर्व प्रधानमंत्री ब्लड कैंसर से पीड़ित थे। उनके परिवार ने मंगलवार को मिलान के पास बर्लुस्कोनी के बंगले में एक निजी शोक सभा का आयोजन किया था। बर्लुस्कोनी का जन्म 29 सितंबर 1936 को मिलान में एक मध्यमवर्गीय बैंकर पिता के यहां हुआ था। उन्होंने कानून की डिग्री हासिल की। उन्होंने 25 साल की उम्र में एक निर्माण कंपनी शुरू की और मिलान के बाहरी इलाके में मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए कई अपार्टमेंट का निर्माण कराया था।

भारतीय प्रधानमंत्री मोदी के सुझाव पर संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में बनेगी स्मारक दीवार

न्यूयॉर्क। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के सुझाव पर संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय में एक स्मारक दीवार (मेमोरियल वॉल) का निर्माण किया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने भारत द्वारा पेश इस आशय के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया है।

वर्ष 2015 में अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र को संबोधित किया था। उस भाषण में मोदी ने शांति मिशन के दौरान बलिदान हुए सैनिकों की याद में मेमोरियल वॉल बनाने का सुझाव दिया था। अब संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने बुधवार को यह प्रस्ताव पेश किया, जिसे 190 देशों ने समर्थन दिया। बाद में संयुक्त राष्ट्र ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इस प्रस्ताव के तहत संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक मेमोरियल वॉल का निर्माण किया जाना है। इस मेमोरियल वॉल पर संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशन पर बलिदान हुए सैनिकों के नाम लिखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी जाएगी। संयुक्त राष्ट्र ने प्रस्ताव स्वीकार करते हुए कहा कि न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में एक उचित और प्रमुख जगह पर मेमोरियल वॉल का निर्माण किया जाएगा। इस वॉल का निर्माण शांति मिशन के दौरान बलिदान हुए सैनिकों के सम्मान में किया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कंबोज ने कहा कि यह मेमोरियल वॉल इस बात का प्रतीक होगी कि संयुक्त राष्ट्र, शांति पर इतना जोर क्यों देता है। साथ ही यह लोगों को याद दिलाएगी कि उनके फैसलों की दुनिया ने क्या कीमत चुकाई है। प्रस्ताव में कहा गया है कि इस मेमोरियल वॉल का निर्माण तीन साल में पूरा कर लिया जाएगा।

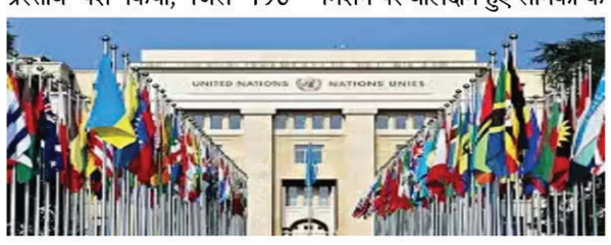

भारत में नेपाली राजदूत शर्मा पर हिंदू राष्ट्र की वकालत का आरोप

काठमांडू। नेपाल की संसद में सीपीएन (यूएमएल) सांसद रघुजी पंत ने भारत में नेपाली राजदूत डॉ. शंकर शर्मा पर हिंदू राष्ट्र की वकालत करने का आरोप लगाया है। पंत ने गुरुवार को संसद में शर्मा पर संविधान विरोधी कार्य करने का भी आरोप लगाया। पंत ने नेपाल के एक दैनिक समाचार पत्र को दिए गए शर्मा के एक साक्षात्कार का हवाला देते हुए टिप्पणी की कि नेपाली राजदूत शर्मा ने एक हिंदू राष्ट्र की वकालत करके धर्मनिरपेक्षता पर सवाल उठाया है। पंत ने यह स्पष्ट करने की मांग की कि प्रचंड के नेतृत्व वाली सरकार हिंदू राष्ट्र के पक्ष में है या नहीं।

वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अमेरिकी संसद में हुआ पहला हिन्दू-अमेरिकन सम्मेलन

वाशिंगटन। अमेरिकी संसद भवन कैपिटल हिल में वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पहला हिन्दू-अमेरिकन सम्मेलन आयोजित किया गया। अमेरिकन फॉर हिंदूज नामक इस सम्मेलन में अमेरिका में रहने वाले हिन्दू समुदाय की दिक्कतों की तरफ अमेरिका के कानून निर्माताओं का ध्यान आकृष्ट किया गया। सम्मेलन की शुरुआत वैदिक मंत्रोच्चार और प्रार्थना के साथ हुई। सम्मेलन की अगुवाई कर रहे रोमेश जापरा ने कहा कि हमारे हिंदू मूल्य पूरी तरह कि पहली बार इस सम्मेलन का आयोजन राजनीतिक भागीदारी के

लिए हो रहा है। अमेरिकी हिन्दू सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और अन्य सभी क्षेत्रों में सक्रिय हैं, लेकिन राजनीति के मामले में हम बहुत पीछे हैं।अमेरिकन फॉर हिंदूज सम्मेलन का आयोजन अमेरिकन फॉर हिंदूज पॉलिटिकल एक्शन कमेटी ने 20 अन्य डायस्पोरा के साथ मिलकर किया। फ्लोरिडा, न्यूयॉर्क, बोस्टन, टेक्सास, शिकागो, कैलिफोर्निया आदि शहरों से करीब 130 भारतीय अमेरिकी नेताओं ने इस सम्मेलन में शिरकत की। जापरा ने कहा कि बहुत अच्छे वैज्ञानिक, डॉक्टर और बौद्धिक लोग हमारे समुदाय में हैं लेकिन हमें राजनीति में अभी उतनी सफलता नहीं मिली है, इसलिए पहली बार हम सभी हिंदू अमेरिकी नेता और 20 अलग-अलग संगठन एक साथ आए हैं। अमेरिकी संसद के स्पीकर केविन मैक्कार्थी और डेमोक्रेट और रिपब्लिकन पार्टियों के कई अन्य नेताओं ने भी इस सम्मेलन में शिरकत की।

सड़क पर घूम रही भारतीय मूल की छात्रा और उसके दोस्तों पर चाकू से हमला, मौत

मॉस्को। भारतीय मूल की छात्रा की इंग्लैंड में मौत हो गई। छात्रा एक बेहतरीन हॉकी खिलाड़ी थी। मध्य इंग्लैंड के नॉटिंघम की सड़क पर हुई चाकूबाजी में भारतीय मूल की छात्रा की मौत हुई है। इसके अलावा दो अन्य लोगों ने भी अपनी जान गंवाई है। जानकारी के अनुसार, भारतीय मूल की ग्रेस ओ मल्ली (19) अपनी दोस्त बरनबी वेबर (19) के साथ थीं, तभी आरोपियों ने मंगलवार तड़के उन पर चाकू से हमला कर दिया। हमले के कारण मौके पर ही दोनों की मौत हो गई।

मामले की जांच जारी है

नॉटिंघमशायर पुलिस ने बताया कि 31 साल के संदिग्ध को हिरासत में ले लिया गया है। आरोपी पहले भी हमले कर चुका है। नॉटिंघमशायर पुलिस के मुख्य

हवलदार केट मेनेल ने बताया कि हम खुले दिमाग से केस की जांच कर रहे हैं। इस तरह के मामलों में जिस तरह की जांच होती है, हम वैसे ही जांच कर रहे हैं। काउंटर टेररिज्म पुलिसिंग की मदद से स्पेशल टीम मामले की जांच कर रही है। जल्द ही हम कुछ दिनों में सबूत इकट्ठे कर लेंगे।

हॉकी के साथ-साथ क्रिकेट खिलाड़ी भी मृतक

रिपोर्ट्स के अनुसार, अभी तथ्यों को स्थापित करने की कोशिश है। जासूसों की एक तक आधिकारिक रूप से पीड़ितों की सूची नहीं आई है। हालांकि, नॉटिंघम विश्वविद्यालय ने अपने दो छात्रों की मौत की पुष्टि की है। कहा जा रहा है ग्रेस भारतीय मूल के एक ब्रिटिश डॉक्टर की बेटी हैं। उनके पिता ने 2009 में चाकूबाजी से पीड़ित किशोरों की जान बचाई थी, जिस वजह से उन्हें प्रशंसा भी मिली थी। रिपोर्ट्स के मुताबिक, ग्रेस ने इंग्लैंड की ओर से हॉकी में अंडर-18 भी खेला है। इसके पहले वह बेहतरीन क्रिकेटर भी रह चुकी हैं। इंग्लैंड हॉकी ने ग्रेस की याद में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया था। यहां उन्होंने कहा कि नॉटिंघम में मंगलवार को ग्रेस की मौत हो गई, इससे हम सब बहुत दुखी हैं। वहीं, वुडफोर्ड-वेल्स क्रिकेट क्लब ने कहा कि ग्रेस कठोर, प्रतिभाशाली और समर्पित क्रिकेट खिलाड़ी थीं।

विश्वविद्यालय के कुलपति शीयर वेस्ट ने घटना के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि नॉटिंघम सिटी सेंटर में हुए हमले में हमारे विश्वविद्यालय के दो छात्रों की मौत हो गई। इससे पूरा विश्वविद्यालय सदमे में है। इस कठिन समय में विश्वविद्यालय परिवार मृतकों के परिजनों और उनके दोस्तों के साथ है। दुख की इस घड़ी में विश्वविद्यालय संवेदनाएं व्यक्त करता है।

वित्त मंत्री ने आईएफएडी प्रमुख से की मुलाकात, कई मुद्दों पर हुई चर्चा

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कृषि विकास के लिए अंतरराष्ट्रीय कोष (आईएफएडी) प्रमुख अल्वारो लारियो से यहां मुलाकात की। इस दौरान सीतारमण ने उभरते वैश्विक मुद्दों के अलावा आपसी हितों के कई मुद्दों पर चर्चा की। वित्त मंत्रालय ने गुरुवार को ट्विट कर इसकी जानकारी दी। वित्त मंत्री ने आईएफएडी प्रमुख से मुलाकात के दौरान नई एवं उभरती चुनौतियों से निपटने के लिए बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमडीबी) की निष्पक्ष समीक्षा की जरूरत पर जोर दिया। सीतारमण ने बैठक के दौरान इस बात पर बल दिया कि आईएफएडी जैसे बहुपक्षीय संस्थानों को खाद्य भंडारण, खाद्य प्रसंस्करण और छोटे आकार की खेती को लाभकारी बनाकर खाद्य

सुरक्षा सुनिश्चित करने में प्रभावी योगदान देना चाहिए। मंत्रालय के मुताबिक आईएफएडी प्रमुख ने मुलाकात के दौरान जी-20 समूह की अध्यक्षता कर रहे भारत के प्रयासों की सराहना की। लारियो ने जलवायु परिवर्तन को आईएफएडी की गतिविधियों के केंद्र में लाने से अवगत कराया। आईएफएडी संयुक्त राष्ट्र की खाद्य एवं कृषि केंद्र की एक विशिष्ट संस्था है। इसका मुख्य उद्देश्य विकासशील देशों में ग्रामीण क्षेत्रों की गरीबी को दूर करना है। उल्लेखनीय है कि संयुक्त राष्ट्र के रोम में स्थित अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान आईएफएडी ने 1978 से लेकर अबतक अनुदान और कम ब्याज वाले ऋण के रूप में 23.2 अरब डॉलर विकासशील देशों को मुहैया कराए हैं।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।